खण्ड-07 सत्र-05 (भाग-03) / अंक-73

शुक्रवार 29 नवंबर, 2024 / 08 अग्रहायण, 1946 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

सातवीं विधान सभा

पाँचवां सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-07, सत्र-5 (भाग-03) में अंक 73 से 74 तक सम्मिलित हैं।)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

रंजीत सिंह

सचिव

RANJEET SINGH

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप-सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र-5 (भाग-03) शुक्रवार, 29 नवंबर, 2024/08 अग्रहायण, 1946 (शक) अंक-73

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	1-2
2.	निधन संबंधी उल्लेख	3-5
3.	माननीय अध्यक्ष द्वारा रूलिंग	6-7
4.	सदन पटल पर प्रस्तुत कागज़ात	8-9
5.	अल्पकालिक चर्चा (नियम-55)	10-175

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-5 (भाग-03) शुक्रवार, 29 नवंबर, 2024/08 अग्रहायण, 1946 (शक) अंक-73

दिल्ली विधान सभा

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए:

1. श्री अजेश यादव
2. श्री अखिलेशपति त्रिपाठी
3. श्रीमती ए. धनवंती चंदीला ए.
4. श्री अजय दत्त
5. श्री अमानतुल्ला खान
6. श्री अब्दुल रहमान
7. श्रीमती बंदना कुमारी
8. सुश्री भावना गौड
9. श्री बी. एस. जून
10. श्री दिनेश मोहनिया
11. श्री हाजी युनूस
12. श्री जरनैल सिंह
13. श्री कुलदीप कुमार
14. श्री मदनलाल
15. श्रीमती प्रीति जितेंद्र तोमर
16. श्री प्रवीण कुमार
17. श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस
18. श्री प्रकाश जारवाल
19. श्री रघुविंदर शौकीन
20. श्री राजेश गुप्ता

23. श्री शरद कुमार चौहान
24. श्री सत्येन्द्र जैन
25. श्री सोमदत्त
26. श्री शिव चरण गोयल
27. श्री सोमनाथ भारती
28. श्री सही राम
29. श्री एस. के. बग्गा
30. श्री सुरेंद्र कुमार
31. श्री विनय मिश्रा
32. श्री वीरेंद्र सिंह कादियान
33. श्री अभय वर्मा
34. श्री अनिल कुमार बाजपेयी
35. श्री अजय कुमार महावर
36. श्री गिरीश सोनी
37. श्री जितेंद्र महाजन
38. श्री महेंद्र गोयल
39. श्री मोहन सिंह बिष्ट
40. श्री ओमप्रकाश शर्मा
41. श्री पवन शर्मा
42. श्री प्रलाद सिंह साहनी
43. श्री ऋतुराज गोविंद
44. श्री विशेष रवि

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-5 (भाग-03) शुक्रवार, 29 नवंबर, 2024/08 अग्रहायण, 1946 (शक) अंक-73

सदन पूर्वाह्न 11.16 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

राष्ट्रगीत-वन्दे मातरम्

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण, सातवीं विधानसभा के पांचवें सत्र के तीसरे भाग में आप सबका हार्दिक स्वागत है। मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे शालीनतापूर्वक और कम से कम समय में अपने विचार रखें ताकि सदन का समय व्यर्थ न हो। सदन के समय का पूर्ण सदुपयोग करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। अतः आप सब से मेरा निवेदन है कि कार्यवाही को सुचारू रूप से चलाने में मुझे सहयोग दें।

निधन संबंधी उल्लेख

माननीय सदस्यगण, जैसा कि आपको विदित है कि दिनांक 09 अक्टूबर, 2024 को प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा जी का निधन हो गया। वे 86 वर्ष के थे। उन्होंने अपने नेतृत्व में टाटा समूह को एक नई

पहचान दी और देश के औद्योगिक विकास में अपना योगदान दिया। श्री रतन टाटा जी का जन्म 28 दिसम्बर, 1937 को हुआ था। उन्होंने अपनी शुरूआती शिक्षा मुम्बई में प्रॉप्त की। इसके बाद उन्होंने अमेरिका की कॉर्नेल यूनिवर्सिटी से इंजिनियरिंग की डिग्री हासिल की। उन्होंने वर्ष 1991 से 2012 तक टाटा समूह की अगुवाई की। सामाजिक कार्यों में भी उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा शिक्षा, स्वास्थ्य और गरीबी उन्मूलन जैसे क्षेत्रों में भी अपना योगदान दिया। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए भारत सरकार ने उनको पदम–विभूषण से सम्मानित किया था। उनके निधन से देश के औद्योगिक और सामाजिक क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से स्व. श्री रतन टाटा को श्रद्धांजलि देता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिजनों को इस अपार दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

माननीय सदस्यगण, पिछले दिनों जम्मू–कष्मीर में आतंकी हमलों की घटनाओं में वृद्धि हुई और कई सुरक्षा कर्मी और आम नागरिक हताहत हुए हैं। दिनांक 20 अक्टूबर 2024 को गंदेरबल में आतंकी हमले में एक डॉक्टर सहित सात लोग मारे गये। दिनांक 24 अक्टूबर 2024 को आतंकी हमले में गुलमर्ग सेक्टर में सेना के दो जवान शहीद हो गये तथा दो नागरिक मारे गये। दिनांक 01 नवम्बर 2024 को आतंकी हमले में बड़गांव जिले में दो प्रवासी श्रमिक मारे गये। दिनांक 03 नवम्बर 2024 को श्रीनगर के बाजार में ग्रेनेड हमले से 12 लोग घायल हो गये।

इसके अलावा दिनांक 19 अक्टूबर 2024 को छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में हुए बम ब्लास्ट में आई.टी.बी.पी. के दो जवान शहीद हो गये तथा दो अन्य व्यक्ति घायल हो गये। दिनांक 03 नवम्बर 2024 को सुकमा में माओवादियों के हमले में पुलिस के दो जवान शहीद हो गये। इन सभी कायरतापूर्ण हमलों की जितनी निंदा की जाये उतनी कम है।

उधर मणिपुर में भी लगातार अषांति के कारण लोग त्रस्त हैं तथा कई लोग मारे गये हैं।

मैं आतंकी हमलों में शहीद हुए जवानों तथा मारे गये नागरिकों को अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्रद्धांजलि देता हूं और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं तथा ईष्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिजनों को इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अब सभी दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए सदन द्वारा दो मिनट का मौन धारण किया जायेगा।

(सदन द्वारा दो मिनट का मौन धारण किया गया।)

माननीय अध्यक्षः ओम शांति, शांति। मुझे श्री विजेन्द्र गुप्ता जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष, श्री अभय वर्मा जी तथा श्री अजय महावर जी, माननीय सदस्यों से नियम 54 के अन्तर्गत ध्यानाकर्षण की सूचनायें तथा विजेन्द्र गुप्ता जी, नेता प्रतिपक्ष, श्री अभय वर्मा जी, श्री मोहन सिंह बिष्ट जी, श्री अजय महावर जी, अनिल बाजपेयी जी, जितेन्द्र महाजन

जी और श्री ओम प्रकाश शर्मा जी माननीय सदस्यों से नियम 55 के अन्तर्गत अल्पकालिक चर्चा की सूचनायें प्रॉप्त हुई हैं। मैं पिछले सत्र के दौरान भी ये स्पष्ट कर चुका हूं कि कार्यसूची में सूचीबद्ध विषयों के अलावा किसी अन्य विषय पर विचार नहीं किया जा सकता। अतः मैं इन सूचनाओं को स्वीकार नहीं कर पा रहा हूं। माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि इस संबंध में तर्क वितर्क न करें और सदन की कार्यवाही सुचारू रूप से चलाने में सहयोग दें।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः प्रश्न काल न लिये जाने के संबंध में मैं माननीय सदस्यों को बताना चाहूंगा कि प्रश्नों की सूचना सदस्यों द्वारा कम से कम 12 स्पष्ट दिन पहले दी जानी आवश्यक है। वर्तमान सत्र की अधिसूचना के बाद इतने दिन उपलब्ध नहीं थे। इसके अतिरिक्त मैं माननीय सदस्यों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाह रहा हूं। इसके अतिरिक्त राजस्व, गृह, सर्विसिज़, भूमि एवं भवन, दिल्ली पुलिस और डी.डी.ए. जैसे विभाग विधान सभा के प्रश्नों का उत्तर ही नहीं देते हैं। इसके अतिरिक्त अनेक विभागों के पिछले सत्र के उत्तर भी अब तक नहीं आये हैं, इससे प्रश्न काल की गरिमा को क्षति पहुंचती है। मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करता हूं...

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ता (माननीय नेता-प्रतिपक्ष): जो आपके अधिकार क्षेत्र में नहीं हैं उनकी बात कर रहे हो, जो अधिकार क्षेत्र में है उनपे

आप स्वीकार कर नहीं रहे, आप प्रश्नकाल करिये न। मतलब आप अध्यक्ष जी इस तरह सरकार अगर गलतचल रही है तो ठीक तरीका नहीं है ये। आप प्रश्नकाल नहीं कर रहे और आप aggressive हो रहे हैं। प्रश्नकाल करना नहीं है और aggressive हो रहे हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः रांग है। हम कड़े शब्दों में इस बात की आलोचना करते हैं सरकार की कि आप प्रश्नकाल को अवॉयड कर रहे हैं। पूरे वर्ष में आपने प्रश्न काल नहीं किया। आप बताईये मंत्री क्यों नहीं जवाब देना चाहते?

माननीय अध्यक्षः चलिये। नियम 280 में प्राप्त राजेश ऋषि जी, विजेन्द्र गुप्ता जी, अजय महावर जी, श्रीमती बंदना कुमारी जी, श्री जरनैल सिंह जी, श्री भूपेंद्र सिंह जून जी, जितेंद्र महाजन जी, श्रीमान जय भगवान जी, महेंद्र गोयल जी, ओमप्रकाश शर्मा जी, ये सभी माननीय सदस्यों के 280 पढ़े हुए माने जायें और इनका उत्तर सबको मिले।

...व्यवधान...

(प्रतिपक्ष के समस्त सदस्यों द्वारा माननीय अध्यक्ष महोदय की रूलिंग के विरोध में सदन से वाक आउट किया गया।)

माननीय अध्यक्षः सदन पटल पर प्रस्तुत किये जाने वाले कागज़ात – अब श्रीमती आतिशी जी, माननीय मुख्यमंत्री निम्नलिखित दस्तावेजों की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करेंगी।

माननीया मुख्यमंत्री (श्रीमती आतिशी): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कार्यसूची के बिन्दु क्रमांक 3 में दर्शाये गये दस्तावेजों की हिंदी एवं अंग्रेजी प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करती हूं।

i) दिल्ली प्रौद्योगिकी विष्वविद्यालय का वर्ष 2022–23 हेतु नौवां प्रतिवेदन (अंग्रेजी प्रति)[1]

ii) दिल्ली प्रौद्योगिकी विष्वविद्यालय के वर्ष 2019–20 एवं 2020–21 हेतु वार्षिक लेखों पर नियंत्रक–महालेखा परीक्षक के लेखा परीक्षा प्रतिवेदन सहित कृत्य कार्रवाई प्रतिवेदन (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[2]

iii) दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग (डीईआरसी) के वर्ष 2021–22 एवं 2022–23 हेतु वार्षिक प्रतिवेदन (हिंदी एवं अग्रेजी प्रति)[3]

iv) दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग (निर्णायक अधिकारी द्वारा जांच करने के लिए व्यवसाय का संचालन) विनियम, 2023 के संदर्भ में दिल्ली राजपत्र (असाधारण, भाग–3) में जारी अधिसूचना संख्या एफ. 11(2086)/डीईआरसी/2022–23/सी.एफ.नं0 7689/2430 दिनांक 01.03.2024 (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[4]

---

[1] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23340 पर उपलब्ध।

[2] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23341 पर उपलब्ध।

[3] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23342 पर उपलब्ध।

[4] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23343 पर उपलब्ध।

v) दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग (नवीकरणीय उर्जा के लिए नेट मीटरिंग) (प्रथम संषोधन) विनियम, 2024 के संदर्भ में दिल्ली राजपत्र (असाधारण, भाग-3) में जारी अधिसूचना संख्या एफ. 3(629)/टैरिफ-इंजी/डीईआरसी/2020-21/6910/808 दिनांक 02.08.2024 (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[5]

vi) दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग (विद्युत दुर्घटनाओं के पीड़ितों को क्षतिपूर्ति) विनियम, 2024 के संदर्भ में दिल्ली राजपत्र (असाधारण, भाग-3) में जारी अधिसूचना संख्या एफ. 17(293)/इंजी/डीईआरसी/2021-22/7147/745 दिनांक 25.07.2024 (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[6]

vii) दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग (विद्युत उपभोक्ताओं की शिकायतों के निवारण हेतु फोरम और लोकपाल की स्थापना हेतु दिशा-निर्देश) विनियमावली, 2024 के संदर्भ में दिल्ली राजपत्र (असाधारण, भाग-3) में जारी अधिसूचना संख्या एफ. 11(2203)/डीईआरसी/2023-24/8014/533 दिनांक 24.06.2024 (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[7]

viii) दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग (विद्युत उपभोक्ताओं की शिकायतों के निवारण के लिए फोरम और लोकपाल की स्थापना के लिए दिशा-निर्देश) विनियम, 2024 के संदर्भ में दिल्ली राजपत्र (असाधारण, भाग-3) में जारी शुद्धिपत्र संख्या एफ. 11(2203)/डीईआरसी/2023-24/8014/997 दिनांक 03.09.2024 (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[8]

---

[5]दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23344 पर उपलब्ध।

[6]दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23345 पर उपलब्ध।

[7]दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23346 पर उपलब्ध।

[8]दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23347 पर उपलब्ध।

ix) इंन्द्रप्रस्थ पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड (आईपीजीसीएल) का वर्ष 2020-21 हेतु 20वां वार्षिक प्रतिवेदन (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[9]

x) प्रगति पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (पीपीसीएल) का वर्ष 2020-21 हेतु 20वां वार्षिक प्रतिवेदन (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[10]

xi) दिल्ली पावर कंपनी लिमिटेड (डीपीसीएल) के वर्ष 2019-20 एवं 2020-21 हेतु वार्षिक प्रतिवेदन (हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[11]

माननीय अध्यक्षः अल्पकालिक चर्चा नियम 55 श्री कुलदीप कुमार जी, श्री दिनेश मोहनिया जी, अब्दुल रहमान जी -दस हजार बस मार्शलों को हटाये जाने के कारण बसों में महिलाओं की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया है, इसके संबंध में चर्चा प्रारंभ करेंगे।

अल्पकालिक चर्चा नियम 55

श्री कुलदीप कुमारः धन्यवाद अध्यक्ष जी, आज इस सदन में फिर एक बहुत महत्वपूर्ण विषय पर आपने चर्चा करने का समय दिया है और जैसे ही ये चर्चा शुरू होती है तीसरी बार इस सदन के अंदर ये बस मार्शलों की चर्चा शुरू हो रही है। जैसे ही चर्चा शुरू होती है अध्यक्ष जी बीजेपी के लोगों को पता होता है कि बस मार्शल पर चर्चा होने वाली है, उनको इसमें भाग लेना पड़ेगा इसलिये वो पहले ही यहां से अपना कुछ न कुछ रास्ता निकाल के यहां से भाग जाते हैं। आज

[9]दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23348 पर उपलब्ध।
[10]दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23349 पर उपलब्ध।
[11]दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23350 पर उपलब्ध।

भी विजेंद्र गुप्ता जी और उनकी पूरी टीम ये बस मार्शल भी देख रहे होंगे कि बहाना बनाकर यहां से निकल गये क्यूंकि उनको पता था कि इससे अगला जो विषय है वो बस मार्शल के उपर चर्चा का विषय है। अध्यक्ष जी, दिल्ली देश की राजधानी है और पूरी दुनिया की नजर दिल्ली पे रहती है। इसी कारण दिल्ली में हर छोटी बड़ी घटना दुनिया में भारत की छवि पर प्रभाव डालती है। इसी को ध्यान में रखते हुए अध्यक्ष जी माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने सन 2015 के अंदर दिल्ली की डीटीसी की बसों के अंदर बस मार्शलों की तैनाती की थी। इसलिये की थी ताकि डीटीसी की बस में सफर करने वाली हमारी माताएं, बहनें, महिलायें जो बस में सफर करती हैं वो अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकें। और अध्यक्ष जी ये काम अरविंद केजरीवाल जी ने दिल्ली की डीटीसी बस में करके दिखाया कि जब भी हम कहीं गली मोहल्ले में जाते थे तो उन्हें बड़ा गर्व होता था कि उनकी सुरक्षा के लिये बड़े बड़े वीआईपी की सुरक्षा में तो पुलिस लगती है, गाड्र्स लगते हैं, लेकिन अरविंद केजरीवाल जी ने एक विजन के साथ अपनी माताओं, बहनों की सुरक्षा के लिये डीटीसी बस के अंदर उनकी सुरक्षा के लिये मार्शल की तैनाती की जो उनकी सुरक्षा करता था, जो ये देखता था कि उनके साथ कोई छेड़छाड़ न हो, कोई अप्रिय घटना न हो, उसको रोकने का काम करता था। लेकिन अध्यक्ष जी जो इस दिल्ली के अंदर महिला विरोधी लोग हैं जिनको महिलाओं की सुरक्षा से कोई लेना देना नहीं है, उन लोगों को ये बात रास नहीं आई। उन भारतीय जनता पार्टी के लोगों को लगा कि अरविंद केजरीवाल

जी को तो माताएं, बहनें दुआ देने लगी हैं, अब वो उनकी तारीफ करने लगी हैं कि उनके बेटे, उनके भाई ने उनके लिये डीटीसी बस के अंदर उनकी सुरक्षा का इंतजाम करके एक बस मार्शल की तैनाती की है और उसी के लिये भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने जो डीटीसी की बस के अंदर हमारे दस हजार से ज्यादा बस के मार्शल तैनात होते थे, जो उनकी सुरक्षा करने का काम करते थे, जो लोगों को सुरक्षा देते थे और उसमें कई सारी घटनायें ऐसी भी आईं जहां बस मार्शलों ने अपनी जान पे खेलकर दिल्ली की महिलाओं की सुरक्षा की, बच्चों को बचाने का काम किया, कहीं किडनैपिंग रोकने का काम किया लेकिन उनको आनन फानन में अध्यक्ष जी एक कुतर्क दे कर, तर्क नहीं कहूंगा कुतर्क देकर कि डीटीसी की बस के अंदर जो बस मार्शल हैं, डीटीसी की बस के अंदर सीसीटीवी कैमरे लग चुके हैं इसलिये उनकी आवश्यकता नहीं है, डीटीसी की बस के अंदर पैनिक बटन है इसलिये उनकी आवश्यकता नहीं है, उनको हटा दिया गया। अध्यक्ष जी वो दस हजार से ज्यादा बस मार्शल लगातार अपने रोजगार के लिये रोडों पे संघर्ष कर रहे हैं, सड़क पे संघर्ष करने का काम कर रहे हैं और साथ साथ आज जब से उन बस मार्शलों को एक सवा साल से ज्यादा हटे हुए हुआ है, जब से उन बस मार्शलों के हटने से उनकी नौकरी पे तो प्रभाव पड़ा-पड़ा, उनका घर चलना बंद तो हुआ ही हुआ, लेकिन सबसे बड़ा जो मुद्दा है महिला सुरक्षा का जिसको ध्यान में रखते हुए माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने ये कदम उठाया था, इसको लेकर आये थे, आज उन महिलाओं के अंदर भी डर का माहौल है। आप

दिल्ली में लगातार देख रहे हैं दिल्ली में लगातार ऐसी घटनायें हो रही हैं कहीं चाकू की, कहीं छुरी की, कहीं बलात्कार की, कहीं छेड़छाड़ की लेकिन डीटीसी की बस के अंदर जो महिलायें हमारी सुरक्षित महसूस करती थी अपने आप को, आज उनमें डर का माहौल है। तो आज उनको भी ये लग रहा है डर कि उनकी सुरक्षा में जो बस मार्शल लगे थे आज उनको हटा दिया गया है। अगर किसी हमारी बहन-बेटी के साथ बस में कोई घटना होती है, कोई अप्रिय घटना होती है, कोई छेड़छाड़ होती है तो उसको देखने वाला कोई नहीं है अध्यक्ष जी। आप सीसीटीवी कैमरे में बैठकर देखते रहेंगे, कोई भी देखता रहेगा, लेकिन मौके पर उनको बचाने वाला कोई नहीं होगा। आज उनको जिस प्रकार से निकाला गया, मुझे लगता है कि कहीं ना कहीं एक महिला सुरक्षा को जो कवच अरविंद केजरीवाल जी ने देने का काम किया था, उस महिला सुरक्षा को तोड़ने का काम दिल्ली के उपराज्यपाल महोदय ने और भाजपा के लोगों ने करने का काम किया है। अध्यक्ष जी, उन बस मार्शलों की नियुक्ति के लिए लगातार हम संघर्ष कर रहे हैं और देश ने देखा पहली बार ऐसा हुआ के एक सरकार के चुने हुए मंत्री को, सौरभ भारद्वाज जी को विजेंद्र गुप्ता जी अभी यहां बैठे थे, उन बस मार्शलों की नियुक्ति के लिए सौरभ भारद्वाज जी को उनके पैर पकड़ने पड़े और इसलिए पकड़ने पड़े कि उन 10 हजार बस मार्शलों को उनका रोजगार वापस कर दो, उन महिलाओं को सुरक्षा दे दो, उन बहन-बेटियों को सुरक्षा दे दो जिनके लिए अरविंद केजरीवाल जी ने उनको तैनात करने का काम किया था। विजेंद्र गुप्ता जी के पैर तक पकड़े, लेकिन अध्यक्ष जी पता नहीं ये बीजेपी के लोग किस मिट्टी के बने हैं, इनको

हमारी बहन-बेटियों की सुरक्षा से कोई लेना-देना नहीं है, इनको 10 हजार बस मार्शलों के घर परिवार से, उनके रोजगार से कोई लेना देना नहीं है। पहली बार अध्यक्ष जी सबने देखा, पूरे देश ने देखा कि दिल्ली की चुनी हुई मुख्यमंत्री नेता, विपक्ष की गाड़ी में बैठ कर एलजी हाउस जाने के लिए कहती हैं। उनके साथ एलजी हाउस तक जाती हैं और विजेंद्र गुप्ता जी चले गए यहां से बहुत ड्रामे किए इन्होंने उस दिन। कभी गाड़ी लैफ्ट मोड़ते थे, कभी गाड़ी राइट मोड़ते थे, कभी इधर भागते थे क्योंकि इनको पता था कि इनकी पोल खुल चुकी है, दिल्ली के बस मार्शलों को, दिल्ली की महिलाओं को ये बात पता लग चुकी है कि कैसे बीजेपी के लोगों ने साजिश करके उन बस मार्शलों को हटाने का काम किया है। कैसे षड्यंत्र करके उन बस मार्शलों को हटवाने का काम किया और अध्यक्ष जी उसके बाद नौटंकी करते हैं, ड्रामें करते हैं ये लोग, इनकी पोल खुल जाती है तो ये लोग भाग जाते हैं। वो बस मार्शल बेचारे इनके पास जाते हैं, इनसे गुहार लगाते हैं, हमारा रोजगार वापस कर दो, हमारा रोजगार लोटा दो, लेकिन ये लोग क्या करते हैं, ये लोग कभी कहते हैं कि कैबिनेट ने पास नहीं किया, कभी कहते हैं प्रेस कॉंफ्रैंस नहीं करी, कभी कहते हैं कागज एलजी के पास नहीं पहुंचे, कभी कहते हैं विधानसभा में नहीं उठाया। जो-जो बीजेपी के लोगों ने बस मार्शल्स से कहा अध्यक्ष जी, हमने वो सारे काम करने का काम किया, क्योंकि सरकार की नीयत साफ थी, अरविंद केजरीवाल जी ने उन लोगों को रोजगार दिया था। हमारी बहन-बेटियों की सुरक्षा के लिए वो सारे काम हमने करने का काम किया, लेकिन अध्यक्ष जी उसके बाद भी भाजपा के लोग मुकर गए।

उसके बाद बीजेपी के लोगों ने मीटिंग का समय मांगा मुख्यमंत्री जी से, उन्हें लगा कि हमें समय नहीं मिलेगा, लेकिन मुख्यमंत्री ने समय दिया क्योंकि हमारी तो नीयत साफ थी और विजेंद्र गुप्ता जी वहां पहुंचे, वहां बस मार्शल भी मौजूद थे, उन्होंने कहा कि आप कैबिनेट से पास करो, तुरंत प्रभाव में अध्यक्ष जी वहीं के वहीं कैबिनेट बुलाई गई, इस देश की राजनीति में पहले कभी ऐसा नहीं हुआ होगा कि जो मांग विपक्ष के साथियों ने की, जो मेमोरेंडम लेकर आए थे विजेंद्र गुप्ता जी, वो सारी मांगों को मान लिया गया और कैबिनेट के अंदर उसको पास करने का काम किया। उसके बाद फिर अध्यक्ष जी फिर दुबारा पुनरावृत्ति हुई उन चीजों की और उसके बाद हमें लगा अब इनको रोजगार मिल जाएगा। एलजी साहब के यहां गए, एलजी साहब ने भी पांच, सात, दस मार्शलों को अपने यहां बुलाया और बुलाने के बाद एलजी साहब ने उनसे बयान दिलवाए कि एलजी साहब ने हमें रोजगार दे दिया है, एक हफ्ते में हमें रोजगार मिल जाएगा, एक हफ्ते में नौकरी वापस हो जाएगा, एक हफ्ते में दुबारा महिलाओं की सुरक्षा होनी शुरू हो जाएगा। लेकिन अध्यक्ष जी उसके बावजूद भी ढाक के तीन पात, उन लोगों को रोजगार मिलने का काम नहीं हुआ। अगर एलजी साहब से बात नहीं बनी, उसके बाद क्रैडिट लेने के लिए बीजेपी के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता जी ने भी उनको अपने घर पर बुला लिया और बुलाने के बाद बड़ी शानदार फोटो खिंचवाई और कहा कि हमने बस मार्शलों को रोजगार दे दिया है और बस मार्शलों को रोजगार लोटाने का काम कर रहे हैं, विजेंद्र गुप्ता जी भी आ गए, इन्होंने भी गुलदस्ता बड़ा अच्छा हाथ में

पकड़ा और फोटो डाली ट्विटर के ऊपर कि बस मार्शलों की लड़ाई में हमारी जीत हुई और हम बस मार्शलों को रोजगार वापस देना चाह रहे हैं। आज मैं पूछना चाहता हूं विजेंद्र गुप्ता जी से, वो बस मार्शल आपसे पूछ रहे हैं गुप्ता जी कि बताओ उनका रोजगार वापस कब दोगे, उनका रोजगार वापस कब मिलेगा? अब तो जो-जो आपने कहा वो सारे काम कर दिए, एलजी साहब से जो चिट्ठियाँ आपने लिखवाई, उन चिट्ठियों का जवाब भी दे दिया। आपने जो बात कही, वो काम भी कर दिये, लेकिन उसके बाद भी रोजगार क्यों नहीं मिला उन लोगों का। वो लोग तरस रहे हैं, गुप्ता जी आपने तो फोटो खिंचा के कहा था उन लोगों से कि हमने आपको रोजगार दे दिया है, आपने तो बयानबाजी भी करवाई थी कि आम आदमी पार्टी आपको रोजगार नहीं दे पाई, लेकिन बीजेपी ने आपको रोजगार दे दिया, एलजी साहब ने भी फोटो डाली थी। आज वो 10 हजार बस मार्शल पूछ रहे हैं कि उनका रोजगार कब वापस मिलेगा? आज दिल्ली की बहन-बेटियाँ पूछ रही है आप लोगों से की अरविंद केजरीवाल जी ने सुरक्षा के लिए हमें जो हमारे मार्शल तैनात किए थे, उन बस मार्शलों को आपने क्यों हटाया, उनको क्यों बेरोजगार किया, हमारी सुरक्षा से आपको क्या दिक्कत थी, आज वो पूछना चाहते हैं आप लोगों से। लेकिन गुप्ता जी आप तो उन्हें मिलने का समय भी नहीं दे रहे हैं । अब तो गुप्ता जी मिलते भी नहीं हैं उन लोगों से। कोई चला जाए गुप्ता जी के कार्यालय में मिलने के लिए तो पुलिस बुलाकर उसे अरैस्ट और करवा देते हैं। अब वो बस मार्शल इनसे जवाब पूछ रहे हैं। अध्यक्ष जी उसके बाद अभी उपराज्यपाल साहब ने एक अंतिम लैटर लिखा और उन्होंने कहा, लैटर बहुत लिखते हैं

उपराज्यपाल महोदय। लैटर लिखते हैं आदेश नहीं देते कभी भी, वो लैटर लिखते रहते हैं, उनका काम है केवल मुख्यमंत्री, मंत्री को लैटर लिखते रहें। अरे उपराज्यपाल महोदय आप दिल्ली के सर्विसिज विभाग के मुखिया हैं, आप दिल्ली के सरकार के जितने अधिकारी हैं उनके मुखिया हैं, उसके बावजूद भी आप मंत्रियों को आदेश देते हैं, आप तो सीधे अधिकारी को आदेश दे दो, आपको किसने मना किया है आदेश देने के लिए। आपको जो पोलिसी बनानी है बनवाओ और आदेश देते हैं, उसके बाद अगर सरकार उसमें काम करती है अध्यक्ष जी, तो उसके बाद ये लोग क्या करते हैं उसको रोकने का काम करते हैं। अध्यक्ष जी 10 नवम्बर, 2024 को सभी मंत्रियों की बैठक हुई जिसमें तय किया गया कि बस मार्शल महिलाओं की सुरक्षा के लिए जरूरी हैं, ये मैं बस मार्शलस को बताना चाहता हूं और गुप्ता जी भी यहां बैठे हैं। उसके बाद मैं उसको पढ़ रहा हूं जो वो पत्र है। सार्वजनिक बसों में बस मार्शल का काम महिलाओं और कमजोर यात्रियों को सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए है, इसलिए उनकी तैनाती पर विचार करना जरूरी है, सार्वजनिक सुरक्षा में कोई समझौता नहीं किया जा सकता, खासकर महिलाओं के लिए जो सुरक्षित यात्रा पर निर्भर हैं, बस मार्शल की बहाली को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। बस मार्शल की मौजूदगी अपराधों को रोकने में मदद करती है जो तकनीक से नहीं किया जा सकता, बहाल में देरी से सुरक्षा से जुड़ी घटनाएं बढ़ सकती हैं और यात्रियों को खतरे में डाल सकती है। इसके अलावा हमारे परिवहन व्यवस्था में लोगों का विश्वास भी घट सकता है, सभी बस मार्शल जो

पहले दिल्ली सरकार में काम कर रहे थे उन्हें जल्द से जल्द बहाल किया जाए। ये सरकार का प्रस्ताव है अध्यक्ष जी, उनको बहाल करने के लिए। बस मार्शल ना केवल परिवहन विभाग में सुरक्षा का ध्यान रखते हैं बल्कि हजारों परिवार के लिए रोजगार का एक अहम स्रोत भी है, इन पदों को खत्म करने से कई परिवारों की आर्थिक स्थिति खराब हो गई है। बस मार्शलों को बहाल करने से ना केवल बस की सुरक्षा बढ़ेगी, बल्कि इन परिवारों को भी वित्तिय सहायता मिलेगी। ये साफ है कि बस मार्शल की बहाली के लिए लम्बा-चौड़ा प्रस्ताव तैयार किया जाएगा जो नीचे दिये गए बिंदुओं पर आधारित होगा। परिवहन आयुक्त, आशीष कुंद्रा जी 27/09/2023 का नोट जिसमें कहा गया है कि पहले माननीय उपराज्यपाल की मंजूरी चाहिए फिर मंत्री परिषद की मंजूरी ली जा सकती है। आशीष कुंद्रा जी कह रहे हैं अध्यक्ष जी ये बात, आशीष कुंद्रा जी जो पहले परिवहन विभाग देखते थे, अब एलजी साहब के सेक्रेटरी हैं, गुप्ता जी वो ये कह रहे हैं कि पहले, साफ-साफ वो इसमें कह रहे हैं। मुख्य सचिव श्री नरेश कुमार जी का 13/10/2023 का नोट है जिसमें कहा गया था कि यह मामला महिलाओं की सुरक्षा से जुड़ा है और इसलिए ये कानून और व्यवस्था से संबंधित है जो कि केंद्र सरकार और माननीय उपराज्यपाल महोदय के अधीन आता है। आपके अधिकारी कह रहे हैं गुप्ता जी ये सारी बातें और उसके बाद भी आप दिल्ली सरकार पे कहते हैं, दिल्ली सरकार अपना काम करती है तो आपके अधिकारी नोट बनाकर भेज देते हैं कि आपके तो अंडर में ही नहीं है, उपराज्यपाल नोट बनाकर भेज देते हैं। तो बस मार्शलों को क्यों गुमराह करने का काम कर रहे हो आप लोग? परिवहन से श्री

प्रशांत गोयल 16/11/2024 का नोट जिसमें कहा गया था कि बस मार्शल की नियुक्ति का मामला माननीय उपराज्यपाल महोदय के अधिकार क्षेत्र में आता है, फिर 10/11/2024 को हुई ऑल मिनिस्टर की बैठक में उपस्थित मंत्रियों ने निर्णय लिया कि महिलाओं की सुरक्षा पर और समझौता नहीं किया जा सकता है, इसलिए बस मार्शलों को तुरंत बहाल किया जाना चाहिए। अनुशंसाएं: क्योंकि बस मार्शल की योजना बनाना एक सेवा और कानून व्यवस्था से जुड़ा मामला है, हम माननीय उपराज्यपाल महोदय से अनुरोध करते हैं कि वह इसके लिए एक योजना तैयार करें, सरकार इसके लिए आवश्यक बजट मुहैया कराने के लिए तैयार है, योजना तैयार होने तक 31/10/2023 से पहले जहां कहीं भी बस मार्शल तैनात थे उन्हें तुरंत बहाल किया जाए, माननीय उपराज्यपाल इस योजना के अंतिम रूप के तैयार होने तक सिविल डिफेंस वॉलिंटियर को बस मार्शल के रूप में काम करने की अनुमति दे सकते हैं। अध्यक्ष जी सरकार चाहती है बस मार्शल लगें, मंत्रिपरिषद चाहता है बस मार्शल लगें, वो बस मार्शल चाहते हैं बस मार्शल लगें, हमारी महिलाएं चाहती हैं उनकी सुरक्षा हो, लेकिन बीजेपी के लोग गंदी राजनीति के लिए नहीं चाहते कि बस मार्शल की नियुक्ति होने का काम हो। हम जब प्रस्ताव भेजते हैं तो इनके अधिकारी कहते हैं आपके सविर्सिज का मामला नहीं है। ये हम भी जानते हैं, तो बस मार्शल को गुमराह क्यों किया जा रहा है? मैं फिर कहना चाहता हूं सदन के अंदर कि उन बस मार्शलों को तुरंत प्रभाव में बहाल किया जाए और विजेंद्र गुप्ता जी के प्रस्ताव को बढ़ा रहा हूं आगे। विजेंद्र गुप्ता जी आपके पास सर्विसिज का मामला है, आपके उपराज्यपाल महोदय के पासपास सर्विसिज

का मामला है। तो तुरंत प्रभाव में जो आपने प्रस्ताव भी किया था कि उनको पक्का किया जाए, उस प्रस्ताव को मैं सहमति देता हूं यहां से। हमारे मंत्रिपरिषद ने भी दी थी उस समय पर, केबिनेट ने भी, कि उन सबको पक्का किया जाए और अगर उन्हें पक्का नहीं करते हो, उनको रोजगार वापस नहीं करते हो तो ये माना जाएगा कि महिलाओं की सुरक्षा को खत्म करने के लिए, उन बस मार्शलों का रोजगार छिनने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने ये षडयंत्र रचने का काम किया। अरविंद केजरीवाल ने अपनी बहन–बेटियों की सुरक्षा करने के लिए, उन बस मार्शलों को रोजगार देने के लिए बसों में तैनात करने का काम किया था, तो उन्हें पुनः बहाल किया जाए, जब तक आप उन्हें पक्का नहीं करते उन्हें यथास्थिति जो मंत्रिपरिषद ने कहा है उन्हें यथास्थिति वापस पुनः बहाल किया जाए। आपने मुझे बोलने का समय दिया उसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद, बहुत–बहुत आभार।

माननीय अध्यक्षः श्री दिनेश मोहनिया जी। (अनुपस्थित)। श्री संजीव झा जी।

श्री संजीव झाः बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय कि आपने इस विषय पर मुझे चर्चा करने का मौका दिया। अध्यक्ष महोदय ये चर्चा इस सदन में पहली बार नहीं हो रही है। ये चर्चा इस सदन में कई बार हो चुकी है। ये सदन इन बस मार्शलों की नौकरी की चिंता कई बार कर चुका है, कई बार हमारे साथियों ने इनकी नौकरी बहाल हो इसको लेकर के, इस हाउस में पहले भी रेजोलुशन पास किया है। मैं

विपक्ष के साथी को भी धन्यवाद इसलिए करता हूं कि विजेंद्र जी रिजुलूशन लेकर आए थे और उनके रिजुलूशन पर ये पूरी हाउस सर्वसम्मति से पास किया था कि इन बस मार्शलों की नौकरी बहाल हो। ये हाउस चिंतित है, सरकार चाहती है, मुख्यमंत्री चाहते हैं, सभी मंत्री चाहते हैं, पर उसके बावजूद आखिर इन बस मार्शलों की नौकरी की बहाली क्यों नहीं हो रही। मुझे ये लगता है कि यहां कोई भी लगातार पिछले एक-डेढ़ साल से ये बस मार्शल सड़कों पर आंदोलन कर रहे हैं और वो नासमझ नहीं हैं। अगर भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को और हमारे विपक्ष के साथियों को लगता है कि हम उनको गुमराह कर रहे हैं और वो गुमराह हो रहे हैं तो नहीं हो रहे हैं। आपसे ज्यादा उनको एक-एक सच बातें पता है कि आखिर कारण क्या है, क्यों नौकरी नहीं मिल रही है। लेकिन अगर आप राजनैतिक बदला लेने के लिए आप किसी की नौकरी छीन रहे हैं, तो मुझे लगता है कि ये ऊपर वाले भी उसको देख रहे हैं, ये इंसाफ नहीं है। और मेरी चिंता इसलिए है अध्यक्ष महोदय कि ज्यादातर ये जो बस मार्शल हैं सब बाहर से आए हुए लोग हैं, कोई बिहार से, कोई यूपी से, कोई राजस्थान से, कोई उत्तराखंड से, कोई कहीं से, कोई कहीं से आकर के उनको नौकरी नहीं मिल रही थी, बस मार्शल के तौर पर उनकी नियुक्ति हुई उनका घर चलने लगा। उनका घर तो चल रही रहा था साथ में दिल्ली में बस में जो महिलाएं चढ़ती वो अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रही थी और ऐसे कई सारे काम, जिसके बारे में हमारे साथी कुलदीप भाई ने भी बताया और बाकी साथी भी बताएंगे। अड़चन क्या है इसकी टैक्नीक्लटी

में तो हमारे माननीय मंत्री और मुख्यमंत्री जी बातें रखें, मैं टैक्नीक्लटी में नहीं जाता। लेकिन विपक्ष के साथी यहां बैठें हैं और आपको भी दिल्ली की जनता ने चुना है, इन बस मार्शल के परिवार के लोगों ने भी आपको वोट किया होगा। मैं ये मानता हूं कि आज अगर आप अपनी तुच्छ राजनीति के कारण, घटिया राजनीति के कारण अगर उनकी रोजी-रोटी छीन रहे हो तो ना केवल उसके परिवार की भी बद्दुआएं आपको लगेंगी। तो आज मैं ये खड़ा होकर निवेदन करने आया हूं कि आप ये घटिया राजनीति, ये तुच्छ राजनीति, ये नीचता की राजनीति बंद कर दो। आप चाहें तो एक मिनट में हो सकता है ये आप भी जानते हैं। मुझे याद है कि माननीय मुख्यमंत्री से मिलने आए थे विजेंद्र गुप्ता जी, पूरी डेलीगेसन आई थी, मैं भी उसका एक हिस्सा था, मुझे लगा कि विजेंद्र गुप्ता जी आए हैं तो सकारात्मक चर्चा करने के लिए आए हैं। मैं जैन साहब को धन्यवाद करता हूं, एक बार मुझे लगता है एक बार उनका स्वागत कर लें। जैन साहब का हाउस में आना भी ये दर्शा रहा था विषयान्तर हो रहा है अध्यक्ष महोदय कि भगवान के घर में देर है अंधेर नहीं है। कोई अहंकारी होकर ये तो सोच सकता है कि हम बरबाद कर देंगे लेकिन भगवान ये कहते हैं कि किस्मत हम लिखते हैं तुम नहीं, दो मिनट में जोरदार झन्नाटेदार चांटा उन अहंकारियों पर लगा और जैन साहब हमारे बीच में हैं आपका बहुत-बहुत स्वागत है हाउस में। 18 महीने आपने जो झेला है, आपके परिवार ने जो झेला है वो हम सब लोग समझ सकते हैं लेकिन मुझे लगता है कि ये सब बातें इतिहास में लिखी जायेंगी, ये सब बातें कई बार शायद शहीदे आज़म

भगत सिंह नहीं जानते होंगे कि जंगल में जिस बात की हम मीटिंग कर रहे हैं कभी मुझे लोग इतिहास में इस तरह से हमें पूजेगा, मानेगा, ये सब बातें इतिहास में लिखी जायेंगी स्वर्णिम अक्षर में कि हिस्सेदारी किसकी थी और काले अक्षरों में किनकी थी तो बहुत-बहुत स्वागत है सर आपका। एक बार फिर से हम लोग सब लोग पूरा सदन आपका स्वागत करते हैं और विपक्ष के साथी भी करते होंगे मजबूरी है ये ताली नहीं बजाते, ये भी आपके काम हो जानते हैं आपके योगदान को जानते हैं आपने,

...व्यवधान...

श्री संजीव झाः सबने कहा है, सबने बजाया है मुझे बहुत-बहुत, यही कल्चर होना चाहिये, पार्टी ने खत्म करी है आप सब लोग इसको शुरूआत कर रहे हैं, मैं धन्यवाद करता हूं आपका, बहुत-बहुत धन्यवाद आपका बहुत-बहुत ये होना चाहिये, ये होना चाहिये।

...व्यवधान...

श्री संजीव झाः देखिये विपक्ष के साथी भी इसलिये बजा रहे हैं कि मोहल्ला क्लिनिक ये भी जाते हैं, इनके क्षेत्र के लोग जाते हैं मोहल्ला क्लिनिक और मुझे लगता है कि एक अच्छे जनप्रतिनिधि की जिम्मेदारी भी यही है कि अपने क्षेत्र की जनता की सुविधाओं के साथ खड़े रहें। तो आपने जो मुझे आज के दिन मुझे वो कोफी आनन का वो स्टेटमेंट याद आता है जो दिल्ली के मोहल्ला क्लिनिक में आकर दिया था की प्राइमरी हैल्थ डिलीवरी का ये जो सिस्टम दिल्ली ने इज़ाद

किया उसको डेवलप नेषन को भी सीखना चाहिये। तो ये काम आपने किया आपने दिल्ली और देश को उम्मीदें दी हैं। अब मैं आता हूं फिर से विषय पर अध्यक्ष महोदय, चूंकि विजेंद्र गुप्ता जी सब लोग आये थे हम लोग भी गये इस उम्मीद से इस आशा के साथ कि आज बस मार्शल का ये डेढ़ साल का जो लगातार आंदोलन चल रहा है वो अंत होगा और इनको नौकरी मिल जायेगी। पर मुझे ये कहते हुये बड़ा खेद हो रहा है चूंकि मैं भी जनप्रतिनिधि हूं विपक्ष के साथी भी जनप्रतिनिधि हैं मुझे दिल्ली की जनता ने तीन बार चुनकर भेजा है विजेंद्र गुप्ता शायद दो बार चुनकर आये हैं मेरे ख्याल से, तो मुझे लगता है की हम सब लोगों को दिल्ली की जनता ने एक उम्मीद के साथ चुनकर के भेजा है और उसमें जब हम कोई भी ऐसी हरकतें जो एक जनप्रतिनिधि के मानक पर खरा नहीं उतरता हो, वो करते हैं तो जनता को बहुत निराषा होती है। विजेंद्र गुप्ता जी वहां खाली केवल राजनीति करने गये थे उनका ये मानना था, ये सोचकर गये थे कि मैं जाऊँगा, मुख्यमंत्री जी को ज्ञापन दूंगा और बाहर में PC करूंगा और आ जाऊँगा, उनको नहीं पता है कि हम लोग किस मिट्टी से और कहां से आये हुये हैं। विजेंद्र गुप्ता जी आये हमने कहा आपका स्वागत है आईये लेकिन आज नौकरी फाइनल करके जायेंगे ऐसे नहीं जाने देंगे आपको हम। हम सब लोग उस सदन में, उस मीटिंग हॉल में हम लोग बैठे थे, बड़ी विस्तार से विजेंद्र गुप्ता जी ने अपनी बातों को रखकर हम सबने पेशेंसली सुना। मुख्यमंत्री जी ने सारे कारण बताये कि क्या कारण था कि ये नौकरी नहीं मिल पाई और उसका समाधान क्या है। लगातार उनकी मंशा ये

रही कि किसी तरह से मुख्यमंत्री जी के उस बातों को डिसरप्ट किया जाये, वो अपनी बात ना रख पायें। हालात यहां तक हुये कि पहली बार मुझे लगता है कि चुने हुये विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री की मीटिंग में पुलिस आ जाये और ये कोई और नहीं किया, इस सदन के विपक्ष के नेता विजेंद्र गुप्ता जी उस मीटिंग में पुलिस को बुला लिया, कितना खतरा है हमसे, भई तो मैं कहना ये चाहता हूं कि जनता ने जिस मानक के साथ आपको चुनकर भेजा है आपने वो सारे मानक को तार–तार किया है, सारे मर्यादा को तार–तार किया है आपने। आपकी इन हरकतों से दिल्ली की जनता को घोर निराषा है। दिल्ली की जनता अपमानित महसूस कर रही है आपने जो हरकतें किया लेकिन फिर मैं विषय वस्तु पर आता हूं की आज यहां भी मैं देख रहा हूं कुछ बस मार्शल्स हैं यहां पर बैठे हुये हैं। ये बस मार्शल दिल्ली की सुरक्षा के लिये काम कर रहे थे आपने तो दिल्ली की सुरक्षा का हाल बद् से बद्तर बना दिया है। दिल्ली देश की राजधानी है देश के गृहमंत्री दिल्ली में रहते हैं उनके घर के इर्दगिर्द 20 किलोमीटर के अंदर रोज तरह–तरह के क्राइम हो रहे हैं, सड़कों पर चेन छीनी जा रही है, गेंगस्टर के वारदात हो रहे हैं। कॉलोनी में जाईये तो लोगों की बाइक चोरी हो रही है, गाड़ी चोरी हो रही है, रोज गोलीबारी हो रही है तो अमित शाह जी, गृहमंत्री के हाथ में दिल्ली सुरक्षित नहीं है। भाजपा ने दिल्ली के कानून व्यवस्था को बद् से बद्तर बना दिया है लेकिन हमारे पास जितने अधिकार हैं दिल्ली सरकार के पास अरविंद केजरीवाल जी की सरकार के पास आतिशी जी मुख्यमंत्री हैं, हमारी सरकार के पास जो भी उपाय थे, जितनी हमारी लिमिटेशन है उसी लिमिटेशन में दिल्ली को सुरक्षा

देने का कोशिश किया, आपने उससे भी दिल्ली की जनता को वंचित कर दिया। आपने उससे भी दिल्ली की जनता को वो सुरक्षित महसूस करे वो करना दुर्भर कर दिया आपने, क्यों कर रहे हैं ऐसा आप? आपने पहले जितने भी एडवाइज़र थे सरकार में हटा दिया, हमने कुछ नहीं कहा चूंकि वो काबिल लोग हैं वैसे भी नौकरी मिल जायेगी। इसी सदन के ऐसे बहुत सारे यंग माइंड जो देश-विदेश में काम कर रहे थे वो आये, गर्वनेंस का हिस्सा बने, कमाल के आईडियाज़ थे उनके, उनके आईडियाज़ से इस सदन को भी फायदा हो रहा था, इन सभी विधायकों को भी फायदा हो रहा था, दिल्ली को फायदा हो रहा था वो यंग माइंड ना केवल एन्टरप्रन्योरशिप बल्कि गर्वनेंस में कैसे अपनी भूमिका अदा करके गर्वनेंस को बेहतर बना सकते है वो सीख रहे थे, आपने उनको नौकरी से निकाल दिया हमने तब भी कुछ नहीं कहा कि उन बच्चों को टैलेंटिड हैं, उनको लाखों-करोड़ों के पैकेज मिल रहे हैं, कहीं आईएएस क्रैक किया, कहीं आईपीएस क्रैक किया, कोई बड़े-बड़े फर्म में नौकरी कर रहा है, हमने कुछ नहीं कहा आपको। लेकिन ये बस मार्शल, ये बेचारे कई लोगों को मैं अपने क्षेत्र में जानता हूं अध्यक्ष महोदय दिल्ली छोड़कर घर चले गये। कोई आठ हजार कोई दस हजार की नौकरी करता है बच्चों को स्कूल भेजना बंद कर दिया इतनी बद्दुआयें लेकर कहां जाओगे आप, किसके लिये ले रहे हो बद्दुआयें। कई बार लोग काम इसलिये करते हैं दुआयों से बरक्कत मिलती है और बद्दुआयों से खत्म होते हैं आप ये काम मत करें तो मैं आज इस सदन के माध्यम से मैं निवेदन कर रहा हूं विपक्ष के साथियों को की

ये बस मार्शल की नौकरी आप एक मिनट में चाहें तो करा सकते हैं और ये मैं भी जानता हूं ये बस मार्शल्स भी जानते हैं। आपने दिल्ली सरकार दिल्ली के मुख्यमंत्री पूरी कैबिनेट को जो-जो करना था कर लिया, आपने कहा कैबिनेट कर लो कैबिनेट कर लिया फिर आपने कहा की ये कमेटी बना दो, वो भी दे दिया फिर आप कहते हैं की ये आपका विषय ही नहीं है जी आप कर नहीं सकते मतलब डे वन से कह रहे थे। तो मैं कहना ये चाहता हूं अरे आपने तो इलीगली इसी दिल्ली में दिल्ली के सबसे apex post Chief Secretary होता है उसे इलीगली आपने तीन-तीन बार दे दिया extension आपने, जो ना तो यहां की मर्यादा के लिये ठीक था ना ये परम्परा के लिये ठीक है लेकिन आपने वो भी काम किया और ऐसे मैं आपको केन्द्र सरकार के ढेरों ऐसे एपाईंटमेंट बता सकता हूं मैं आपको, पूरे चार घंटे निकल जायेंगे कि किस-किस तरह से आपने अप्वाइंटमेंट करवाये हैं, इन बस मार्शलों से क्या दुश्मनी है आपकी? इसलिये कि वो गरीब है, इसलिये कि उसकी आवाज़ नहीं है, इसलिये कि उसकी आवाज़ आपके कानों तक पहुंचती नहीं क्योंकि आपके लिये इर्म्पोटेंट नहीं हैं वो। तो मुझे ये लगता है कि भारतीय जनता पार्टी को जो गरीबी से नफरत है उसकी सज़ा भुगत रहे हैं ये बस मार्शल। तो आपको अपोजिशन के साथियों को अगर ये लगे कि नहीं हम गोल-गोल घुमाने की कोशिश कर रहे हैं ये बस मार्शल गोल-गोल घूमकर हमारी बातों में आ रहा है, तो ऐसा नहीं है, हमसे और आपसे कई गुना समझदार वो हैं। वो एक-एक बात को, एक-एक कानून को, एक-एक चीज़ों को अच्छे तरीके से समझते हैं। मुझसे कई बार साथी मिलने आते हैं, हमसे ज्यादा अवेयर ये बस

मार्शल के साथी हैं जो ये बताते हैं कि ये क्या हैं और ये कर क्या रहे हैं। कई बस मार्शल के साथियों ने बताया कि इनको ये लगता है कि नौकरी इसलिये नहीं देंगे किये आम आदमी पार्टी के वॉलिंटियर हैं, अरे! ये सिविल डिफेंस हमने नहीं बनाया था, ये सिविल डिफेंस पहले ही बना था और वो जितने वॉलिंटियर्स थे उनको नौकरी मिली, कोई आम आदमी कार्यकर्ता को नौकरी नहीं मिली है। आप नौकरी दोगे नहीं और आम आदमी पार्टी नौकरी दे तो कह दोगे आम आदमी पार्टी के हैं। जितने लोग हटे इसलिये नहीं हटे कि उनमें काबिलियत नहीं थी, चाहें वो एडवाइज़र हों, चाहे यहां लेजिस्लेटिव असेंबली के बाकी जो हमारे यंग लोग आये थे वो हों, जितने भी ये सब केवल इसलिये हटे कि इनको लगा कि इन्होंने नौकरी दी है तो इनके हो जायेंगे और अगर हो भी जायेंगे तो आप नौकरी दो ना भाई। आपकी केन्द्र में सरकार है, आपके एलजी हैं, सारी पॉवर आपके पास है, दो आप। हम दस हज़ार दें तुम चालीस हज़ार दो, नौकरी देकर अपना बनाओ, रोजी-रोटी देकर अपना बनाओ। नौकरी छीनकर अपना नहीं बना सकते, नौकरी छीनकर बद्दुआयें ले सकते हो, नौकरी छीनकर दुश्मन बना सकते हो, नौकरी छीनकर अपने फायदे के लोग खड़े नहीं कर सकते। तो इसलिये अगर मान लो अच्छे काम करने से कोई अपना बनता है, तुम ज्यादा अच्छे काम करो, तुम्हारी केन्द्र में सरकार, 56 इंच के सीने की सरकार पता नहीं क्या-क्या बातें करते हो पर जनता के फायदे की बात हो जाती है तो चिकन हैड हो जाते हो फिर। तो मैं आज इस सदन के माध्यम से हाथ जोड़कर मैं निवेदन करने आया हूं की ये राजनीति बंद करो। इन

बस वॉलिंटियर को नौकरी दो, भूखे मर रहे हैं इनके परिवार की रोजी-रोटी चलनी मुश्किल हो गई है, बच्चों को पढ़ाना-लिखाना मुश्किल हो गया है, सुसाइड करने की नौबत आ गई है, कहां लेकर जाओगे इतनी बद्दुआयें। तो मैं आज जो कुलदीप भाई ने आज इस सदन में जो रेजोल्यूशन रखा है मैं उसके साथ खड़ा हूं और मुझे उम्मीद है की ये केवल इन बेचारों को लगता है ये क्या हो रहा है, चर्चा ही तो हो रही है, हो तो कुछ नहीं रहा। ये सदन इस दिल्ली की सबसे बड़ी पंचायत है, अगर यहां कोई बातें हो रही हैं तो मुझे लगता है कि दिल्ली के एल.जी. को भी और केन्द्र सरकार को भी इस हाउस के सेंस का सम्मान करना चाहिये। मैं मानता हूं ये अनडेमोक्रेटिक लोग हैं, इनको इनमें भरोसा नहीं है लेकिन इससे इस देश का नुकसान होता है इस देश के संवैधानिक व्यवस्था का नुकसान होता है। तो लोगों को जो जनतांत्रिक मूल्यों पर जो भरोसा है जो लोग चुनकर के भेजते हैं जो संविधान पर भरोसा है उन मूल्यों को खत्म ना करें आप। मैं एक चीज़ मानता हूं अध्यक्ष जी मैं अपनी बात खत्म करता हूं कि कोई भी संस्था हो चाहे परिवार हो, चाहे संविधान हो, जनतांत्रिक व्यवस्था, कोई भी आर्गेनाइजेशन हो, वो लोकलाज से चलता है। सारी बातें लिखी नहीं गई हैं लेकिन जिस दिन ये लोकलाज खत्म हो जायेगा, ना तो परिवार बचेगा, ना संस्था बचेगा, ना संविधान बचेगा, ना मूल्य बचेंगे,

(समय की घंटी)

श्री संजीव झा: तो कम से कम उस लोकलाज का भी सम्मान करें आप सब लोग ये मैं निवेदन करने आया हूं बहुत-बहुत धन्यवाद

अध्यक्ष महोदय कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मैं उम्मीद करता हूं कि आज सकारात्मक चर्चा करके क्रैडिट आप ले लेना, हम सब लोग कहेंगे, जहां कहोगे सारे फोरम पर कहेंगे कि विजेंद्र गुप्ता जी, अपोजिशन के प्रयास से इन बस मार्शलों की नौकरी मिल गई पर नौकरी दिलाओ, राजनीति न करो बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्री राजेश गुप्ता जी।

श्री राजेश गुप्ताः धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने मुझे इस बहुत गंभीर विषय पर बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, कुछ लोगों के लिये बड़ी इन्टरटेन्मेंट की चीज़ हो जाती है जब प्रदर्शन होते हैं, जब लोग रोड़ों पर चुने हुये विधायक जिनको जनता ने दो-दो, तीन-तीन लाख लोगों ने चुना है वो रोड़ पर बैठ जाते हैं। मुझे नहीं पता भारत के अंदर दिल्ली को छोड़कर ऐसी कितनी सरकारें हैं जो सत्ता में हों और उसके विधायक रोड़ पर बैठे हुये हों, पुलिस उनको खींचकर ले जा रही हो और किस लिए? वो विधायक अपने लिए कुछ नहीं मांग रहे थे। वो विधायक कुछ लोगों के साथ बैठकर जो अपनी नौकरी के लिए लड़ाई कर रहे थे कुछ उसमें से लड़के हैं जिनके घर उन पर चलते हैं। कुछ लड़कियां थी जो वहां रो रही थी, बिलख रही थी। पुलिस ने उनको पीटा। उन विधायकों को डिटेन किया और किस लिए? सिर्फ क्योंकि एक राजनीतिक पार्टी को मजा आ रहा है कि इससे उसे लगता है कि जो सत्ताधारी पार्टी है उसकी कुछ बदनामी होती है। मुख्यमंत्री के साथ में एक मिटिंग होती है। टाईम मांगा जाता है। दिल्ली की मुख्यमंत्री

जी उनको टाईम देती हैं। विपक्ष के सारे साथी आते हैं, बड़े सम्मान के साथ बैठते हैं। मैं आज ये कहना चाहता हूं कि वहां पुलिस तो आई, विजेन्द्र जी ने पुलिस को बुलाया मगर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था कि पुलिस को बुलाया जाए। पुलिस वाले भी बेचारे क्या करते, आकर खड़े हो गए। लेकिन मैं सत्ता के कुछ साथियों का धन्यवाद भी करता हूं विपक्ष का सॉरी, जिन्होंने ये कहा कि ये चीज गलत हुई है। शर्मा जी का बहुत-बहुत धन्यवाद, ओम प्रकाश शर्मा जी वहां पर थे। हमारे करावल नगर के विधायक बिष्ट साहब वहां थे। उन्होंने माना कि ये चीज गलत हुई है, ये नहीं होना चाहिए था। दोनों ही सीनियर साथी हैं और मैं मानता हूं कि राजनीति ऐसी ही होनी चाहिए कि जो गलत है उसको आप गलत कह पायें, सही हो उसको हम सही कह पायें। मजाक बना, उसके बाद में फिर बैठे खाना खाया। माननीय मुख्यमंत्री जी का बहुत-बहुत धन्यवाद, उन्होंने सबको खाना खिलाया। फिर बैठे, फिर बात हुई और फिर बात हुई कि चलिए एक काम करते हैं कि आज इस काम को खत्म किया जाए। कैबिनेट का नोट बनाया गया। सारे हमारे साथी, हमारे सारे मंत्री वहीं पर थे, कैबिनेट का नोट बनाया गया। उसको लेकर कहा गया कि एलजी साहब के पास लेकर जाना है। तो लेट किस लिए करना है, जब दिल्ली के युवाओं के रोजगार का सवाल है तो हम वेट किस लिए करें। हमने माननीय विजेन्द्र गुप्ता जी से कहा आप साथ चलिये। पहले वो नहीं जाना चाहते थे फिर उन्होंने भी हामी भरी, साथ चले और उसके बाद में जैसे किसी साउथ इंडियन पिक्चर की शूटिंग अगर आपने कभी देखी हो तो, बहुत ही बेहतरीन पिक्चर

चली। देखने लायक स्ट्रीम कि माननीय मुख्यमंत्री जी विजेन्द्र गुप्ता जी की गाड़ी में बैठी। हमने कोशिश करी। विजेन्द्र जी ने हमें तो नहीं बैठाया लेकिन अपने कुछ साथियों को बैठाया, कोई बात नहीं वो भी हमारे ही भाई हैं। माननीय मंत्री सौरभ जी को मैं आज सैल्यूट करता हूं जो लोगों की नौकरी के लिए, उनको जो अपनी जनता की नौकरी के लिए एक चुना हुआ मंत्री पैरों पर लेट गया कि मैं आपके पैर पकड़ रहा हूं आप इनकी नौकरी के लिए हमारे साथ चल पड़ें। अब कभी ये उतरते थे, कभी ये बैठते थे पूरी म्यूजिकल चेयर देखने लायक थी। मैं बड़ा अफसोस व्यक्त करता हूं, उस टाईम आप नहीं थे नहीं तो आपको बड़ा मजा आता। कभी चढ़ रहे हैं, कभी उतर रहे हैं, कभी उतर रहे है, कभी चढ़ रहे हैं पूरी म्यूजिकल चेयर। उसके बाद में गाडियां चलती है। पीछे सबकी गाडियां चलती हैं बीच में गाडी को रूकवा दिया गया। फिर उतर गये। नहीं हम इधर से नहीं जायेंगे, हम उधर से नहीं जायेंगे, पता नहीं कौन-कौन से रूट लगवा रहे थे। मैं कह रहा हूं एक-एक सीन देखने लायक था सर। अगर पिक्चर की टिकट होती मैं तो सौरभ जी आपसे रिक्वेस्ट करूंगा सौरभ जी, अगर कोई आप पर उसकी विडियो हो तो चलाया जाए, उस पर टिकट लगाओगे, खूब बिकेगी। इतनी एन्टरटेनमेंट विजेन्द्र जी ने हमको दिया हमें इसका धन्यवाद करना चाहिए। हालांकि लोगों की नौकरी के साथ में एन्टरटेनमेंट नहीं होना चाहिए। लेकिन इन्हें क्या है गाड़ी बीच में रोकी, नीचे उतर गए फिर ऊपर नीचे, आगे पीछे किसी तरह माननीय एलजी साहब के पास पहुंचे। माननीय एलजी साहब के यहां पर विजेन्द्र जी की गाड़ी तो चली गई।

लेकिन मुख्यमंत्री की गाड़ी उसमें नहीं घुस पाई। इससे ज्यादा दुर्भाग्य क्या हो सकता है। हम वहां खड़े थे, सौरभ जी वहां खड़े थे, मंत्री जी।

...व्यवधान...

श्री राजेश गुप्ताः गाडी तो रोक दी सर आपने। गाड़ी में कुछ लोग होते है कुछ स्टाफ होता है, सब कुछ होता है। आप सुनिये विजेन्द्र जी।

...व्यवधान...

श्री राजेश गुप्ताः मेरे भाई जब आप बोलोगे तब आप बोल लेना। प्रधानमंत्री की गाड़ी में तो कोई बैठता नहीं, इनकी गाड़ी में तो दो चार लोग बैठते हैं। प्रधानमंत्री की गाड़ी में तो लाईट होती है सिर्फ। इनकी गाड़ी में कुछ काम करने वाले लोग भी होते है। प्लीज, जब आपका समय आये तब आप बोल लेना। तो सर इन्होंने गाड़ी को जाने नहीं दिया। मंत्री जी बाहर थे, सारे विधायक बाहर थे। हम रिक्वेस्ट करते रहे कि कम से कम मुख्यमंत्री की गाड़ी को अंदर जाने दो। उन्होंने कहा नहीं जी कोई परमिशन नहीं है जबकि इनके साथ में इनके विधायक साथी गए थे और हमारे भी साथी है। हम तो कहते हैं जाने देना चाहिए। एलजी साहब से क्यूं नहीं मिलेंगे हमारे विधायक साथी? बाहर पूरा ड्रामा होता रहा जी। ये अंदर करते रहे कि अभी साईन करा रहे हैं, अभी साईन करा रहे हैं, अभी साईन करा रहे हैं। हम लोग वेट

करते रहे कि चलो हम सब कुछ सहन कर लेंगे किसी भी तरीके से दिल्ली वालों की नौकरी लग जाए। सर ये बाहर आये। फिर जनता ने, जिन बेचारों की नौकरी थी, इनके पैर पकड़े इन्होंने छटक दिया उनको। इन्होंने कहा नहीं भैया हम नहीं कर सकते। इनकी भी मजबूरी है खैर। जब तक ऊपर से संदेशा नहीं आयेगा ये कैसे उस काम को करें। आखिर में पुलिस खदेड़ कर हम को ले गई और कुछ लोगों को इतनी चोटें लगी कि उनकी एमएलसी हुई। वहां से हम लोगों को रात को डिटेन कर लिया गया सॉरी, शाम के डिटेन कर लिया गया और उसके बाद में छोडा गया। पूरी एन्टरटेन्मेंट का काम इन्होंने वहां पर किया। उसके बाद में हुआ अब इसको पक्का कर देंगे, कल पक्का कर देंगे, परसों पक्का कर देंगे। भई एलजी साहब ने करना है, क्यों करना है एलजी साहब ने? क्योंकि जिन मार्शल्स को लगाया गया है उन मार्शल्स का काम ही लोगों की सेफ्टी, सिक्यूरिटी करना है और वो एक कानून व्यवस्था का काम है। ये तो जानते हैं कि कानून व्यवस्था किस के पास में है। वो एलजी साहब के पास में है, नहीं तो हम कब का कर देते उसको। अब मुझे ऐसा लगता है कि शायद इनको डर लगा मार्शल के नाम से। उसमें गलती आपकी है जी, आपने मार्शल के नाम से इनको इतना डरा दिया है कि मार्शल आओ ले जाओ उठाकर। तो इनको लगता है कि बस के मार्शल भी इनको उठा लेंगे। सच में मार्शल नाम से घबरा गए हैं ये। इनको लगता है कि मार्शल आयेंगे और एकदम से इनको उठायेंगे और बाहर ले जायेंगे। नहीं वो इस काम के लिए नहीं है सर। वो चोर, उच्चकों, बदमाशों के लिए है। आप तो सम्मानीय साथी हैं

आपको क्यों उठायेंगे। वो उनके लिए हैं। अब उन बसों के मार्शल्स की अगर मैं यहां पर आपको बताने की कोशिश करूं दर्जनों ऐसे एग्जाम्पल हैं, जहां पर उन लोगों ने चोरी को, चकारी को छेडखानी को रोका है। इनको प्रोब्लम क्या है? जो काम लगातार 2015 से हो रहा है। मेरे साथ में आज बहुत ही क्योंकि खुशी की बात है सत्येन्द्र जैन जी बैठे हैं, उन्हीं का ये काम शुरू करा हुआ है। मैं पहले तो जैन साहब आपका बहुत वेलकम करता हूं। आज आप विधान सभा में हमारे साथ बैठे हैं। देखिये सर जब हम इनके, इन्होंने जो कुछ भी करा हालांकि मैं जैन साहब को बहुत पुराना जानता हूं, मेरे बड़े भाई है मैंने काफी उनके साथ काम भी किया है। अगर आप उनके चेहरे पर देखें तो कोई गुस्सा नहीं है क्योंकि जैन समाज के अंदर ना एक पर्व मनाया जाता है शर्मा जी, उसे 'पर्युषण' कहते हैं 'क्षमावाणी'। ये बेवजह भी साल में एक बार माफी मांग लेते हैं मैं कहता हूं आप भी मांग लो। आपने जो करा आप यकीन मानियेगा आप साथी मेरे साथ चलें अभी भी इनके घर के अंदर ना एक स्टीकर हाथ से बनाकर इनकी बिटिया ने लगाया हुआ है, छोटी बिटिया है वो। उसमें लिखा हुआ है पापा वेलकम बैक। राजनीति करो, इस लेवल पर मत लेकर जाओ। आपके भी परिवार है, हमारे भी परिवार हैं इस लेवल पर मत लेकर जाओ। हमारे लिए उन घरों में घुसना मुश्किल हो जाता है आपके भी साथी हैं। हम जाकर जब देखते हैं वो बिटिया वहां पर खड़ी हुई है उसने लगा रखा है पापा वेलकम बैक और वो पापा रहे एक महीने और फिर आपने उन्हें जेल में भेज दिया। फिर भेजा आपने वापिस। किस लिए? एक घर में क्या बीतती है

और क्या करा था उनके आदमी ने, उसके पापा ने? उसके पापा ने मोहल्ला क्लीनिक्स बनाये थे। आपको क्या तकलीफ होती है इन चीजों से, ये समझ में नहीं आता कि आप राजनीति में उस लेवल पर लेकर जाते हो। इस आदमी की दूसरी गलती ये है ये आपके साथ बैठे हुए है आपको देखने में दिख रहा है कितने बड़े बदमाष हैं, अठारह महीने अंदर रहे। आप ऐसे-ऐसे लोगों को तो पैरोल पर छोड देते हो क्योंकि आपको राजनीतिक फायदा मिलता है। सर इनको हरियाणा में राजनीतिक फायदा मिला, इन्होंने पैरोल पर छोड़ा। ये आजकल ऐसे-ऐसे लोगों के नाम करवा रहे हैं बड़े-बड़े दिखाते हैं कि हम कितने बड़े डॉन हैं और एक आदमी जिसने लोगों की भलाई का काम करा उसको आपने अठारह महीने जेल में डाल दिया क्योंकि वो आपकी राजनीति के अंदर रोड़ा था। कैसी राजनीति है ये? ये बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है इस तरह की चीजों को करना। खैर सर, अब मार्शल्स पर आते है। इन्होंने जो मार्शल्स को हटाया। इतने साल से पॉलिसी चल रही थी 2015 से ये पॉलिसी यहां पर चल रही थी। इनको कोई दिक्कत 2015 से दिखाई नहीं दी, चलती रही। अब शायद जनता में जब ये जाते हैं तो इनको पता लगा कि भई ये तो सब आम आदमी पार्टी को पसंद करते हैं, आम आदमी पार्टी के प्यारे हैं। आम आदमी पार्टी को वोट करते हैं। बस यहीं से इनकी दिक्कत शुरू हो गई। दूसरा इनको डर था ही कि मार्शल है तो भाजपा वालों को पकड़ लेंगे। मार्शल तो भाजपा वालों को यहां पर पकड़कर उठाते हैं तो इनको ये घबराहट हो गई। पटकते नहीं है। बताओ ये तो। जबकि मैंने कहा कि वो चोर, उच्चकों के लिए है

आप तो अच्छे लोग हों, आपके साथ में वो ऐसा क्यों करेंगे। अब आप ये देखिये कि दुनियाभर की ऐसे रिपोर्टस हैं जिनके अंदर उन लोगों ने जाकर उनको पकड़ा जो लोग वहां पर गलत काम कर रहे थे, उन कामों को रोका। अगर आप इजाजत दे तो मैं उनमे से कुछ एग्जाम्पल्स जरूर आपके सामने रखना चाहता हूं। नवम्बर, 2019 ये मैं ये मैं पीछे से ही ले लेता हूं। 3 अगस्त, 2023 को ये इन्होंने इस काम को रोका जैसा मैंने अभी आपको बताया जैसे कि नागरिक सुरक्षा अधिनियम 1968 के तहत सीटीबी होमगार्ड सैनिकों की बस मार्शल के रूप में तैनाती का औचित्य इन सवालों के कारण फाइलों को ये घुमाते रहे। इन्होंने काम को रोक दिया। अब मैं आपको जैसे मैंने कहा कि कुछ एग्जाम्पल्स मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। नवम्बर, 2019 में मार्शल संतोष ने डीटीसी बस नम्बर 540 में एक चोर को मोबाईल फोन चुराते हुए रंगे हाथों पकडा और पुलिस को सौंप दिया। बताईये इसके अंदर क्या दिक्कत है इनको? 6 जनवरी, 2023 को रोहिणी इलाके में एक बस में एक व्यक्ति ने एक लडकी के सामने अश्लील हरकत की। मार्शल संदीप चकरा ने उसे पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया। अब ये रोहिणी का जो इलाका है, इसी से विजेन्द्र गुप्ता जी आते हैं। अब बताओ या तो जिस लड़के को पकड़ा था उसका इनसे कोई सम्बन्ध था जो इनको दिक्कत हुई। तो हम माफी मांग लेते हैं। तो सबको क्यों सजा दे रहे हो मार्शलों को। ऐसा ही कुछ हो सकता है। इस तरीके के इसमें दर्जनों उदाहरण हैं और अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए उन्होंने ना सिर्फ छेड़खानी को बदतमिजियों को और मेन बात तो ये होती है कि जब मार्शल वहां

खड़े होते हैं तो लोगों को वैसे ही डर हो जाता है, उन कामों को वो करते हुए डरते हैं जो उनको नहीं करने चाहिए। कुलदीप भाई ने जो बात रखी उसमें हम पूरी तरह इनके साथ है। एक मैं लास्ट पैरा ग्राफ जरूर पढ़ना चाहता हूं वो इसके अंदर है इस पर जरूर ध्यान दिया जाए, मुझे लगता है इस प्वाइंट पर बस मार्शल की योजना बनाना एक सेवा और कानून व्यवस्था से जुड़ा मामला है। हम माननीय उप-राज्यपाल से अनुरोध करते हैं कि इसके लिए योजना तैयार करें। दिल्ली सरकार इसके लिए आवश्यक बजट मुहैया कराने को तैयार है। योजना तैयार होने के लिए 31.10.2023 से पहले जहां कहीं भी बस मार्शल तैनात थे उन्हें तुरन्त बहाल किया जाये। माननीय उप-राज्यपाल इस योजना के अंतिम रूम से तैयार होने तक सिविल डिफेंस वालेंटियर्स को बस मार्शल के रूप में काम करने की अनुमति दें। मैं फिर इस लाईन को हाईलाईट कर रहा हूं सर कि ये योजना बनाना एक सेवा और कानून व्यवस्था से जुड़ा मामला है इसलिए हमें एलजी साहब की इसमें जरूरत है। ये सारे हमारे मंत्रियों की इसके अंदर क्योंकि एक कैबिनेट नोट है इसमें सिग्नेचर है। अब क्यूं ये इस बात को घुमाना चाहते हैं, इनको लगता है राजनीतिक फायदा होता है तो मैं इनसे एक रिक्वेस्ट और किए देता हूं ये सब भी माननीय विधायक हैं। ये जाकर उन बस्तियों में जायें। उनके हालात को देख लें, उनकी चीजों को समझ लें कि उनके साथ राजनीति करो और ये भी समझ लें कि अगर आप नौकरी नहीं भी लगने दोगे एलजी साहब के माध्यम से तब भी वो आपको वोट नहीं कर रहे सर। बेवजह बद्दुआयें और लेने का काम हो रहा है। तो ये रिक्वेस्ट है कि

ऐसा ना करें और जल्दी से जल्दी जो कुलदीप भाई ने अपनी बात को रखा उसके ऊपर ये चलें और इस चीज को पूरा करें। मैं एक बात सर और रखना चाहता हूं। अभी आप सभी ने जो मेरे साथी विधायक है सबने देखा होगा कि इस तरीके से बड़े-बड़े होर्डिंग्स लगे हुए हैं पूरी दिल्ली के अदंर और बड़ी अच्छी बात है। जय श्रीराम का नारा है। हम सब राम के भक्त हैं। आप भी अयोघ्या गये थे, मैं भी अयोध्या कई बार होकर आ चुका हूं। बहुत सारे हमारे साथी बार-बार जाते हैं। मुझे सिर्फ इतना कहना है कि इसके ऊपर बीजेपी के बहुत सारे नेताओं की और इन्होंने अपने चुनाव चिन्ह लगाया हुआ है। मेरा मानना है कि जल्दी से जल्दी इसके अंदर भगवान श्रीराम की फोटो जरूर लगा दी जाये क्योंकि इसमें श्रीराम की फोटो नहीं है। मैं समझता हूं कि भगवान श्रीराम का ये अपमान है। विजेन्द्र जी और जितने इनके साथी हैं मानेंगे कि जल्दी से जल्दी, विजेन्द्र ठीक है ना जी, इसमें तो कुछ गलत नहीं है, इस होर्डिंग को चेंज करवा दीजिए और कमल की फोटो के साथ-साथ जो आपने चुनाव चिन्ह लगाया है, भगवान श्रीराम की फोटो लगाईये। वो हमारे अराध्य है। तो ये आपसे प्रार्थना है। बहुत-बहुत धन्यवाद सर।

माननीय अध्यक्षः श्री अभय वर्मा जी।

श्री अभय वर्माः धन्यवाद अध्यक्ष जी। कुलदीप कुमार जी के 10 हजार बस मार्शलों के हटाये जाने पर महिलाओं की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होने के संदर्भ में चर्चा में भाग लेने का आपने मौका दिया है।

सबसे पहले तो मैं भी इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं कि 10 हजार चार सौ नहीं, 20 हजार आठ सौ मार्शलों की नियुक्ति आप कीजिए। सरकार में आप हैं, बस मार्शलों को नियुक्त करने की जिम्मेदारी आपकी है क्योंकि मैं इस बस मार्शल के इशू पर कई बार सत्ता पक्ष के सदस्यों के साथ भी चर्चा किया हूं। और जब मुख्यमंत्री जी को चिट्ठी लिखा गया कि हमें मिलने का समय दिया जाए। मुख्यमंत्री जी ने भी तुरन्त हमें समय भी दिया और स्थान भी दिया। लेकिन हमें ये नहीं पता था कि समय देते वक्त और स्थान देते वक्त इस मुद्दे पर राजनीति करना है इसलिए हमें समय दिया गया, इसका अंदाजा हमें नहीं था। हम बड़े उत्साह और उमंग के साथ मुख्यमंत्री जी से मिलने पहूंचे। लेकिन मुख्यमंत्री जी पूरी टीम कम से कम चालीस पचास लोगों के साथ मिलने आई। तो हमें जाकर समझ में आया कि वहां पूरी बस मार्शल की नियुक्ति की बात नहीं होनी है पूरी राजनीति होनी है। हम भी चालीस पचास लोग लेकर जा सकते थे लेकिन हम बड़े साफ दिल से और बड़े इस उद्देश्य से गए थे कि इस काम को सिरे चढ़ाना है, कोई बात नहीं वहां पूरी राजनीति हुई। अध्यक्ष जी हम भी इस सदन के चुने हुए सदस्य हैं, हमारा घेराव कराया गया कुछ लोगों के द्वारा हाल के कुंडी बंद किए गए। बाथरूम जाने के लिए कहना पड़ा कि हमें बाथरूम जाना है तब हमें गेट से बाहर निकलने दिया गया। ये भी..

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः अरे बहन जी, देखो उधर से सारी बात आई है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः प्लीज शांति पूर्वक, प्लीज।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः इधर से भी जाने दो देखो पांच साल निकल गए यही करते करते जो बात है वो जाने दो।

माननीय अध्यक्षः चलिए अभय जी मैं बोल रहा हूं ना, मैं रोक रहा हूं।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः तो अध्यक्ष जी हमने बहुत प्रयास करके मुख्यमंत्री जी ने भी अपनी बातें कही, हमने भी अपनी बातें कही, फिर विषय आया कि ये होगा कैसे क्यूंकि हम बार बार कहते हैं कि बस मार्शलों को लगाया किसने? आपने,

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः आपने, हटाया किसने? आपने। पत्र है पूर्व मुख्यमंत्री का पत्र है उन्होंने कहा था इमीडिएट अफेक्ट से इनको सबको टर्मिनेट किया जाये,

...व्यवधान...

श्री अभय वर्मा: अरे भाई साहब सच सुनो सच। अब ये कहते हैं नौकरी कौन देगा, एलजी, नौकरी कौन दिलवायेगा विपक्ष, तो आप सत्ता में क्यूं बैठे हैं, आप सत्ता में मत बैठिये न, आप कह दीजिये कि हमसे नहीं हो सकता। अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी बस मार्शल हमसे भी मिलने आते हैं और वो क्या कहते हैं वो भी आप सुन लीजिये। वो कहते हैं हमें बहुत बेवकूफ बनाया, पहले नौकरी पे रखा, वो भी गलत तरीके से, फिर पूर्व मुख्यमंत्री ने डंके की चोट पे टर्मिनेट कर दिया और अब वो कहते हैं कि नौकरी कौन देगा, एलजी देगा। दिलवायेगा कौन-विपक्ष। भाई साहब इनकी सच्चाई हम जान चुके हैं। और क्या कहते हैं वो सुनो -वो कहते हैं कि जो सरकार पिछले 12 साल में साफ पानी पीने के लिये नहीं दे सका तो हमें नौकरी क्या देगा, जो सरकार सांस लेने के लिये साफ हवा नहीं दे सका वो हमें क्या नौकरी देगा, जो सरकार अब तक सबसे ज्यादा यमुना को गंदी कर दी वो हमें नौकरी क्या देगा। सच को सुनिये 12 साल आपके सत्ता में हो गये पूरे दिल्ली को आपने कूड़े का घर बना दिया है, पीडब्ल्यूडी के रोड पे जाके देखिये हर जगह नाव रखे हैं। अध्यक्ष जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: अभय जी, चर्चा मार्शल्स पे रखिये।

श्री अभय वर्मा: मैं नहीं भाषण नहीं, बिल्कुल जो बस मार्शलों ने हमसे कहा है वो मैं बता रहा हूं। जो बस मार्शलों ने हमसे कहा है। आप कहें तो मैं उनकी गवाही करा देता हूं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आप चर्चा, मेरी प्रार्थना है बस मार्शल पर रखिए।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः बिल्कुल चर्चा पे ही हूं, चर्चा पे ही हूं, चर्चा पे ही हूं और ये आज कह रहा हूं हम सत्ता में आयेंगे तो इनको परमानेंट नौकरी देंगे, इनकी तरह झुनझुना नहीं दिखायेंगे और 10400 नहीं 20800 लोगों को मार्शलों पे लगायेंगे,

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः क्योंकि ये देखो देखो सच्चाई ये है आप सुनवा रहे हो न इनको आप आज मार्शलों को बुलवा के सुनवा रहे हो न।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई कुलदीप जी प्लीज। अखिलेश जी, अखिलेश त्रिपाठी जी।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः क्यों आप घबरा रहे हो, सच्चाई सामने आ रही है तो क्यों घबरा रहे हो।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः कुलदीप जी।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः अरे भाई सच्चाई सुनो न।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अखिलेश जी।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी, हमारी हालत क्या हो गयी है ये भी आप सुन लीजिये। एक व्यक्ति कौशाम्बी, गाजियाबाद से खांसते खांसते आया, आज पूरी दिल्ली खांस रही है। आप लोगों ने हालात क्या कर दिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अभय जी आप बस मार्शल की चर्चा करिये।

श्री अभय वर्माः अरे पूरी दिल्ली खांस रही है भाई, हॉस्पिटल से डाटा मंगवा लो, हॉस्पिटल से डाटा मंगवा लो।

(समय की घंटी)

...व्यवधान...

श्री अभय वर्मा: आज पूरी दिल्ली खांस रही है। पहले एक व्यक्ति खांसते हुए आया था।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: एक सेकिंड, राजेश जी बैठिये, बैठिये।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्मा: और दिल्ली आके सत्ता में बैठा।

माननीय अध्यक्ष: अभय जी मुझे लगता है बस मार्शल पे..

...व्यवधान...

श्री अभय वर्मा: और 12 साल में ये हाल कर दिया कि पूरी दिल्ली खांस रही है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: अभय जी, बस मार्शल्स पे..

...व्यवधान...

श्री अभय वर्मा: देखो सच सुनने..

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: अभय जी, अब बैठिये आप। अभय जी बैठिये।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्मा: सच सुनने में बहुत मिर्ची लगती है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: अभय जी, बैठिये, बैठ जाईये, बैठ जाईये।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्मा: नहीं नहीं, अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्ष: मैं बिल्कुल अलाउ नहीं कर रहा हूं।

श्री अभय वर्मा: बस मैं समाप्त कर रहा हूं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: आपके पास बस मार्शल्स पर चर्चा करने के लिये कोई तथ्य नहीं है। बस मार्शल्स पर चर्चा क्यों नहीं कर रहे आप?

...व्यवधान...

श्री अभय वर्मा: बस मार्शल पे ही बोल रहा हूं।

माननीय अध्यक्ष: आप नहीं बोल रहे इस विषय पे।

श्री अभय वर्मा: बिल्कुल बस मार्शल पे बोल रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः आपके पास बस मार्शल पे चर्चा करने के लिये कोई शब्द ही नहीं हैं।

श्री अभय वर्माः नहीं नहीं, क्या बात कर रहे हैं बस मार्शल पे बोल रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः आप खांसी पे बोल रहे हैं, आप प्रदूषण पे बोल रहे हैं।

श्री अभय वर्माः मैं तो कह रहा हूं कि बस मार्शल की नियुक्ति पे राजनीति मत करो।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः आप राजनीति मत करो। आप राजनीति कर रहे हो इसलिये बस मार्शल की नियुक्ति नहीं हो रही।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आपको समय दिया है आप बस मार्शल पर बात करिए।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः बिल्कुल राजनीति कर रहे हो आप।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः कुलदीप जी, प्लीज बैठिये। कुलदीप जी बैठिये प्लीज।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैंने अलाउ किया, बैठिये, बैठिये।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः भाई बैठ जाओ, बैठ जाओ। बैठ जाओ।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भाई साहब आप बैठिये। आप बैठिये मैं रोक रहा हूं उनको। आप बैठिये नीचे। आप बैठिये नीचे।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बैठिये, बैठिये,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः ऐसे नहीं चलेगा सदन।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः हां तो बैठिये मैं रोक रहा हूं। कुलदीप जी, बैठिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः चलिये बैठिये।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः सर बस मार्शल की नौकरी लगे, ये हम भी चाहते हैं लेकिन विद क्लीन हैंड,

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः लगा दो, क्यों? सत्ता में आप बैठे हो आप लगाओगे नौकरी। आपने हटाया था।

माननीय अध्यक्षः आप मुझसे बात कर रहे हैं या.

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः आपने हटाया तो नौकरी आपको देनी होगी।

माननीय अध्यक्षः आप अपनी बात करिए मैं रोक रहा हूं, प्लीज। कनकलूड करिए जल्दी।

श्री अभय वर्माः हां अध्यक्ष जी इसके लिए विद क्लीन हैंड, मैं मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद करता हूं कि पिछले एक डेढ महीने से जो कड़वाहट अखबार में छपती थी ना वो बंद हो गई कम से कम विद क्लीन हैंड साफ दिल से एप्रोच करें और नौकरी दें। देखिए हुआ क्या हमारे साथ-

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः हां बिल्कुल नहीं।

माननीय अध्यक्षः भई अभय जी आप उधर ध्यान मत दीजिए आप अपनी बात रखिए।

श्री अभय वर्माः सर हुआ क्या? हमारे मंत्री जी एक नौटंकी टोली नहीं होती है, आ के बिजेंद्र जी के पैर पे गिर गए, फोटो खिंचवा लिया अगले दिन अखबार में छपवा दिया। ऐसे नौकरी नहीं मिलेगा। आपकी ये हालत हो गई आप मंत्री होते हुए पैर पे गिर रहे हो तो किस बात के लिए सत्ता में बैठे हो, रिजाइन करना चाहिए ना, आज रिजाइन करना चाहिए कि हम नौकरी नहीं दे पा रहे हैं बस मार्शल्स को इसलिए हम रिजाइन दे रहे हैं। बस दोषारोपण, विपक्ष लगाएगा नौकरी, एलजी देगा नौकरी। भाई साहब माफ करो ये बस मार्शलों को मत गुमराह करो। ये बस मार्शल को गुमराह करके आप बहुत बड़ा अन्याय कर रहे हो इसकी सजा ये देगें। सत्ता में आप बैठे हो आप ये नहीं कह सकते कि हम नहीं दे पा रहे हैं। या तो आप स्वीकार करो कि हम नहीं दे सकते लेकिन आप वो गरीब जिसकी रोजी रोटी इनके दस पंद्रह हजार के तनख्वाह से चलती थी एक तो आपने उनकी नौकरी छीनी और पूरी राजनीति कर रहे हो आप इस विषय पर। बार बार विपक्ष को घेरते हो, शर्म आनी चाहिए सरकार को। विपक्ष को नहीं घेरना चाहिए, अपनी गलती स्वीकारिए या आप नौकरी दीजिए, हम भी इनके साथ खड़े हैं अगर ये नौकरी देंगे।

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए अब हो गया।

(समय की घंटी)

श्री अभय वर्मा: तो हमारा पूरा समर्थन है। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: प्रीति जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: भई कुलदीप जी, कुलदीप जी ये ठीक नहीं है अब।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: हंसने दो क्या दिक्कत है आपको। वो देख रहे हैं सब।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: कुलदीप जी, ये ठीक नहीं है। आपको क्या दिक्कत है?

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: चलिए बहन प्रीति जी।

श्रीमती प्रीति जितेंद्र तोमर: धन्यवाद।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: प्रीति तोमर जी।

श्रीमती प्रीति जितेंद्र तोमरः धन्यवाद अध्यक्ष जी, जो आपने इतने गंभीर मुद्दे पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी जब 2015 में हमारी अरविंद केजरीवाल जी के कुशल नेतृत्व में हमारी सरकार बनी तब केजरीवाल जी के सामने दिल्ली के कुछ अहम मुद्दों में से एक मुद्दा महिलाओं की सेफ्टी को लेकर था, बच्चों और बुजुर्गों की सेफ्टी को लेकर था क्योंकि दिल्ली धीरे धीरे क्राइम कैपिटल बनती जा रही थी क्योंकि केजरीवाल जी राजनीति करने नहीं, राजनीति बदलने के लिये आये थे। उन्होंने और उनकी सरकार ने बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा के साथ साथ विमेन सेफ्टी को विशेष तरजीह दी। उन्होंने जनता से जो वायदे किये वो सब पूरे किये और इतिहास में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। जैसा कि उस समय डीटीसी बसों में महिलाओं के साथ जिस तरह की अभद्रता और बदतमीजी की जाती रही उससे आप लोग अच्छी तरह से वाकिफ हैं। उसके अलावा बुजुर्गों व बच्चों को भी हैल्प की जरूरत होती है। इसके मद्दे नजर दिल्ली गवर्नमेंट ने एक स्कीम शुरू की जिसके तहत दिल्ली की बसिज़ में बस मार्शल तैनात किये गये जो दो से तीन शिफ्ट में काम करते थे। नतीजा, हमारे शहर की महिलायें निडर और बेखौफ होकर सफर करने लगी थी। बसिज़ में पैनिक बटन भी लगाये हुए थे। ये बस मार्शल बुजुर्गों और बच्चों की पूरी सुरक्षा करते थे। तो इस तरह अध्यक्ष जी एक पंथ दो काज वाली बात हो गयी। इस तरह से उन्हें रोजगार भी मिल गया और महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों की सेफ्टी भी हो गयी। लेकिन अध्यक्ष जी शायद कहीं न कहीं अंदेशा भी था केंद्र सरकार की हरकतों को देखते हुए

और वो हो भी गया। 2023 के अप्रैल में एक साजिश के तहत सैंट्रल गवर्नमेंट ने ऑफिसर्स को माध्यम बना कर पहले इन्हें हटाने की साजिश रची, फिर इनकी सेलरी रोक दी गयी और इस बीच में बहुत सारी बातें हुई जिनका जिक्र मेरे साथी विधायकों ने अभी अभी किया है। अरविंद केजरीवाल जी बार बार लिखित में षिकायत करते कि बस मार्शल को तनख्वाह मिलनी चाहिये, उन्हें बसिज़ में लगा रहना चाहिये लेकिन केंद्र सरकार ने अक्टूबर 2023 में दस हजार बस मार्शल्स और सिविल डिफेंस वारियर्स को डयूटी से हटा दिया, इनके घरों में चूल्हा नहीं जला, कई लोगों ने सुसाईड तक कर लिया, ये बस मार्शल्स जो हैं महिलाओं की सेफ्टी के लिये लगाये गये थे और कई घटनायें किडनैपिंग की हुई जिसमें इन्होंने बहुत हैल्प करी। पिछले एक साल से बस मार्शल्स सड़कों पर संघर्ष कर रहे थे इनका साथ हमारे एक्स-सीएम अरविंद केजरीवाल जी ने, हमारे हर मंत्री ने, हर विधायक ने दिया, चाहे वो सड़क पर संघर्ष करना हो, या पुलिस के द्वारा डिटेन करना हो या लाठियां खाना हो। हमारी सरकार के मंत्री, विधायक इनके साथ कंधे से कंधा मिला कर रहे। आखिरकार बस मार्शल्स का संघर्ष रंग लाया, सैंट्रल गवर्नमेंट को इनके संघर्ष के सामने झुकना पड़ा, दिल्ली गवर्नमेंट का ये प्रस्ताव कि बस मार्शल्स को वापस नौकरी पर रखा जाये, उनको मानना पड़ा। दस हजार बस मार्शल्स और सिविल डिफेंस वारियर्स को प्रदूषण के खिलाफ युद्ध, एंटी पॉल्यूशन ड्राईव में लगाया गया है या कहें कि उनको नौकरी मिल गयी है। इसको भी कैटेगराईज किया गया है। एक तरफ हमारी केजरीवाल सरकार है जो लगातार दिल्ली के युवाओं को

रोजगार दे रही है, दूसरी तरफ केंद्र सरकार है जो दूसरे स्टेट्स को पराली जलाने के लिये, गंदा पानी भेजने के लिये उकसा रही है। उन्हें न महिला सुरक्षा की चिंता है और न ही युवाओं की बेरोजगारी से कोई मतलब है। किसी भी तरह से दिल्ली सरकार के काम में बाधा डालना है। अध्यक्ष जी, अब हमारे ये वॉलंटियर्स पहले दिल्ली की बहनों को सुरक्षा दे रहे थे और अब ये दिल्ली के लोगों की सांसों की रक्षा कर रहे हैं एंटी पॉल्यूशन ड्राईव के तहत। लेकिन अध्यक्ष जी, सबसे बड़ा मुद्दा दिल्ली वालों के सामने ये है कि बसिज़ में बस मार्शल न होने से महिलाओं के साथ फिर से अभद्र व्यवहार शुरू हो गया है, बदतमीजी शुरू हो गयी है, बुजुर्गों और बच्चे भी सेफ फील नहीं कर रहे हैं इसके लिये हमारी माननीय चीफ मिनिस्टर आतिशी जी ने एलजी के पास प्रस्ताव भेजा है और कहा है कि या तो इन्हें कांट्रैक्चुअल बेसिज़ पर रखा जाये या इनको परमानेंट किया जाये क्यूंकि ये चुनी हुई सरकार के अंडर नहीं आता है ये एलजी साहब के डोमेन में आता है और क्योंकि ये महिला सुरक्षा का मुद्दा है इसलिए बस मार्शल को परमानेंट तौर पर दिल्ली की हर बस में रखा जाए ताकि दिल्ली की महिलाएं असुरक्षित महसूस ना करें क्योंकि अध्यक्ष जी पालिसी बनाने में एलजी साहब को टाइम लग सकता है दो महीने, तीन महीने या छह महीने क्योंकि ऐसा होता रहा है और इतने लंबे वक्त तक हम महिलाओं की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते हैं तो दिल्ली गवर्नमेंट ने ये फैसला लिया है कि तुरंत प्रभाव से दस हजार बस मार्शल्स को जो 31 अक्तूबर 2023 को लगे हुए थे, उनको परमानेंट किया जाए जब तक

कि कोई नई पॉलिसी नहीं आ जाती। अध्यक्ष जी, हम एल.जी. साहब से उम्मीद करते हैं और साथ ही साथ अपने विपक्ष के भाइयों से भी मैं उम्मीद करती हूं कि इस प्रस्ताव को जल्दी से जल्दी पास किया जाए ताकि महिलाओं को, बुजुर्गों को और बच्चों को सुरक्षा मिल सके एक इंसानियत के तौर पर ही क्योंकि सबके परिवार है और जनता जनार्दन हैं। मैं सोचती हूं कि ऐसा करने से, इस नेक काम को करने से आप सभी को उनकी दुआएं मिलेगी। अध्यक्ष जी, आपने बोलने का मौका दिया बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। श्री सोमनाथ भारती जी।

श्री सोमनाथ भारतीः अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद आपने इतने गंभीर विषय पर मेरे विचार रखने का मौका दिया। अध्यक्ष महोदय, ये मुद्दा बहुत गंभीर है दो लिहाज से, एक तो 10 हजार, एक नहीं, 10 हजार नौजवानों की लिवलीहुड का मसला है और जो दूसरा सबसे बड़ा मुद्दा इससे अटैच्ड है वूमेन सिक्योरिटी का। अध्यक्ष महोदय, पूरा दिल्ली ही नहीं पूरा देश ने देखा था किस प्रकार से निर्भया के साथ जो वीभत्स घटना घटी थी उसका कारण क्या रहा, पूरा देश सकते में था। ऐसी वीभत्स घटना देश ने पहले कभी नहीं देखी थी। दिल्ली में बहुत बड़ा आंदोलन हुआ अगर उस वक्त केजरीवाल सरकार दिल्ली में होती तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि इस प्रकार की घटना दिल्ली में नहीं होती। अध्यक्ष महोदय, बसों के अंदर मार्शल, देखिए चूंकि कुछ सब्जेक्ट्स मैटर्स जो हैं वो डेली गवर्मेंट के अंतर्गत नहीं है

कांस्टिटयूशनली, कुछ भाजपा के लोगों ने अनकांस्टिटयूशनली छीन लिया। लॉ एंड ऑर्डर हमारे पास नहीं है, पुलिस हमारे पास नहीं है, ठीक है लेकिन हमने गिव-अप नहीं किया, हमने छोड़ नहीं दिया, अपनी दिल्ली की माताओं, बहनों, बेटियों को छोड़ नहीं दिया। डयूटी श्योरली सेंट्रल गवर्मेंट की थी, मोदी सरकार की थी कि वो सिक्योर करें लेकिन हमने अपने दायित्व को और तरीके से निभाने का प्रयत्न किया। पहली बार पूरे देश में बसों के अंदर सीसीटीवी कैमरास लगाया गया। बसों के अंदर पहली बार पूरे देश में पैनिक बटंस लगाया गया और बसों के अंदर पहली बार बस मार्शल के जरिए लेडिस सिक्योरिटी का पहला सुरक्षा का प्रबंध किया गया।

अब ये कहते हैं कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', हमने तो आज तक नहीं देखा कुछ इन्होंने बेटी बचाने को प्रबंध किया हो। अध्यक्ष महोदय, 2015 में जब ये फैसला सरकार ने लिया था कि हमें बसों के अंदर महिला सुरक्षा के लिए बस मार्शल को डिप्लॉय करना है तो ये संख्या करीब 10 हजार की थी और 10 हजार से ज्यादा परिवारों को इस प्रकार से रोजी-रोटी और महिलाओं की सुरक्षा का प्रबंध किया गया। हम सबको मालूम है किस प्रकार से दिल्ली के अंदर घटनाएं उस वक्त होती थी, बस मार्शल आने के पहले हुआ करता था। और सबसे बड़ा मुद्दा जो हिंदुस्तान के अंदर है खासकर के वूमेनक्राइम्स के ऊपर चूंकि वूमेन को कोंफिडेंस नहीं है कि मुझे इसमें न्याय मिलेगा कि नहीं मिलेगा इसलिए वो रिपोर्ट ही नहीं करते थे। कहीं बस पर छेड़खानी हुई, कहीं कोई घटना घटी उसकी रिपोर्टिंग ही नहीं होती थी। तो पहली

बार दिल्ली की महिलाओं को, दिल्ली की बेटियों को केजरीवाल जी के कारण ये कोंफिडेंस मिला कि हम रिपोर्ट कर सकते हैं तो जो बस मार्शल सामने खड़ा हुआ है उसके खड़ा होने मात्र से ही बस के अंदर एक सुरक्षा का माहौल हुआ करता था लेकिन भाजपा को वो पसंद नहीं था। तो मैं ये दावे के साथ कहता हूं कि जिस प्रकार से महिलाओं की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ किया गया, बेटियों की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ किया गया, ये साफ-साफ ये दर्शाता है कि भाजपा का ये नारा कि 'बेटी बचाओ' खोखला है, इन्होंने कोई प्रयत्न नहीं किया, इन्होंने कहीं बात नहीं की। ये अक्सर हमारे खिलाफ मुद्दा उठाते रहते हैं लेकिन जब बस मार्शल के ना होने से जो इनसिक्योरिटी पैदा हुआ बस के अंदर, जो महिलाओं का सुरक्षा का मामला पैदा हुआ उसके खिलाफ इन्होंने कहीं चूं तक नहीं किया।

अध्यक्ष महोदय, ये बार-बार, मुझे याद है एक बार खड़े हो गए थे विजेन्द्र गुप्ता जी टेबल के ऊपर, अरविंद जी ने कहा था हमारे पास एक ही एलओपी है जम्प मत कर जाओ, तब ये सोच रहे थे कि अरविंद केजरीवाल जी कुछ नहीं करेंगे, तो अरविंद जी ने कहा था उस दिन कि आप लीड करो हम सब चलते हैं। अध्यक्ष महोदय, ये चूंकि जिस प्रकार से सौरभ जी ने भी एक्सपोज किया इनको। हो क्या रहा है, इनको लगता है कि हम लोग उस प्रकार से इनको एक्सपोज नहीं कर पाएंगे। लेकिन जब से इन्होंने सर्विसेज मैटर छिना है इनका एक ही तरीका रहा है सर्विसेज मैटर छिनने के बाद पूरे दिल्ली में एक माहौल पैदा करने का प्रयत्न किया कि देखो जी इनसे काम नहीं हो रहा है,

देखो जी बस मार्शल इनसे नियुक्त नहीं हो रहे, देखो जी जल बोर्ड के अदंर काम नहीं हो रहा। लेकिन पूरी दिल्ली जान गई है कि दिल्ली में एकमात्र काम जो दिल्लीवासियों ने बीजेपी को सौंपा था वो था लॉ एंड ऑर्डर, पुलिस लेकिन आज पूरा देश बदनाम हो चुका है कि दिल्ली जो देश की राजधानी है वो गैंगस्टर का एक अड्डा बन गया है। दिन-दहाड़े गोलियां चल रही हैं, दिन-दहाड़े छुरेबाजी हो रही है..

माननीय अध्यक्षः सोमनाथ जी, चर्चा मार्शल्स पर करिये, प्लीज।

श्री सोमनाथ भारतीः मैं उसी पर आ रहा हूं। चूंकि हमारे पास पुलिस डायरेक्टली नहीं है और इसी कारण से हमने कई सारे ऐसे तरकीब अपनाए जिससे हमारी बेटियों की सुरक्षा हो सके अध्यक्ष महोदय। पैनिक बटन, सीसीटीवी कैमराज, बस मार्शल्स, ये इसीलिए बसिस में थे कि हमारी बेटियां सुरक्षित रहें लेकिन इन्होंने उसको असुरक्षित कर दिया। और ये दुनिया को बताते रहें कि जी नहीं देखो अरविंद जी नहीं कर रहे हैं, अरविंद जी नहीं कर रहे हैं, अरविंद जी नहीं कर रहे हैं। तो शुक्र करो कि हमारे मंत्रीगण सारे पढ़े लिखे हैं, हमारे मुख्यमंत्री पढ़े लिखे हैं पिछले वाले भी और अभी वाले भी। तो इन्होंने एक्सपोज कर दिया कि सर्विसेज मैटर छिनने के बाद बस मार्शल की नियुक्ति का ताकत सिर्फ और सिर्फ एल.जी. साहब के हाथ में था। इन्होंने क्या किया अक्टूबर, 2023 में फॉरमली 10 हजार बस मार्शल्स को बर्खास्त कर दिया। अब ये जब मुद्दा बना, जब इनको लगा कि भई आम आदमी पार्टी को बदनाम करने का इनको एक टूल मिल गया है, यंत्र

मिल गया है तो हमारे मंत्री साहिबान ने भी, सौरभ जी का धन्यवाद करता हूं कि इन्होंने पूरे दिल्ली के सामने बीजेपी को एक्सपोज किया और किस हद तक वो गए इतिहास है, मुझे लगता है पूरे देश में किसी मंत्री ने ये कदम नहीं उठाया होगा आज तक कि एलओपी का पैर पकड़ ले, ये अपने आप में बहुत बड़ी बात थी अध्यक्ष महोदय। दिल्लीवासियों को दिखा कि आम आदमी पार्टी के सरकार का मंत्री किस हद तक हमारे लिए जा सकता है। अध्यक्ष महोदय, अब ये मुद्दा जब तूल पकड़ गया और जब पूरी दिल्ली को लग गया कि सिर्फ और सिर्फ इस मसले पर एल.जी. साहब और एल.जी. साहब के जरिए बीजेपी का हस्तक्षेप था उनकी नौकरियां लेने का तो उनको लगा कि भई अब तो करना पड़ेगा। लेकिन फिर भी जब तक मौजूदा मुख्यमंत्री ने नोटिंग बनाकर के रिकमेंडेशन नहीं किया तब तक ये नहीं माने और फिर जब ये किया तो कुछ समय के लिए किया।

मैं तो ये कहना चाहता हूं कि ये जो 10 हजार बस मार्शल्स हैं इनको तुरंत परमानेंट इनको नियुक्ति देनी चाहिए और चाहिए कि कभी भी कोई भी सरकार इस प्रकार से वूमेन सिक्योरिटी के साथ खिलवाड़ न कर सके। अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है कि भाजपा सरकार ने माननीय मोदी जी के नेतृत्व में कहा था भई 2 करोड़ नौकरी हर साल देंगे। अब नौकरी देना तो दूर है ये नौकरियां खा रहे हैं। नौजवान अध्यक्ष महोदय नौकरियों के अभाव में गेनफुली एम्पलॉयड न हो तो किस प्रकार से क्राइम की ओर बढ़ता है हम सबने देखा है। क्राइम और पॉवर्टी का, क्राइम और अनएम्पलॉयमेंट का एक रिश्ता है इसलिए हमें तुरंत चाहिए

कि, एक तो मैं धन्यवाद करता हूं हमारे मुख्यमंत्री का, माननीय केजरीवाल साहब का, हमारे मंत्रीगण का कि जिस प्रकार से उन्होंने हस्तक्षेप किया, जिस प्रकार से इंटरवेंषन किया और हर प्रकार के वो स्टेप्स लिए जिससे ये बात दूध का दूध, पानी का पानी हो जाए कि अगर बस मार्शल्स निकाले गए, किसके कारण निकाले गए, अगर उनको परमानेंट नहीं कर रहे हैं तो कौन रिस्पोंसिबल है।

मुझे तो इस सदन में याद है, एम्पलॉयमेंट का छोड़िए, हमने तो यही तो पूछा था अध्यक्ष महोदय कि फैलाने विभाग में क्या वैकेंसी है, तो मुझे बताया गया था, लिखित में उत्तर आया था एल.जी. साहब की तरफ से कि सोमनाथ जी नहीं बतायेंगे क्योंकि सर्विसेज डिपार्टमेंट आपके पास नहीं है। अब जहां ये इफॉर्मेशन देने को राजी न हो वैकेंसिज का वहां अनएम्पलॉयमेंट के लिए और निष्कासन के लिए हमें उत्तरदायी ठहराए ये तो हास्यास्पद है। तो सबको आज जगजाहिर हो गया है कि भाजपा ने वूमेन सिक्योरिटी के साथ खिलवाड़ किया दिल्ली में, भाजपा ने 10 हजार मार्शल्स को नौकरी से निकाल करके उनके परिवारों के जीवनयापन के साथ खिलवाड़ किया। भाजपा सिर्फ कहती है कि हम नौकरियां देंगे, पूरे हिंदुस्तान के अंदर इन्होंने सिर्फ नौकरियां खाने का कार्यक्रम किया है अध्यक्ष महोदय।

मैं इस बात को भी ऑन-रिकॉर्ड कहना चाहता हूं जिस देश में मां लक्ष्मी की पूजा हो, मां सरस्वती की पूजा हो, मां दुर्गा की पूजा हो उस देश में सिर्फ एक ही व्यक्ति है जिसने कि वूमेन सिक्योरिटी के

लिए हर प्रकार से जो उनके स्कोप में नहीं भी आता था उसके बियांड जाकर उन्होंने काम किया, उनका नाम हैं अरविंद केजरीवाल। अध्यक्ष महोदय, मैं ऑन-रिकॉर्ड अपनी सरकार का, अपने मंत्रीगण का, अपने मुख्यमंत्री का एप्रिसिएशन लाना चाहता हूं और आपके जरिए उनको बधाई देना चाहता हूं कि इस प्रकार के उन्होंने स्टेप्स लिए हैं जोकि ना सिर्फ 10 हजार हमारे जो बस मार्शल्स हैं उनको नौकरी देना है बल्कि पूरे दिल्ली के अंदर वूमेनसिक्योरिटी को सुनिष्चित करना है। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद सोमनाथ जी। राखी बिरला जी।

श्रीमती राखी बिरलाः बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। आज बस मार्शल्स का जो ये मुद्दा है मुझे लग रहा है कम से कम छठीं या सातवीं बार इस सदन के अंदर इस विषय पर गंभीर चर्चा हो रही है और एक-एक सदस्य हर बार जब-जब इस चर्चा का हिस्सा बनता है तो बिल्कुल सत्य पर आधारित तथ्यों को सदन पटल पर रखने का काम करता है। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ऐसी है कि जिनके हाथों में या जिनका दायित्व इन बस मार्शल्स को पुनः उनकी नौकरी देने का है या उनको उनकी रोजी रोटी लौटाने का है उनके कान पर जूं तक नहीं रेंगती। बहुत दुखद है और बहुत सोच का भी विषय है कि चाहे संवैधानिक पद हो, चाहे राजनैतिक पद हो वहां पर ऐसे लोग भी कभी बैठ सकते हैं जिनके अंदर संवेदनाएं नहीं हैं, जिनके अंदर किसी का दुख महसूस करने का फीलिंग्स नहीं है, ऐसे लोग जो किसी की रोटी रोजी के ऊपर राजनीति करते हुए दिखाई देते हैं ऐसे लोगों को न सिर्फ अपने पदों से इस्तीफा देना चाहिए बल्कि इनको डूबकर मर जाना

चाहिए क्योंकि इंसानियत इनके अंदर रत्ती-भर बची नहीं है। जब ये राजनैतिक पदों पर आसीन होते हैं तब ये कहते हैं हम सेवा के भाव से आये हैं, हमें सेवा करनी है, लेकिन राजनीति के अंदर अपने सामने वाले मजबूत प्रतिद्वंदी को हराने के लिए, अपनी दुश्मनाई उनके साथ साधने के लिए एक नहीं, दो नहीं, दर्जन नहीं, सैकड़ों नहीं, हजारों हजार बस मार्शलों की नौकरी की बलि दे दी जाती है। अध्यक्ष जी दो महीने बाद दिल्ली में चुनाव है। तमाम राजनैतिक पार्टियों के अंदर टिकटों की दावेदारी, टिकट आर्थियों की लम्बी-लम्बी लाईन लगी हुई है। निष्चित तौर पर भारतीय जनता पार्टी में भी लगी है। मैं यहां बैठे हुए और मुझे बाहर सुनने वाले भी भारतीय जनता पार्टी के इन विधायक साथियों से पूछना चाहती हूँ आज आपको भी रात को नींद नहीं आ रही क्योंकि विजेन्द्र गुप्ता जी हों या गांधीनगर के हमारे विधायक साथी हों या हमारे करावल नगर के विधायक साथी हों, आपकी सीटों पर भी दर्जन-दर्जन भर लोग दावेदारी ठोक रहे हैं। आपको रातभर नींद नहीं आती कहीं मुझे टिकट तो नहीं मिलेगी। मेरी नौकरी तो नहीं चली जायेगी। सोचिए वो बस मार्शल जिनका आपने डेढ़ साल से ज्यादा का रोजगार छीनकर अपनी सत्ता को चमकाने के लिए और सत्ता में बैठी हुए कर्मठ और सफलतापूर्वक योजनाओं को लागू करने वाली सरकार को बदनाम करने का जो षडयंत्र आपने रचा है वो उसके जो है गाठें खुलती हुई सबको साफ दिखाई दे रही है। अध्यक्ष जी उस मीटिंग हॉल में उस दिन मैं भी थी जब लगातार-लगातार कई घंटों तक इस बात पर चर्चा चलती रही कि तुम करोगे कि हम करेंगे, कि ऐसे करेंगे, कि वैसे

करेंगे। जो-जो बात, जो-जो विषय जो-जो मांग विपक्ष के डेलीगेशन ने दिल्ली सरकार की कैबिनेट के समक्ष रखा, कैबिनेट के मंत्रियों ने, मुख्यमंत्री जी ने एक क्षण गंवाये बिना उस एक-एक मांग के ऊपर कार्य करना शुरू करा। इनको लगा कि हमारा तो ड्रामा खराब हो गया। अब हमारे को कैसे और चर्चा में बने रहना है। इन्होंने हमारी कैबिनेट को नोटंकी करार दे दिया। ये कहते हैं ना कि जो जैसा होता है उसे सामने वाला वैसा ही लगता है। ये स्वयं आये थे नोटंकी करने के लिए ड्रामा करने के लिए, ज्ञापन भर मात्र सौंपकर बाहर निकलकर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर देंगे और 4 खबरे छपवाकर आम आदमी पार्टी की सरकार को बदनाम कर देंगे, इनका ये षडयंत्र तास के पत्तों की तरह बिखर गया। जब इन्होंने देखा कि सामने सारी की सारी कैबिनेट बैठी है। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में सारे के सारे विधायक और अधिकारी वहां पर उपस्थित हैं और जो ये मांग कर रहे हैं जैसे लागू करने की मांग कर रहे हैं उस मांग को एक-एक मिनट के लिए वहां पर तुरंत कागजों पर लिखा जा रहा है और उसे लागू करने की मांग की जा रही है। हद तो उस वक्त हो गई अध्यक्ष जी जब ये बस मार्शल्स के साथ आई हुई महिला मार्शल्स के साथ बदतमीजी करने लग गए। उनको डराने लगे। धमकाने लगे और जब स्वंय मैंने इस चीज का विरोध किया तो विजेन्द्र गुप्ता जी ने मुझे एन्टी शोसल एलीमेंट कहकर संबोधित किया जोकि मेरा अपमान नहीं था, पूरे एक महिलाओं का और दलित समाज की बेटी का अपमान था कि हमारी और उंगली उठाकर हमें एन्टी शोसल एनीमल कह रहे हैं। क्यूं, क्यूं कह रहे हैं। क्यूंकि हम लोग उन

लोगों की आवाज उठा रहे हैं। हम उस गरीब तबके का जिनका चूल्हा चौका बंद हो गया है। बच्चों की शिक्षा, परवरिष में उन्हें दिक्कत आ रही है, उनकी नौकरी को बहाल करवाने के लिए इनसे वहां पर लगातार समर्थन मांग रहे हैं और जब इनकी बात नहीं मानी जा रही और इन्होंने देखा मुख्यमंत्री जी के माध्यम से, मंत्रियों के माध्यम से, विधायकों के माध्यम से चौतरफा दबाव बन रहा है तो इन्होंने आव देखा ना ताव देखा सीधा दिल्ली पुलिस को फोन घुमा दिया। वो दिल्ली पुलिस जो जरूरत पड़ने पर किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति के दरवाजे पर नहीं पहुंचती। क्राइम को रोकने में सफलता हासिल नहीं करती, लगाम नहीं लगा रही है अवैध नषे के ऊपर। वो पुलिस हाईसिक्योरिटी जौन दिल्ली सचिवालय के अंदर मुख्यमंत्री की उपस्थिति में हो रही मीटिंग में ना सिर्फ बिना परमिशन के दाखिल होते हैं, बल्कि वहां बैठे हुए एक और दलित विधायक को जोकि हमारे अंबेडकर नगर के विधायक हैं अजय दत्त को डराते हैं, धमकाते हैं और आंखें दिखाते हैं और ये सारी चुटकियां, सारा आनन्द लेते हुए दिखाई देते हैं हमारे भारतीय जानता पार्टी के हमारे ये विधायक साथी। अध्यक्ष जी ये दस हजार मार्शल्स कौन हैं। निष्चित तौर पर इनके परिवार के लोग नहीं होंगे। इनके कार्यकर्ता नहीं होंगे, इनके सगे संबंधी नहीं होंगे, लेकिन अध्यक्ष जी मैं बहुत जिम्मेदारी के साथ कहती हूँ ये दस हजार लोग आम आदमी हैं और ये आम आदमी हर दलित परिवार से आता है, हर पूर्वांचली परिवार से आता है, हर प्रवासी परिवार से आता है और इनको नफरत है, दलित विधायकों से भी और दलित प्रवासी और जो हमारे ये कॉन्ट्रैक्टर के जो कर्मचारी हैं इनसे भी। अध्यक्ष जी ना सिर्फ

उस दिन इन्होंने वहां पुलिस बुलाकर संविधान का अपमान किया, मुख्यमंत्री की उपस्थिति में हो रही मीटिंग का अपमान किया बल्कि इन्होंने इस बात उस बार फिर इस बात को साबित किया कि ये अपनी तानाशाही के आगे डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के संविधान को ना कुछ मानते हैं, ना कुछ ये समझते हैं। अध्यक्ष जी जैसे-तैसे कर कर हम लोगों ने 4 घंटे में इन लोगों को मनाया और इस बात के लिए राजी किया कि आप चलिए हमारे साथ आज ही चलते हैं एलजी हाउस में और इन बस मार्शल्स को बहाल कराने का काम करते हैं। बाहर निकलकर ये फिर भागने की फिराक में थे। कैबिनेट के मंत्री स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज जी ने पद की गरीमा को नहीं देखा। किसी चीज को नहीं देखा, उन्होंने देखी लाचारी बेबसी जरूरत दस हजार बस मार्शल्स की और सीधा पैरों में लेट गए हमारे विजेन्द्र गुप्ता नेता विपक्ष के। इनका मन वहां भी नहीं पिघला अध्यक्ष जी। ये बोले कि तुम ड्रामा कर रहे हो। हमें नहीं लगता तुम एलजी हाउस जा पाओगे। तो हमने सबने मिलकर इनको फिर ये विश्वास दिलाया कि हम राजनीति और पद से ऊपर उठकर अरविंद केजरीवालजी के नेतृत्व में इन्सानियत पर विश्वास करते हैं और वो इन्सानियत का हमने प्रमाण दिया कि इतिहास में पहली बार दिल्ली देश की राष्ट्रीय राजधानी में कोई चुना हुआ मुख्यमंत्री नेता, विपक्ष की गाड़ी में बैठकर दस हजार गरीब परिवारों की नौकरी के लिए एलजी हाउस जाने का काम करता है, लेकिन इनका मन वहां पर भी नहीं पसीजा। कभी गाड़ी को दायें रोकते, कभी गाड़ी को बायें रोकते और बार-बार ये साबित कर रहे थे कि वो दस हजार लोगों का जो रोजगार है..

(समय की घंटी)

श्रीमती राखी बिरला: इनके लिए सिर्फ और सिर्फ एक राजनैतिक हथियार है किसी पार्टी को किसी सरकार को बदनाम करने का यंत्र मात्र है। तो मैं इनको ये बताना चाहती हूँ कि दिल्ली और देश आपको देख रहा है और आपको सारी दुनिया देखे या ना देखे वो परमात्मा और वो दस हजार परिवारों का भूखा पेट हर वक्त आपको बद्दुआ दे रहा है कि इस बार आप आठ पर आये थे आने वाले 2025 में इन्हीं बस मार्शल्स की बद्दुआ आपको लगेगी और आप लोग जीरो पर सिमटोगे जीरो पर। आपको पता नहीं है अध्यक्ष जी इतनी मंहगाई है, इतनी मंहगाई में जब किसी का रोजगार जाता है और वो जब धरने प्रदर्शन पर उधार किराया ले लेकर आते हैं अध्यक्ष जी इनका मन तब भी नहीं पसीजता और ये गुटबाजी करते हैं। अलग-अलग गुटों के अंदर उनको भड़काते हैं बहलाते हैं फुसलाते हैं मैं फिर आज ये कहना चाहती हूँ जैसे हमारे मंत्री जी ने उस दिन कहा था कि आपके नेतृत्व में हम एलजी के पास चलने को तैयार हैं। सारा का सारा क्रेडिट आपको देने के लिए तैयार हैं आप उठिये और उन बेबस लाचार, बेरोजगार दस हजार बस मार्शल्स के लिए आवाज बुलंद करिये और उनको नौकरी देने का काम करिये। ये कहते हैं कि बस मार्शल्स की क्यों आवश्यकता है।..

(समय की घंटी)

श्रीमती राखी बिरलाः सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ है। सीसीटीवी कैमरा बसों की सुरक्षा कर लेगा अध्यक्ष जी घटना घटने के बाद पुलिस को सीसीटीवी फुटेज की जरूरत पड़ती है लेकिन घटना घटते वक्त उसको रोकने के लिए बस मार्शल्स की जरूरत पड़ती है और अपनी दिल्ली की बहन बेटियों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है अरविंद केजरीवालजी और उनकी सरकार इसलिए उन्होंने दस हजार बस मार्शल्स की एक फेहरिस्त में जो है भरती की थी ताकि किसी भी दिल्ली की बहन बेटी को बसों में यात्रा करते वक्त असहज महसूस ना हो। आसामाजिक तत्वों का आज जो है सामना ना करना पड़े। लेकिन अरविंद केजरीवाल करे तो क्या करे। जब केंद्र के अंदर ही बैठे हैं आसामाजिक तत्व। अरविंद केजरीवाल और उनकी सरकार करे तो क्या करे जब केंद्र के माध्यम से दिल्ली के एलजी के रूप में ही बैठे हैं महिलाओं के सम्मान को ठेस पहुंचाने वाले व्यक्ति। तो मैं आज आपके माध्यम से अध्यक्ष जी ये संदेशा केंद्र की गूंगी बहरी सरकार को और हमारे विपक्ष के साथियों को कहना चाहती हूँ कि भले ही सरकारी बसों में यात्रा करने वाली बहन बेटियां कमजोर हैं, गरीब तबके से आती है, गरीब परिवारों से आती है, लेकिन उनकी बद्दुआ आपको नेस्तो नाबूत कर देगी, खत्म कर देगी आपका दिल्ली से सूपड़ा साफ बार-बार किया है और इस बार भी आपको जीरो पर लाकर खड़ा कर देगी। इस महत्वपूर्ण विषय पर अध्यक्ष जी आपने मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, बहुत-बहुत आभार। जय हिन्द, जय भारत।

माननीय अध्यक्षः श्रीमान विजेन्द्र गुप्ता जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता (माननीय नेता-प्रतिपक्ष): आदरणीय अध्यक्ष जी, आज सदन में काफी समय से इस मुद्दे पे चर्चा चल रही है मैं सिलसिलेवार, मार्शल भाई भी इसको सुन रहे हैं ये मैसेज मुझे आ रहे हैं और टीवी पर वो देख रहे हैं सारी चर्चा को। सत्तारूढ़ दल किस तरह से गैर जिम्मेदार व्यवहार कर रहा है ये भी उन्होंने लिख के मुझे भेजा है मैं अभी पढ़के भी बताऊंगा। पूरे मसले की शुरूआत, मैं चाहूंगा कि मुख्यमंत्री जी इस पर जरूर अपना जवाब दें मेरे इस सवाल का। पहले भी इनसे कई बार कर चुका हूँ। ये केजरीवाल जी का पत्र है जिसके आधार पर 10792 मार्शल्स को हटाया गया था। 'Till it is decided, services of all Civil Defence Volunteers may be terminated at the end of October." ये 11 अक्टूबर, 2023 को लिखा था और 31 अक्टूबर, 2023 को सबको हटा दिया गया। वो जरूर बतायें कि इनको हटाया क्यो था और लगाया भी आपने ही था। उसका क्रेडिट हम नहीं ले रहे। लगाया आपने था और हटाया भी आपने था। तो ये एक बात मैं स्पष्ट कर दूं सभी मार्शल्स को कि इन्होंने ही हटाया था ये स्पष्ट है और इसका ये जवाब दें आप सुन रहे हैं सब। ये इसका जवाब दें इन्होंने क्यो हटाया था। दूसरा 26 सितंबर, 2024..

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ता: अब ये देखिए मार्शल्स को मैं कहना चाहता हूँ..

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः ये बोलने नहीं देंगे अब मुझे..

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः महेंद्र जी, प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ताः क्योंकि इनको मालूम है कि अब सच खुलेगा,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः महेंद्र जी, उत्तर देंगे न, मंत्री जी उत्तर देंगे। महेंद्र जी, मंत्री जी उत्तर देंगे।

श्री विजेंद्र गुप्ताः झूठ का पर्दाफाश होगा और सच यहां सामने आयेगा। इसलिए ये बोलने नहीं देंगे। 26 सितंबर, 2024 को दिल्ली की विधानसभा में कुलदीप जी के प्रस्ताव पर यहां शॉर्ट ड्यूरेशन डिस्कशन हुआ जिस पर मैंने भी भाग लिया और एक प्रस्ताव भी पेश किया और उस समय तक एक बार भी सत्तारूढ़ दल ने यह नहीं कहा था कि इनको रेगूलराइज करना है। भाजपा की तरफ से ये प्रस्ताव आया, हमारी तरफ से यह प्रस्ताव आया, मैंने स्वयं यह प्रस्ताव दिया कि इनकी बहाली की जाए और इनको पक्का किया जाए और यह प्रस्ताव जब हमने पेश किया तो सत्तारूढ़ दल की मजबूरी हो गई कि वो जो एक घिनौना खेल इन मार्शल्स के साथ खेल रहे हैं, उनको राजनीति की अपनी एक गोटी बनाकर उनका इस्तेमाल कर रहे हैं, ये तो हम एक्सपोज हो जाएंगे और इन्होंने हमारे प्रस्ताव को, ये प्रस्ताव तो ये खुद

भी ला सकते थे, ये क्यों नहीं लाए? हमारे प्रस्ताव को इन्होंने हड़बड़ाहट में स्वीकार कर लिया और पारित कर दिया उसके लिए इनका धन्यवाद। उसके बाद 8-9 दिन बीत गये जब कोई कार्रवाई नहीं हुई तो मार्शल्स को कहना चाहूंगा 5 अक्टूबर को, मैंने 4 अक्टूबर को मुख्यमंत्री जी को पत्र लिखकर समय मांगा कि हमको आपसे मिलना है भाजपा के विधायकों को और इस बारे में चर्चा करनी है कि अब जो प्रस्ताव पारित हुआ है इस पर आगे कैसे बढ़ना है। हम एक मैमोरेंडम भी लेकर गये। हमने मुख्यमंत्री से समय लिया था देश में कहीं नहीं ऐसा होता कि मुख्यमंत्री से समय लो और वहां पर तमाम लोग जो विधायक हैं, नहीं हैं, भीड़ इक्ट्ठी कर ली जाए और वहां भीड़ इक्ट्ठी कर ली गई, हमारे ऊपर हमला किया गया और..

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः ये देखिये ये बोलने नहीं देंगे ये। अध्यक्ष जी,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई राखी जी.

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः ये मार्शल्स को कभी चाहते ही नहीं है उनकी नौकरी लगे।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मंत्री जी उत्तर देंगे। प्लीज।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः इसलिए उनके साथ लगातार धोखा कर रहे हैं, धोखा करते रहेंगे।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं ऐसे नहीं प्लीज बैठिये, प्लीज बैठिये प्लीज।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः तो ये इसलिए सच जैसे ही सामने आएगा ये ऐसे ही नाचेंगे, ये ऐसे ही शोर मचाएंगे जैसे उस दिन मचाया था।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अभय जी।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः क्योंकि ये जिस तरह से मैं पूरे मामले को खोलूंगा परत-दर-परत इनकी सच्चाई आपके सामने लाउंगा।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः राखी जी बैठिये-बैठिये प्लीज।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः और ये एक और..

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई मैं रोक रहा हूं न उनको।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः ये मैसेज आ गया,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः राखी जी,

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः ये मार्शल्स के लीडर का मैसेज आया है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः ठीक है मैंने नोट कर लिया प्लीज,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बैठिये मैंने नोट कर लिया।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं कर लूंगा न आप इनको बोलने तो दो।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, ये बस मार्शल्स के नेता का मैसेज आया है विधानसभा में आम आदमी पार्टी के नेता गंदी राजनीति कर रहे हैं,

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः सभी बस मार्शल्स टीवी पर देख रहे हैं ये मैसेज आया है मेरे पास।

माननीय अध्यक्षः आप बोल लीजिए, बोलिए ठीक है।

श्री विजेंद्र गुप्ताः तो ये गंदी राजनीति वो लोग समझ रहे हैं.. कि उनके साथ कैसे गंदी राजनीति की जा रही है। 5 अक्टूबर को जब हम वहां गये तो हम हैरान रह गये। हमने एक मेमोरेंडम लाए थे, बात करना चाहते थे, उसका हल चाहते थे लेकिन इन्होंने वहां पर दब के अराजकता की, नौटंकी की और जैसा अभय जी ने बिलकुल ठीक कहा रूलिंग पार्टी हैं आप, सत्तारूढ़ दल हैं, सरकार हैं और आप वहां पर विपक्ष से कह रहे हैं, बड़ी हैरानी की बात थी। उसके बाद मुख्यमंत्री जी यहां बैठी हैं ये भी स्पष्ट करें जरूर। मैं इनके साथ, वैसे तो ये मेरी गाड़ी में बैठी थीं चलिए महिला हैं मैं क्या कह सकता हूं उनको अपने डेकोरम का ध्यान रखना चाहिए था, प्रोटोकोल का ध्यान रखना चाहिए वो मुख्यमंत्री हैं हम उनका पूरा सम्मान करते हैं, सम्मान करते

रहेंगे जब तक वो मुख्यमंत्री हैं उसके बाद भी उनका सम्मान करेंगे वो सदस्य रहें न रहें, मुख्यमंत्री रहें न रहें क्योंकि वो बहुत मैं उनको मानता हूं वो बहुत अच्छी महिला हैं और इसलिए हम उनका सम्मान करते रहेंगे। अब वहां जब हम गये तो इनोसेंटली मुख्यमंत्री जी ने एक प्रस्ताव रखा बैठक में। उस बैठक में मैं मौजूद था और मुख्यमंत्री जी मौजूद थी और उपराज्यपाल महोदय भी मौजूद थे और उनके जो सेक्रेटरी हैं और उनका जो एडवाइजर हैं जो भी लोग थे अधिकारी भी वहां मौजूद थे, तो मुख्यमंत्री जी ने एक प्रस्ताव रखा कि मैं चाहती हूं कि एक कमेटी बनाई जाए और वो कमेटी रोडमैप बनाएगी रूट तैयार करे कि इनको पक्का कैसे किया जा सकता है। मुझे बहुत अच्छा लगा, मैंने तुरंत आपका समर्थन किया। फिर वहां ये भी बात आई की कमेटी में कौन-कौन होगा। तो ये तय हुआ कि 3 विभाग होंगे क्योंकि टैक्नीकल विषय है आरआर बनेंगे, जॉब क्रिएट की जाएंगी, रिक्रूटमेंट रूल्स बनेंगे, रिजर्वेशन का ध्यान रखा जाएगा जो अभी नहीं है, ये भी बड़ी, मैं कहूंगा ये दलित विरोधी सरकार जिसने एक भी मार्शल को जबकि पूरे देश में रिजर्वेशन है लेकिन यहां पर बिना उनको कोई रिजर्वेशन नहीं दी 10792 में से 1 भी मार्शल को इसलिए भर्ती नहीं किया गया कि वो अनुसूचित जाति वर्ग से आता है जो उनका हक था। फिर खैर जब ये सारी बात हो गई,..

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः अब उसके बाद वहां से बाहर आए मैंने मीडिया को बताया भी कि बात हो गई है, मुख्यमंत्री जी ने जो प्रस्ताव

रखा है उसको सबने मान लिया है। 24 अक्टूबर को जो बात उस दिन 5 अक्टूबर को हुई थी जब कोई सरकार ने कार्रवाई नहीं की,तो 24 अक्टूबर को उप-राज्यपाल महोदय ने एक पत्र जारी किया, एक आदेश निकाला और उसमें कहा गया कि भई ये सभी बस मार्शल्स को पक्का करने के लिए मैं तैयार हूं और जैसा विपक्ष के नेता भी आपके साथ थे तो आप इसकी प्रक्रिया प्रारंभ कीजिए और उसके दस्तावेज तैयार कीजिए और तब तक ये बेरोजगार न रहें, दिल्ली में पोल्यूशन बहुत ज्यादा है और इस पोल्यूशन की स्थिति से निपटने के लिए हमें लगता है कि ये 10792 मार्शल जो हैं हमें इनका उपयोग करना चाहिए सिविल डिफेंस वालियेंटर्स के रूप में क्योंकि इनकी भर्ती सिविल डिफेंस वालियेंटर्स के रूप में हुई थी तो ये सीडीवीज को जो है तब तक के लिए आप इतने प्रक्रिया पूरी होगी ये जॉब में परमानेंटली आएंगे, तब तक आप इनको 4 महीने के लिए 1 नवंबर से इनकी जॉब शुरु कर दीजिए। मुझे बड़ी खुशी हुई मुख्यमंत्री जी को भी बड़ी खुशी हुई, इन्होंने तुरंत प्रेस काफ्रेंस की और प्रेस कांफ्रेंस करके क्रेडिट खुद लिया कोई बात नहीं अपनी पीठ थपथपाई हमने मार्शल्स से जो कहा हमने कर दिया एक बार ये नहीं कहा कि विपक्ष के नेता ने भी हमारी मदद की, उप-राज्यपाल महोदय ने हमें आदेश दे दिये हैं, कुछ नहीं सिर्फ अपना क्रेडिट लेती रहीं, पूरा, हमने ऐसे कर दिया, हमने ऐसे कर दिया। फिर इन्होंने मार्शल्स को बुलाया और उनसे मिठाई भी खाई, उनको बधाई भी दी, उन्होंने इनका धन्यवाद भी करा। देखिये आप, इन्होंने पूरा तो हमें लगा कि चलिए हमारे प्रयास से 10792 मार्शल जो हैं उनको

पक्का करने का प्रोसेस भी शुरु हो जाएगा और मीनव्हाइल उनको जॉब भी मिल जाएगी। फिर 1 नवंबर आ गया कोई एडवरटाइजमेंट नहीं आया, कोई किसी प्रकार की कोई जानकारी नहीं आई, उनकी भर्तियां शुरु नहीं की गई। 3 तारीख हो गई, 4 तारीख हो गई फिर 3 तारीख को कहा कि अब हम इनको कर रहे हैं, हम जल्दी पूरा कर लेंगे प्रक्रिया। तो हमने कहा भई बात तो 24 तारीख से चल रही है अभी तक इन्होंने शुरु ही नहीं किया, एडवरटाइज तक नहीं कर रहे, बस बार-बार प्रेस कांफ्रेंस कर रहे हैं और बार-बार कह रहे हैं। करते-करते 2 हफ्ते, 3 हफ्ते निकल गये फिर जाकर एडवरटाइजमेंट आया। उस आदेश के, उस पत्र में जो आदेश था एलजी का पार्टली तो मान लिया वो भी एक महीना, उनकी एक महीने के सेलरी मिल जाती उन्हें, पार्टली मान लिया लेकिन जो असली मुद्दा था पक्का करने का वो काम शुरु ही नहीं किया और फिर उसके बाद अचानक मार्शल्स को फिर गुमराह करना शुरु कर दिया गया और मार्शल्स को एक भी स्टैप आज तक इन्होंने, मैं फिर मुख्यमंत्री जी से कहूंगा इसका भी जवाब जरूर दें कि जो प्रस्ताव आपने वहां रखा जिसको उप-राज्यपाल ने उसकी स्वीकृति दे दी लिखकर के आपको भेज दिया कि आप मेरे पास दस्तावेज भेजिये तैयारी करके मैं, क्योंकि फाईल तो सरकार ही बनाएगी न और जब उप-राज्यपाल महोदय मुख्यमंत्री जी को कह रहे हैं और अधिकार दे रहे हैं कि जिस विभाग से भी संबंधित है आप करिये और मैं इनको कह रहा हूं मैं ओन करता हूं, तो क्यों नहीं शुरु किया आपने ये प्रोसेस, प्रोसेस क्यों नहीं शुरु हुआ, कमेटी क्यों नहीं बनाई, रूल्स

क्यों नहीं बनाए, जॉब क्रिएट क्यों नहीं की, क्यों नहीं जॉब क्रिएट करना चाहते आप? मैं मार्शल्स को कहना चाहूंगा, फिर कहना चाहूंगा कि इनके घड़ियाली आंसूओं से बाहर आईये और इनको कहिये कि ये प्रक्रिया शुरु करें। प्रक्रिया में कहीं भी अड़चन आती है तब कुछ कहें तो हमें भी समझ में आएगी बात लेकिन आप प्रक्रिया ही शुरु नहीं करना चाहते जबकि उप-राज्यपाल महोदय ने आपको सारे अधिकार दे दिये। आप सिर्फ इनको गुमराह करना चाहते हैं, इनको इस्तेमाल करना चाहते हैं अपने स्वार्थ के लिये और इनको क्योंकि भारतीय जनता पार्टी को क्रेडिट मिल जाएगा, केन्द्र सरकार को क्रेडिट मिल जाएगा तो इसलिए आप क्योंकि उप-राज्यपाल जी ने लिखकर दे दिया तो इसलिए हम प्रक्रिया शुरु.. मैं मार्शल्स को कहना चाहता हूं सदन के माध्यम से आप सभी सदस्य यहां बैठे हैं, दुनियां का कौन सा ऐसा तरीका है आप मुझे बताईये कि जिसको फाइनल अथॉरिटी जिसको मंजूरी देनी है वो फाइल बनाएगा। कभी उप-राज्यपाल फाइल बनाते हैं आज तक कितनी फाइल उप-राज्यपाल ने बनाई हैं जरा हमें बता दीजिए। हर फाइल सरकार से ही जाती है, किसी विभाग से ही जाती है। हर काम विभाग के माध्यम से ही शुरु होता है और उसकी प्रक्रिया, उसका तरीका, उसके कानून आपको 10792 पोस्ट क्रिएट करनी हैं। जब तक पोस्ट क्रिएट नहीं करेंगे वो पक्के कैसे होंगे। उसका अधिकार जब मुख्यमंत्री को दे दिया, लगाये आपने, हटाये आपने, अब भी तो आप ही लगा रहे हैं, एडवरटाइजमेंट भी तो आपने ही दिया था किसी और ने दिया है क्या? उनको सिविल डिफेंस वॉलियेंटर्स के लिये 4 महीने

के लिए लगाने का एडवरटाइजमेंट किसने दिया? आपके आदेश से ही हुआ है। डिले हुआ है तो आपकी वजह से हुआ है। उप-राज्यपाल महोदय ने तो 24 तारीख को जो कहना था कह दिया, लिखकर दे दिया उसके बाद तो सारी कार्रवाई आपको करनी है लेकिन नौटंकी कर रहे हैं, पैर पकड़ रहे हैं दिल्ली की जनता देख रही है, अब इस सरकार का कोई भविष्य नहीं है। ये तालाब का गंदा पानी है सड़ गया है अब ये अब इसको बदलने की जरूरत है क्योंकि ये लोग भ्रष्टाचार पर विश्वास करते हैं लोक कल्याण पर विश्वास नहीं करते हैं ये साफ दिखाई दे रहा है।xxxxx[12]

(समय घंटी)

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxx[12]

माननीय अध्यक्ष: *विजेन्द्र जी, ये..*

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxx[12]

माननीय अध्यक्ष: ये विजेन्द्र गुप्ता जी जो बोल रहे हैं ये हटा दिया जाए, डिलीट कर दिया जाए।

श्री विजेंद्र गुप्ता: ये हटा दिया जाए क्योंकि ये सच है, सच है इसलिए हटा दिया जाए।

---

[12] xxxx चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

माननीय अध्यक्षः ये डिलीट कर दिया जाए जो भी अब बोल रहे हैं, जो भी अब बोल रहे हैं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxx[12]

माननीय अध्यक्षः सदन की कार्यवाही लंच के लिए स्थगित की जाती है 2.00 बजे पुनः मिलेंगे।

(सदन की कार्यवाही अपराह्न 2.00 बजे तक के लिए स्थगित की गई)

सदन अपराह्न 02.10 बजे पुनः समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

माननीय अध्यक्षः बैठिये-बैठिये, माननीय मंत्री श्री सौरभ भारद्वाज जी सुबह से चल रही चर्चा का उत्तर देंगे।

माननीय मंत्री (श्री सौरभ भारद्वाज): अध्यक्ष जी, बहुत-बहुत धन्यवाद कि आज सदन के अंदर हमारे 10 हजार से ज्यादा बस मार्शलों के विषय में चर्चा की जा रही है। ये चर्चा सदन में कई बार हो चुकी है। कई बार इसको लेकर सदन के अंदर रिजोल्यूशन पास हो चुके हैं। बार-बार सदन की तरफ से यह कहा गया कि इन बस मार्शलों को वापस लिया जाए। पिछली दफा जब रिजोल्यूशन रखा गया एक बार कुलदीप कुमार जी द्वारा रखा गया है, एक बार दिलीप पाण्डेय जी द्वारा

---

[12] xxxx चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

रखा गया है सब में कहा गया कि इनको वापस ले लिया जाए। दिलीप पाण्डेय जी की तरफ से 29 फरवरी, 2024 में यह प्रस्ताव रखा गया। सभी सिविल मार्शल्स, सिविल डिफेंस वॉलियेंटर्स को बस मार्शल के रूप में बहाल किया जाए ये मुख्य मांग जो है हमारी रही है। अब 26 सितंबर, 2024 को विजेन्द्र गुप्ता जी एक नया प्रस्ताव लेकर आए मैं यह बात मानता हूं। इन्होंने कहा की नहीं ये बहाल नहीं किया जाए इनको रेग्यूलराइज किया जाए, ये कहानी में नया ट्विस्ट विजेन्द्र गुप्ता जी लाए और उसके बाद हमने इसी सदन में लाइन जुड़वाई की हम इसके लिए तैयार हैं मगर ये होगा तब जब चुनी हुई सरकार और लगाए हुए उप-राज्यपाल एक साथ बैठकर कोई फैसला करें वर्ना ये बस मार्शल फुटबाल की तरह इधर से उधर, इधर से उधर फैंके जाएंगे यही चर्चा हुई न और तब श्राद्ध चल रहे थे 26 सितंबर का श्राद्ध था। मैंने ये कहा कि पहला नवरात्र जो है वो 3 अक्टूबर का है पहले नवरात्रे के दिन शुभ अवसर पर सारा सदन, सारे आम आदमी पार्टी के विधायक, सारे भारतीय जनता पार्टी के विधायक, सारे मंत्री और मुख्यमंत्री एलजी साहब के यहां जाएंगे। यहां तक कहा गया रिजोल्यूशन के अंदर ये सरकार वचनबद्ध है जिस कागज पर कहेंगे एलजी साहब, जिस डाक्यूमेंट पर कहेंगे, जिस फाइल पर कहेंगे उस पर ये सरकार साइन करके आएगी यहां तक का वचन जो है इस हाउस में चुनी हुई सरकार ने दिया वो रिजोल्यूशन पास हुआ और जब 3 तारीख को, 3 अक्टूबर को वहां जाने की बात हुई तो वो सारे के सारे बस मार्शल वहां पर इक्ट्ठे हो गये एलजी साहब के घर के सामने। वहां मैं, मेरे साथ कई अन्य

मंत्री, कई सारे विधायक साथी भी गये। वहां से विजेन्द्र गुप्ता जी को फोन किये गये बस मार्शलों द्वारा क्योंकि बस मार्शलों में कुछ लोग जो हैं वो आम आदमी पार्टी से थोड़ा सिंपेथाइज रखते हैं, कुछ लोग भारतीय जनता पार्टी से रखते हैं। मैंने माइक पर बोला कि भई जो इनके लोग हैं जो इनको मानते हैं वो इनको फोन करें। उन लोगों ने इनको फोन किये, इन्होंने कहीं बोला कि मैं छत्रपुर में हूं या मांडी में हूं कहीं पर हूं और उन्होंने बोला कि वो तो वहां हैं तो मैंने कहा तो वो तो दिल्ली में ही हैं आज जाएं हम बैठे हैं। फिर थोड़ी देर बाद इनका वीडियो अपने घर से रिलीज हुआ तो उन्होंने बोला अरे ये तो गलत बता रहे थे ये तो अपने घर में ही हैं। खैर हमने इनका रातभर इंतजार किया और रात को पुलिस ने वहां की लाइटें बंद करी और हमारे मंत्रियों को, विधायकों को पुलिस ने सड़कों पर घसीटकर जो है, हां,.. वाशरूम, साथ में अस्पताल था अस्पताल के अंदर जो पानी था पी रहे थे क्योंकि गर्मी थी, तो वो भी बंद किया। जो वाशरूम महिलाएं यूज कर रही थी टॉयलेट उसको भी लॉक कर दिया गया कि भई ये लोग यहां से जाएं, ये सब पुलिस द्वारा किया जा रहा था और फिर कुल मिलाकर उन्होंने हमें घसीटकर बसों में भरकर जो है हमें आई थिंक बुराड़ी थाने वो ले गये। भारतीय जनता पार्टी से कोई नहीं आया ये बात है 3 अक्टूबर की। 4 अक्टूबर को बस मार्शलों में बहुत थू-थू हुई कि भई इन्होंने वादा करके सदन के अंदर रिजोल्यूशन पास करके जो है ये पीछे हट गये, यूटर्न ले लिया। अब आनन-फानन में इन्होंने मुख्यमंत्री को चिट्ठी लिख दी, मुख्यमंत्री महोदया को कि जी मैं इसके

बारे में चर्चा करने आना चाहता हूं और मुख्यमंत्री जी ने कहा आओ इसमें क्या बुरी बात है। ये अपने सारे विधायकों को साथ लेकर आए, हम अपने सारे मंत्रीमंडल आई थिंक दो-तीन मंत्री कम थे और हम हमारे कुछ विधायक। उसकी एक लंबी चर्चा हुई अध्यक्ष जी और पूरी की पूरी चर्चा वीडियो रिकार्डेड है हमारे पास। हम इलेक्शन का इंतजार कर रहे हैं जब इलेक्शन आएगा तो वो जो वीडियो है मैं रील बना-बनाकर इंस्टाग्राम पर डालूंगा वो सब है हमारे पास। क्या चर्चा हुई, कैसे विजेन्द्र गुप्ता जी ने शुरुआत की उनकी हर बात को माना गया। मैंने अपने विधायक साथियों को जो मेरे बराबर प्रोटोकोल के लोग हैं कुलदीप हुए, ॠतुराज हुए कई लोगों को मैंने डांटा अध्यक्ष जी, प्रवीण तक को डांटा मैंने कि भई तुम चुप रहो, तुम बदतमीजी बिलकुल, बिलकुल कुछ मत बोलो क्योंकि हमें ये डर था विजेन्द्र गुप्ता जी जैसे ही वहां पर आये उनको लगा कि यहां से भागो और मैं अपने विधायकों को बार-बार समझा रहा था ये आदमी भागना चाह रहा है इसको तुम मौका मत दो भागने का, इसको अब यहां पर रोककर रखो और ये जो कहे वो करो। मैंने कई लोगों को बोला, ॠतुराज जी को भी बोला इनको भी लगा होगा यार ये क्यों मेरे को ऐसा बोल रहा है, अजय दत्त जी को भी बोला था मैंने कि यार तू बिलकुल बहस मत कर इनसे ये बहस का बहाना बनाकर भाग जाएंगे, जो बोल रहे हैं न चटकनी लगा दी। अब अध्यक्ष जी ये बताओ इनके साथ हम ऐसा क्या कर देंगे जो हम चटकनी लगाएंगे, ये तो बड़ी अजीब बात है। मतलब अध्यक्ष जी, ये क्या बात हुई। तो अध्यक्ष जी इन्होंने कई बार, अच्छा इनके खुद के साथियों के बयान में यह बात साबित हो गई कि हमें

टॉयलेट भी नहीं जाने दे रहे थे, भई क्यों नहीं जाने दे रहे थे टॉयलेट, टॉयलेट के लिए कोई रोक सकता है। आप भागने की कोशिश कर रहे थे और जब आपने बोला नहीं मेरे को टॉयलेट जाना है तो हमने कहा किदो आदमी साथ जाएंगे इनके, अंदर तक नहीं जाएंगे टॉयलेट के बाहर तक गए। कोई हमने..

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः इसी को गुंडागर्दी कहते हैं।

माननीय मंत्रीः अच्छा सुनिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः चलिये ठीक है-ठीक है-ठीक है।

...व्यवधान...

माननीय मंत्रीः वो सब कुछ वीडियो रिकार्डेड है।

...व्यवधान...

माननीय मंत्रीः सब कुछ वीडियो रिकार्डेड है और अध्यक्ष जी.

...व्यवधान...

माननीय मंत्रीः हां,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई अभय जी आप बैठिये प्लीज, बैठिये।

माननीय मंत्रीः अब अध्यक्ष जी, एक बात बताईये, इसका मतलब ये बात साफ हो गई न कि वहां ये चर्चा से भागना चाह रहे थे क्योंकि ये फंस गये थे, क्योंकि हमारे पास वीडियो रिकार्डेड है। इनकी तरफ कोई हिंसा नहीं हुई, कुछ नहीं हुई पूरी बातचीत हो रही थी। तो अब क्या हुआ कि विजेन्द्र गुप्ता जी ने..

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई विजेन्द्र जी अब ये बात ठीक नहीं है। जब आप बोलते हैं तो बाकी लोग बोलते हैं तो परेशानी होती है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं रोक रहा हूं, हां ठीक है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आप भी तो कह रहे थे।

श्री विजेंद्र गुप्ताः आपका सम्मान है आप..

माननीय अध्यक्षः नहीं आप भी कह रहे थे बहुत।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं, बैठिये, प्लीज।

माननीय मंत्रीः तो सर इनके जो नेता उस वक्त सबसे बड़े थे उन्होंने छुपकर पुलिस को फोन कर दिया। अब पुलिस के डीसीपी आ गये, एसीपी आ गये, एसएचओ आ गये और वो मुस्करा रहे हैं कि जी यहां पर किसने कॉल किया। गुप्ता जी कहे किसने किया-किसने किया? अरे तुमने ही तो किया और किसने किया और फिर अजय दत्त जी ने पुछा कि भई तुम कैसे आ गये अंदर पुलिस वालों का क्या काम है यहां पर, सारे के सारे मंत्री हैं।

...व्यवधान...

माननीय मंत्रीः तो ये जो हैं, अगर बातचीत चल रही होती तो तुम्हें यहां बताने की क्या जरूरत है। अगर बातचीत चलती है तो वो चुपचाप चलती है, तुम खुद ही बता रहे हो बातचीत चल रही है। ऐसे नहीं चलती बातचीत। तो इन्होंने चुपचाप फोन भी किया और ये जितने बस मार्शल वहां पर बैठे हुए थे अध्यक्ष जी वहां पर करीब 10-15 बस मार्शल बैठे थे उन सबने प्रत्यक्ष तौर पर देखा कि इनका वहां पर क्या जो है पूरा का पूरा जो है कंडक्ट था और बड़ी मुश्किल से इनको हमने कहा कि तुम बोलो क्या बोलना चाहते हो। इन्होंने बोला आपकी जो कैबिनेट है वो फैसला कर दे एलजी साहब तुरंत मान जाएंगे और मैं एलजी साहब से उसके ऊपर साइन कराउंगा यही बात थी, हमारे पास रिकार्डेड है। बॉटम लाइन ये थी आपकी कैबिनेट ये कह दे कि बस मार्शल्स को वापस लिया जाए और उसके ऊपर मैं जाकर एलजी साहब से साइन कराउंगा ये बॉटम लाइन थी अध्यक्ष जी, हमारे पास

रिकार्डेड है, और ये इसलिए थी क्योंकि एलजी साहब हमारे कहने से तो साइन नहीं करेंगे। अब ये बार-बार कह रहे हैं जी विपक्ष से क्यों करा रहे हो, विपक्ष से नहीं करा रहे हम। आप सेंट्रल गवर्नमेंट की सत्तापक्ष हो, आपको उस नाते हम कह रहे हैं कि एलजी आपके लगाये हुए हैं एलजी वो करेंगे जो आपका आदेशा होगा। ये वाली जो चुनी हुई सरकार है ये वो करेगी जो इस हाउस का आदेश होगा। हम इस हाउस के प्रति जवाबदेह हैं, ये हाउस जनता के प्रति जवाबदेह है तो जनता इनसे कुछ भी करा सकती है और ये हमसे कुछ भी करा सकते हैं मगर जनता न तो एलजी से कुछ करा सकती है न इनसे कुछ करा सकती है। तो इसीलिए हमने कहा एलजी साहब से साइन कराने की जिम्मेदारी आपकी, कैबिनेट से पास कराने की जिम्मेदारी हम सबकी। अध्यक्ष जी, वहीं पर तुरंत सारे लोगों को बुलाया गया, कैबिनेट की मीटिंग के अंदर सारे मंत्रियों ने हूबहू जो रिजोल्यूशन, हमने तो लाइन भी नहीं जोड़ी। हमने ये कहा, हमने अध्यक्ष जी ये कहा कि जो विजेन्द्र गुप्ता जी का रिजोल्यूशन है 26 सितंबर, 2024 का, वो हम मानते हैं और उसको क्रियान्वित कर दिया जाए हम इसको जो है अपनी तरफ से प्रपोज करते हैं सारे मंत्रियों ने उस पर साइन कर दिये। अब अध्यक्ष जी आगे क्या होना था, होना तो यह चाहिए था ये कहते कि चलो भई मेरे साथ चलो मैं अभी साइन कराकर लेकर आता हूं। यही होना चाहिए न, जब बात हुई कि आज ही होगा, अब ये वहां से भाग रहे हैं ये भी वीडियो में है। ये अपनी कार से तीन बार उतर गये, अपनी कार से। जब हमने इनके पैर पकड़े कि भई अब तुम चलो, तब ये हमारे

साथ चलने के लिए तैयार हुए। हमें डर था कि ये रास्ते से भाग जाएंगे इसलिए मुख्यमंत्री महोदया को बोला गया कि आप इनकी कार में बैठो। कार में तो हमने कुलदीप को भी बिठाया था, इन्होंने कुलदीप को उतार दिया। हमने कहा ये दलितों को कहां बिठाएंगे अपनी गाड़ी में ठीक है, कोई बात नहीं, आपने एक दलित को उतार दिया, उतार दिया,

...व्यवधान...

माननीय मंत्री: उतारा तो है, नहीं

...व्यवधान...

माननीय मंत्री: क्योंकि तुममे है ही नहीं कोई, तुममें हो तो कोई बताओ साथ में। तो अध्यक्ष जी बड़ी मुश्किल से ये तैयार हुए और ये वीडियो रिकार्डेड है मैं तो ट्वीटर पर लाइव चला रहा था। 4 हजार लोग लाइव देख रहे थे गुप्ता जी को, मुझे नहीं देख रहे थे इन्हें लाइव देख रहे थे क्योंकि इनकी गाड़ी के पीछे-पीछे मैं अपना लाइव चला रहा था इन्होंने वहां जो महात्मा गांधी की समाधि आती है जहां पर कोई यूटर्न लेने की जगह नहीं है वहां पर इन्होंने मतलब वन साइड वाली रोड पर इन्होंने गाड़ी लेकर यूटर्न लेने के चक्कर में थे ये और मैंने इनकी गाड़ी रुकवाई मैंने कहा ये क्या कर रहे हो गुप्ता जी वहां जाना है एलजी साहब के यहां। इनको फिर दोबारा जो है कैमरे की वजह से ये वापस बैठे मेरी वजह से नहीं बैठे क्योंकि 4 हजार लोग इनको देख रहे थे उस वक्त लाइव ट्वीटर पर और देशभर के लोग इन्हें देख रहे

थे और फिर ये बड़ी मुश्किल से मुख्यमंत्री महोदया को लेकर एलजी साहब के घर में घुसे और तुरंत दरवाजे सारे के सारे बंद कर दिये गये कि कोई और आदमी इसमें न घुस सके। इसके पीछे क्या साजिश थी वो लोग ये जानते हैं। हम सब लोग बाहर थे, हमने कई मैसेज दिये, सबकुछ किया कि भई हमें अंदर लो हम भी तो मीटिंग के हिस्से थे, इन्होंने हमको अंदर नहीं जाने दिया। बहरहाल जब ये उस मीटिंग से बाहर आये तो इन्होंने कहा कि हमारा प्रपोजल एलजी साहब ने मान लिया है और एक हफ्ते के अंदर–अंदर सारे के सारे बस मार्शल वापस बहाल होंगे ये इन्होंने कहा है पीटीआई पर, इनका रिकार्डेड है वो इनका वीडियो। उस वक्त इनको जिन बस मार्शलों ने रोका कि भई आप हमें बताकर तो जाओ अंदर क्या मीटिंग हुई। जिन लड़कियों ने इनके पैर पकड़े, उन लड़कियों को इन्होंने जूते से मारा, इन्होंने लात मारी उन लड़कियों को। इनके जाने के बाद..

...व्यवधान...

श्री ओमप्रकाश शर्माः नहीं एफआईआर लिखवाई?

माननीय मंत्रीः हां लिखवाई,

श्री ओमप्रकाश शर्माः लिखवाई?

माननीय मंत्रीः हां लिखवाई। उसके जाने के बाद वो लड़कियां वहीं पर एलजी हाउस के सामने आसूंओं से रोई। वहीं पर मैंने एसएचओ साहब को बुलाया जो वहां के सिविल लाइंस के एसएचओ थे और मैंने

कहा कि ये देखिये विजेन्द्र गुप्ता जी ने और एक पुलिस वाले ने इनको लातें मारी हैं, आप इनकी कंप्लेंट दर्ज कीजिये, इनकी एमएलसी कराईये ये सब वीडियों पर है और उनको बड़ी मुश्किल से पुलिस जो है हास्पिटल में ले गई। उसके विपरीत गुप्ता जी की तरफ से 2 एफआईआर हमारे लोगों पर दर्ज करा दी गई और बस मार्शलों पर दर्ज करा दी गई, एक आईपी एक्सटेंशन थाने में और एक सिविल लाइंस थाने में, बस मार्शलों पर कि मेरे को बस मार्शलों ने पीटा, इन्होंने बस मार्शलों पर करा दी, लिखा हुआ है उस पर, एफआईआर की कापी है मेरे पास, एफआईआर की कापी है। अध्यक्ष जी, जिसका मन साफ होता है वो इस तरह के काम नहीं करता। अब इन्होंने कई बार ये बात बोली कि भई बस मार्शलों को लगाया भी इन्होंने और हटाया भी इन्होंने। इन्होंने ये बात दो-तीन बार बोली कि बस मार्शलों को लगाया भी चुनी हुई सरकार ने, हटाया भी चुनी हुई सरकार ने। कोई भी आदमी जो थोड़ी भी राजनीति समझता है, थोड़ी भी जो समझता है वो ये बात समझता है और ये बस मार्शल भी ये बात समझते हैं जिन बस मार्शलों को लगाने के लिए सरकार ने बार-बार आर्डर दिये और सरकार के आर्डर्स की वजह से करीब 10 हजार मार्शल लगाये गये उनको वो चुनी हुई सरकार क्यों हटाएगी? ये तो वो हटायेगा जिसके पेट में दर्द है कि ये क्यों लगे हुए हैं। दूसरी बात ये जो है ये सिर्फ बस मार्शल्स के साथ नहीं हुआ है अध्यक्ष जी ये सिलसिला पिछले दो साल से लगातार चल रहा है। सबसे पहली बात जो करीब सारे एमएलऐज के पास और इस विधानसभा के अंदर डीआरसी फेलोज थे, भारतीय जनता पार्टी के लोगों

के पास भी डीआरसी के फेलो थे जो इस विधानसभा ने हर विधायक को एक-एक, दो-दो लोग और विधानसभा की कमेटियों के अंदर दो-दो, तीन-तीन नौजवान बच्चे दिये थे कि वो विधायकों का भी काम करें, विधानसभा की कमेटियों का भी काम करें। उन सबको लगाया चुनी हुई सरकार ने, हटाया भारतीय जनता पार्टी के एलजी ने ये ऑन रिकार्ड है। उसके बाद जो चीफ मिनिस्टर अरबन लीडरशिप फैलो थे वो भी सैंकड़ों थे, अलग अलग मंत्रालयों में, अलग अलग कारपोरेशंस में काम करते थे, उनको भी आईआईटी, आईआईएम्स, पीआईएसएस बड़े बड़े इंस्टीट्यूट से, बाहर की युनिवर्सिटी से पढ़ के आये हुए लड़के लड़कियों को लगाया अरविंद केजरीवाल की सरकार ने, हटाया भारतीय जनता पार्टी के एलजी ने। उसके बाद सरकारी अस्पतालों की ओपीडी के कार्ड बनाने वाले गरीब बच्चे, आप जब किसी अस्पताल में जाते हैं सबसे पहले ओपीडी का कार्ड बनाता है एक बच्चा कंप्यूटर पे बैठे के जिसको डेटा एंट्री ऑपरेटर कहते हैं, सालों से वो बच्चे कार्ड बनाते थे और मरीजों के ओपीडी कार्ड फटाफट बनते थे, उनको लगाया अरविंद केजरीवाल की सरकार ने, हटाया भारतीय जनता पार्टी के एलजी ने। उसके बाद स्वीपर-कम-चौकीदार हजारों बच्चे, हैल्थ डिपार्टमेंट के अंदर लगाये गये, डेली वेज पे लगे हुए थे, गरीब बच्चे सर और दो काम करते थे वो एक तनख्वाह के अंदर स्वीपर भी थे और चौकीदार भी थे, डिस्पेंसरियों में, अस्पतालों में वो जब डॉक्टर आता था तो साफ सफाई भी करते थे और उस डिस्पेंसरी की चौकीदारी भी करते थे स्वीपर कम चौकीदार डेली वेज पे बच्चे लगे हुए थे 15-16 हजार रूपये मिलते थे, लगाया

अरविंद केजरीवाल की सरकार ने, हटाया भारतीय जनता पार्टी के एलजी ने। उसके बाद एलएनजेपी के अंदर अध्यक्ष जी कोरोना के समय में करीब ढाई सौ बच्चों को कोरोना के समय में, कोरोना के समय में जब कोई घर से बाहर नहीं निकलता था वो गरीब मां बाप के इस दिल्ली के गरीब बच्चे जिनको नर्सिंग ऑर्डली लगाया गया था क्यूंकि अस्पतालों के अंदर कोई ईलाज करने वाला नहीं था, मरीजों की देखभाल करने वाला नहीं था उन्होंने पूरे कोरोना में सब काम किया, जान की बाजी लगाई, लगाया अरविंद केजरीवाल की सरकार ने, हटाया भारतीय जनता पार्टी के एलजी ने। उसके अलावा अध्यक्ष जी जिस डिपार्टमेंट में देख लो लाखों लोगों को इन्होंने नौकरी से हटाया, लाखों लोगों को। जिन जिन को अरविंद केजरीवाल जी की सरकार में छोटी छोटी, छोटी छोटी नौकरियां मिली थीं, उन सबको एक एक करके इनके एलजी और इनके एलजी के कहने पे इनके अफसरों ने हटाया। और वो जो हजारों बच्चे हैं, हजारों युवा हैं, कुछ तो 40-40, 45-45 साल के हो गये, उनके घर में आज चूल्हा नहीं जल रहा, उनके घर में आज राशन नहीं आ रहा, उनके पास आज किराया देने के पैसे नहीं हैं, उनके पास आज लोन की किश्त देने के पैसे नहीं हैं, वो सब लोग इनका इंतजार कर रहे हैं, सब लोग इनका इंतजार कर रहे हैं, उन सबको मालूम है आप यहां पे भाषण देने के लिये कुछ भी बोल दीजिये, तर्क, वितर्क, कुतर्क कुछ भी कर दीजिये, कुतर्क का कोई अंत नहीं, कुतर्क का कोई अंत नहीं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः इनको अपनी बात रखने दो, विजेंद्र जी ने 20 मिनट लिये, उनको अपनी बात तो रखने दो भई।

...व्यवधान...

माननीय मंत्रीः अब इस चीज पे आते हैं। अब इस चीज पे आते हैं कि नौकरी देने का काम अरविंद केजरीवाल का है, इन्होंने कई बार कहा है इनकी सरकार का है। अध्यक्ष जी जो सरकारी नौकरी के अंदर जो सबसे बड़ी चीज होती है जिसकी वजह से लोग सरकारी नौकरियां नहीं देती सरकारें, वो होता है पैसा। सरकारों के पास इतना पैसा नहीं होता कि वो सरकारी नौकरियां दे सके या कोई भी नौकरी दे सकें, सरकारों के पास पैसा नहीं है वरना एक बात बताईये हर इनकी सरकार में हर राज्य के अंदर लोग अनएम्प्लॉयड हैं, बेरोजगार हैं, बेरोजगार को रोजगार देना अगर इतना आसान होता तो सब दे देते। पैसा नहीं है सरकारों के पास, रोजगार कैसे देंगे। उनके उपर बड़े बड़े कर्ज हैं। आज दिल्ली के अंदर अगर रोजगार दिया जा रहा है वो इसलिये दे पा रहे हैं क्योंकि चुनी हुई सरकार के पास पैसा है। मगर रोजगार देने का जो प्रोसेस है ये विडम्बना है देश की, दिल्ली की खास तौर पे कि जो 232 डॉक्टर लगाये गये, उनको एक लाख, सवा लाख रूपये तनख्वाह तो अरविंद केजरीवाल की सरकार देगी, आम आदमी पार्टी की सरकार देगी, मगर उनको लगाने की जो प्रक्रिया है, उनको जो ऑफर लैटर और अप्वाईटमेंट देने की प्रक्रिया है वो एलजी साहब करेंगे एनडीएमसी के सैंटर में। मैं ये फोटो लाया हूं ये कह रहे हैं न कि प्रक्रिया लगाने की

इनके पास है वो बस मार्शल हैं और ये सारे टीवी के कैमरा हैं वो देखेंगे ये जो है, मैं आपको एक एक-एक करके सारी जो है, ये देखिये। 'Delhi LG distributes appointment letters to 629 government employees' ये देखिये इसमें अरविंद केजरीवाल की फोटो है या आतिशी की फोटो लगी है? 629 लोगों को नौकरी दी, तनख्वाह देगी हमारी सरकार, और फोटो खिंचायेंगे ये, क्यों? क्योंकि ये प्रोसेस इन्होंने उसके उपर कब्जा कर लिया है। एक गलत कानून पास करके, पार्लियामेंट के अंदर सुप्रीम कोर्ट का फैसला पलट के ये अप्वाईंटमेंट का प्रोसिजर और अप्वाईंटमेंट देने का जो काम है, वो इनके हाथ में आ गया छलकपट से। एक नहीं और भी हैं अध्यक्ष जी, मैं और भी दिखाता हूं इनके। ये देखिये 'LG Saxena distributes appointment letters to 47 victims of 1984 anti-sikh riots' ये दे रहे हैं पैसा इसका? पैसा तो चुनी हुई सरकार दे रही है इनका क्या है, इनके पास तो है नहीं कुछ। मगर देखिये। हर रोज फोटो इनकी छपती है, हर रोज छपती है और भई अगर तुम्हारे पास नहीं है अप्वाईंटमेंट देने का काम तो तुम फोटो क्यों छपवा रहे हो? और अध्यक्ष जी इसके अंदर फोटो के अंदर देखिये कौन कौन हैं? एलजी हैं, चीफ सैक्रेट्री हैं, एमसीडी के कमिश्नर जो उस वक्त रेवेन्यू सैक्रेट्री थे अष्विनी कुमार हैं, उस वक्त के ट्रांसपोर्ट कमिश्नर और अब एलजी के जो प्रिंसिपल सैक्रेट्री हैं आशीष कुंद्रा हैं, इसमें तो मुख्यमंत्री हैं ही नहीं, न कोई मंत्री है। इसमें तो सिर्फ एलजी हैं, और एलजी के सारे के सारे लगाये हुए अफसर हैं। अब सवाल ये आता है कि षडयंत्र किसका था? क्योंकि बार बार सवाल आता है कि अरे नहीं

नहीं अरविंद केजरीवाल जी के कहने पे जो है हटा दिया गया। अरे भई तुम इतनी मान रहे हो अरविंद केजरीवाल जी की, ये तो हमें पहली बार पता चला। अरविंद केजरीवाल जी के कहने पे हटाया था, बार बार कहते हैं ये लोग। अरे अरविंद केजरीवाल जी के कहने पे तुमने हटाया तो अरविंद केजरीवाल जी ने वो चिट्ठी में जिन षडयंत्रकारियों के नाम लिखे उन अफसरों को क्या किया तुमने? उनको तो तुमने नहीं हटाया, इसके अंदर है। अध्यक्ष जी, ये षडयंत्र कब से शुरू हुआ और षडयंत्र की शुरूआत कब से हुई ये जानना बस मार्शलों के लिये भी बहुत जरूरी है और इस सदन के लिये भी बहुत जरूरी है। 2015 में बस मार्शल दिल्ली सरकार द्वारा, चुनी हुई सरकार द्वारा लगाये गये, उसके बाद से लगातार मैं छोटी छोटी चीजों में नहीं जाना चाह रहा, उसके बाद से लगातार इन बस मार्शलों को जो है तनख्वाहें देते रहे, 2022-23 में इसी सदन ने अध्यक्ष जी आपकी अध्यक्षता के अंदर 280 करोड़ रूपये पास किये इन बस मार्शलों की तरख्वाह के लिये, 280 करोड़ रूपये। ये नहीं देते थे ये सदन देता है, ये चुनी हुई सरकार देती थी 280 करोड़ रूपये, इनका कोई लेना देना नहीं था इसके अंदर। उसके बाद हुआ ये अध्यक्ष जी कि इनके सबसे चहेते जो अफसर हैं, परिवहन प्रमुख सचिव 29 अगस्त, 2023 को ये शुरूआत हुई, 12 जनवरी 2023 को 2022-23 का इस सदन ने 280 करोड़ रूपये मंजूर किया, कई सालों से वित्त विभाग बस मार्शलों के वेतन के लिये पैसा जारी करता आ रहा है और समय समय पर वेतन भी मिलता रहा है लेकिन 12 जनवरी 2023 को वित्त विभाग ने कई सवाल उठाने शुरू कर दिये। विभाग ने परिवहन विभाग से कहा कि या तो बस मार्शलों की व्यवस्था

को सही योजना के तहत नियमित किया जाये या फिर इसे पूरी तरीके से बंद कर दिया जाये। तो ये जो नियमित करने की जो बात विजेंद्र गुप्ता जी कह रहे हैं वो वहां पे वित्त विभाग के आशीष चंद्रा जी द्वारा जो है शुरू की गयी जिनके खिलाफ चुनी हुई सरकार, चुने हुए वित्त मंत्री और अब मुख्यमंत्री ने कई बार एलजी साहब से कहा कि ये अफसर हर काम के अंदर टांग अड़ाता है, हर जगह ये परेशानी खड़ी करता है, इस अफसर को हटा दिया जाये, इस अफसर को आज तक नहीं हटाया गया। ये वो अफसर हैं जिसकी वजह से मोहल्ला क्लिनिकों के अंदर तनख्वाहें लेट होती हैं, ये वो अफसर हैं जिनकी वजह से चार चार महीने तक बुजुर्गों को पेंशनें नहीं मिलती हैं, ये वो अफसर हैं जिसकी वजह से अस्पतालों के अंदर गरीब डेटा एंट्री ऑपरेटरों को हटाया गया, ये वो अफसर हैं जिनकी वजह से दस हजार बस मार्शलों को हटाया गया - आशीष चंद्र वर्मा। ये तुम्हारा फूफा लगता है, तुमने इसको क्यों रखा हुआ है, अब तक तुमने इसको क्यों नहीं हटाया? मुख्यमंत्री लिख के दे चुके हैं कि इसको हटाओ, ये उसको हटाते नहीं हैं, क्यों? क्योंकि ये वही काम कर रहे हैं जो ये भारतीय जनता पार्टी और इनके एलजी चाहते हैं इसलिये ये आज तक हैं। अब दूसरे अफसर, वो भी इनके बिल्कुल खास हैं। 29 अगस्त 2023 को परिवहन मुख्य सचिव श्री आशीष कुंद्रा ने एक नोट लिखा जिसमें उन्होंने कहा कि सिविल डिफेंस वालंटियर्स को बस मार्शल के रूप में तैनात करना स्थाई समाधान नहीं है, उन्होंने सुझाव दिया कि अब सीसीटीवी कैमरे और पैनिक बटन जैसी सुरक्षा सुविधायें काफी हैं, उन्होंने यह भी कहा कि कंडक्टर को मार्शल की तरह काम करने के लिये कुछ अतिरिक्त

ट्रेनिंग और वेतन दिया जा सकता है। साथ ही उन्होंने सितम्बर तक वेतन के बारे में बात की थी। उसके बाद इसी विभाग ने दोबारा से कहा कि मोटर व्हीकल एक्ट के अंदर भी जो है ये परमिशन नहीं है, बस मार्शल नहीं हो सकते, ये काम बस कंडक्टर कर लेंगे। और उसके बाद इनके दूसरे बहुत खासम-खास अफसर जो कई बार उनको यहां पे जो है चीफ सैक्रेट्री के पद पे एक्सटेंषन दी गयी, उन्होंने लिखा 13 अक्तूबर 2023, 13 अक्तूबर 2023 को उस वक्त के मुख्य सचिव नरेश कुमार ने, श्री नरेश कुमार ने इस नोट को मंजूरी देते हुए कहा 'बस मार्शल का मामला एक आरक्षित विषय है, रिजर्व्ड सबजेक्ट है, एलजी और केंद्र के अंदर आता है जो केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में आता है'। ये तो इनका चहेता लिख रहा है जिसको तीन बार एक्सटेंशन दी इन्होंने। उनके अनुसार महिलाओं की सुरक्षा कानून और व्यवस्था का विषय है और केंद्र को इस पर विशेष अधिकार है। उन्होंने सुझाव दिया कि सिविल डिफेंस वार्लेटियर्स की नियुक्ति 45 दिनों से अधिक होने पर गृह मंत्रालय और सुप्रीम कोर्ट के दिशा निर्देशों का पालन होना चाहिये यानि कि ये जो बस मार्शलों की नियुक्ति 45 दिनों से ज्यादा है वो सुप्रीम कोर्ट का भी उल्लंघन है और जो है इनके जो है गृह मंत्रालय का भी उल्लंघन है। तो जितने भी ये जो अफसर हैं, अब जिसकी बात मैं कर रहा हूं ये जो परिवहन सचिव थे उस वक्त के मुख्य परिवहन सचिव आशीष कुंद्रा वो कौन हैं आज, वो आज एलजी के प्रमुख सचिव हैं, प्रिंसिपल सैक्रेट्री हैं उनके। तो उन्होंने कहा ये जो अफसर हैं इसको तो मेरे घर ही ले आओ बिल्कुल आप, ये तो इतना अच्छा है।

और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी इन दोनों अफसरों के बारे में, बल्कि इन तीनों अफसरों के बारे में क्या लिखते हैं वो आप सुनिये। अरविंद केजरीवाल जी ने लिखा 'उपराज्यपाल ने 31 अक्तूबर 2023 को अपनी नोट में यह प्रस्ताव लागू नहीं किया और मामले को यह जो प्रस्ताव दिया था कि इनको बहाल कर दिया जाये और मामले को राष्ट्रपति के पास भेजने का फैसला नहीं लिया, इसे देखते हुए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने गृह मंत्री श्री कैलाश गहलोत को एक नोट लिखा श्री आशीष कुंद्रा प्रधान सचिव, परिवहन एवं श्री आशीष वर्मा प्रधान सचिव, वित्त के खिलाफ निलंबन एवं अनुशासनात्मक कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू की जाये जिसको बाद में भेजा भी गया और उनके उपर कोई जो है डिस्प्लिनरी प्रोसिडिंग भी नहीं की गयी, कोई जो है सस्पेंशन नहीं किया गया। इसका मतलब ये इनके चहेते अफसर हैं। जिन अफसरों से ये पूरा का पूरा षडयंत्र कराया गया और लगातार गरीबों के खिलाफ षडयंत्र कराये गये वो भारतीय जनता पार्टी और इनके एलजी के बिल्कुल चहेते अफसर हैं। इनके उपर कार्रवाई करना तो दूर, इनको बार बार एक्सटेंशन दी गयी, जो अष्विनी कुमार थे उनको आज एमसीडी का कमिश्नर बना दिया गया, वो क्या काम कर रहे हैं वो सबको मालूम है। और अगर तो कोई.. उनका रोकना ही उनका काम है। और जो आशीष कुंद्रा थे उनको जो है उन्होंने अपना जो है प्रिंसिपल सैक्रेट्री बना लिया। अब बात आती है कि गुप्ता जी को बुला लिया जाये तो हम आगे की बात करें क्योंकि उनका होना सर बहुत जरूरी है। वर्ना देखो सर वो जब मैं बात करने पे आया हूं तो वो भाग गये हैं क्योंकि अभी जो है मौके की बात है। अब वो बेचारे गांधी जी हैं वो क्या

करेंगे, गांधी नगर से। अब यही होता है जब कुंडी नहीं लगाई जाती तो, अब आप यहां इनको रोक लेते तो कहते देखो जी हमें टॉयलेट करना था। अब तुम सातों को एक ही साथ टॉयलेट करना है।

...व्यवधान...

माननीय मंत्री: तो अध्यक्ष जी कहने का मतलब ये है कि आज ये जो कैमरे वाले लोग हैं जो कैमरा है भई ये बीजेपी की तरफ कैमरा घुमा दो कि इनकी सारी सीटें खाली हैं ये भाग गये।ये सारे के सारे लोग जो हैं अध्यक्ष जी इस वक्त भाग गये और यही ये जब मुख्यमंत्री से मिलने आये थे तब भी भागना ही इनका प्रयास था, ये आये तो वहां पे नौटंकी करने थे इन्होंने सोचा कि हम आयेंगे, हम अपना एक पत्र पढ़ेंगे, मुख्यमंत्री को ज्ञापन देंगे और निकल लेंगे और बाहर बाईट देंगे। और जब मुख्यमंत्री जी ने बुला लिया और बोला कि भई बताओ क्या करना है और फिर तुम बताओ तुम क्या करोगे, आज ही सॉल्व करेंगे तो ये भाग रहे हैं। और वो भागना और आज का भागना बिल्कुल समान है। तो जितने भी बस मार्शल हैं वो इस बात को समझ लें कि कई अफसरों ने बार बार अध्यक्ष जी, अब हमने जो नोट फाइनली एलजी को भेजा वो ये भेजा है अध्यक्ष जी कि यह साफ है कि बस मार्शल की बहाली के लिये कोई लंबा चौड़ा प्रस्ताव तैयार किया जायेगा जो नीचे दिये हुए बिन्दुओं पर आधारित होगा, क्या? परिवहन आयुक्त श्री आशीष कुंद्रा ने कहा 27.09.2023 का नोट जिसमें कहा गया था कि पहले माननीय उपराज्यपाल की मंजूरी चाहिये फिर मंत्री परिषद की मंजूरी ली जा सकती है। दूसरा, मुख्य सचिव श्री नरेश कुमार का 13.

10.2023 का नोट जिसमें कहा गया था कि यह मामला महिलाओं की सुरक्षा से जुड़ा है इसलिये यह कानून व्यवस्था से संबंधित है जो केंद्र और माननीय उपराज्यपाल के अधिकार के अधीन आता है। ये बात नरेश कुमार जी ने कही। और तीसरी बात, जो अब के जो अभी भी जो प्रपोजल एलजी साहब का आया कि भई आप पॉलिसी बना दो। अब अध्यक्ष जी, जब ये मैटर सर्विसिज़ का है तो हम पॉलिसी कैसे बना देंगे? और ये कह रहे हैं एलजी पॉलिसी नहीं बनाता, अरे तो क्या मंत्री पॉलिसी बनाते हैं? मंत्री भी तो नहीं बनाते। आपके अधीन, आपके अधिकार क्षेत्र के अधीन जो अफसर आते हैं सर्विसिज़ के, वो ये पॉलिसी बनायेंगे, आप पॉलिसी बनवाओ और हमें अध्यक्ष जी कोई जल्दी नहीं है। हम कह रहे हैं आप दो महीने लो, तीन महीने लो, चार महीने लो आप अपनी पॉलिसी बनाते रहो मगर तब तक आप इन बस मार्शलों को उसी तरीके से वापिस रख लो जिस तरीके से पहले आ रहे थे। ये जो विजेंद्र गुप्ता जी ने इनको रेगुलराईज़ करने की जो गोली दी है न इनको वही ट्रैप है अध्यक्ष जी, ट्रैप ही वहां से शुरू होता है कि आपको रेगुलराईज़ेशन के नाम पे आपकी पॉलिसी बनेगी और पॉलिसी के नाम पे कई साल हम बिता देंगे, तब तक ये लोग जो है इधर उधर कहीं चले जायेंगे, संगठित नहीं रहेंगे। इनके चुनाव हो जायेंगे। इनका मकसद सिर्फ ये है कि भारतीय जनता पार्टी इनको बेरोजगार रखते हुए चुनाव करना चाहती है और फिर, फिर मिलेंगे ही नहीं इनसे। तो हमारा ये कहना है कि भई ये जो पॉलिसी वगैरह जो भी आपको ढोंग करना है वो आप करते रहो, खूब कराओ। मगर अगर आपने मुख्यमंत्री के

कहने से इनको हटाया है, तो अब तो मुख्यमंत्री ने कई बार कह दिया इनको लगा लो, अब क्यों नहीं लगा रहे आप इन्हें? मतलब अरविंद केजरीवाल जी ने भी कई बार पत्र लिखकर कह दिया, आतिशी जी ने भी कई बार पत्र लिखकर कह दिया कि भई इनको लगाओ, हाउस ने कह दिया, अब आप क्यों नहीं लगा रहे? तो अध्यक्ष जी ये जो भागे हैं वो इसलिए भागे हैं क्योंकि ये इन बस मार्शलों को जवाब नहीं देना चाहते। आज भी मेरा प्रस्ताव है, जिस दिन कहेंगे उस दिन हम सब लोग एलजी के पास चल सकते हैं, जिस कागज पर कहेंगे हम लोग साइन कर सकते हैं, हमारे पास तो एक ही शक्ति दी है संविधान ने साइन करने की, हम लोग साइन करके दे सकते हैं और आप ऑर्डर पास कीजिए वो लग जाएंगे वापस। ये संभव ही नहीं है कि एलजी साहब आर्डर दें और ये वापस ना लगे। और है किसी अफसर की मजाल की एलजी साहब का ऑर्डर हो और वो ना करे। जो ना करे उसको निकालो। बहुत साफ है अध्यक्ष जी और एक मैं बहुत धन्यवाद दूंगा कुलदीप जी को, संजीव झा भाई को और राजेश गुप्ता जी को, इन्होंने बहुत अच्छी चर्चा के अंदर आज भाग लिया और बहुत अच्छी-अच्छी बातें जो हैं आज इन्होंने सदन में की, मैं इस चीज का पूरा समर्थन करता हूं कि इन बस मार्शल्स को तुरंत जो है वापस लगाया जाए, धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः माननीय मुख्यमंत्री आतिशी जी चर्चा का उत्तर देंगी।

माननीया मुख्यमंत्री (श्रीमती आतिशी): धन्यवाद अध्यक्ष महोदय कि आपने इतने महत्वपूर्ण चर्चा को हाउस में समय दिया। देखिये अध्यक्ष महोदय ये बस मार्शल्स का मुद्दा मेरे दिल के बहुत करीब है। ये इसलिए मेरे दिल के बहुत करीब है क्योंकि मैं मूलतः दिल्ली की रहने वाली हूं। मैंने अपने स्कूल की पढ़ाई दिल्ली में करी, मैंने अपनी कॉलेज की पढ़ाई दिल्ली में करी, कई साल तक दिल्ली में नौकरी करी। तो दिल्ली में जब कोई लड़की, जब कोई महिला पढ़ाई करती है, कॉलेज जाती है, नौकरी पर जाती है तो डीटीसी बस के अंदर लड़कियों के साथ और महिलाओं के साथ किस तरह दुर्व्यवहार होता है, उस बात को मैं भली-भांति समझती हूं। मुझे याद है जब हम स्कूल पढ़ते थे तो अक्सर स्कूल में कभी एक्स्ट्रा क्लास के लिए, कभी स्पोर्टस की ट्रेनिंग के लिए, कभी annual day की प्रैक्टिस के लिए स्कूल में after hours रोका जाता था। लेकिन स्कूल बस तो तब तक चली गई होती थी। तो जो बच्चे एक्स्ट्रा क्लास के लिए रूकते थे, जो बच्चे annual day practice के लिए रूकते थे उन्हें डीटीसी बस में वापस घर जाना होता था और अक्सर लड़कियों को उनके माता-पिता इसी वजह से नहीं रूकने देते थे, स्कूल की एक्टीविटिज में इसीलिए participate नहीं करने देते थे क्योंकि उन्हें भरोसा नहीं था कि वो सेफ तौर पर डीटीसी बस से अपने घर पहुंच पाएंगी। क्योंकि जब एक लड़की, जब एक महिला एक डीटीसी बस में घुसती है, खासकर भरी हुई डीटीसी बस में, उसको गलत निगाह से देखना, उसपर अषलील भाषा के साथ कमेंटस पास करना, अभद्र व्यवहार करना, पुरुषों का उसको छूने की, गलत

तरीके से छूने की कोशिश करना, ये दिल्ली में रहने वाली किसी भी लड़की और किसी भी महिला के लिए आम बात होती थी। मुझे खुद याद है मैं कॉलेज में थी, तब मैं सोचती थी कि ये नेता तो बड़ी–बड़ी गाड़ियों में जाते हैं, बड़े–बड़े काफिलों में जाते हैं, इनको क्या पता एक लड़की का दर्द, एक महिला का दर्द, जिसे डीटीसी बस में इतने अभद्र व्यवहार का रोज–रोज सामना करना पड़ता है। दिल्ली की लड़कियों का, दिल्ली की महिलाओं का भाग्य बदला उस दिन जिस दिन अरविंद केजरीवाल जी दिल्ली के मुख्यमंत्री बने। अरविंद केजरीवाल जी दिल्ली के पहले मुख्यमंत्री नहीं थे। आम आदमी पार्टी की सरकार दिल्ली की पहली सरकार नहीं थी, लेकिन अरविंद केजरीवाल जी वो पहले ऐसे नेता थे जिन्होंने दिल्ली की महिलाओं का, दिल्ली की लड़कियों का दर्द समझा। क्यों इससे पहले किसी सरकार ने नहीं सोचा था कि बस में मार्शल लगाएं, क्यों इससे पहले किसी सरकार ने नहीं सोचा था कि लड़कियों और महिलाओं के साथ जो बदतमिजी हो रही है उसको रोका जाए। लेकिन अरविंद केजरीवाल जी ने सोचा। 2015 में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के बाद अरविंद केजरीवाल जी के मुख्यमंत्री बनने के बाद और तब कुछ समय पहले निर्भया कांड हुआ था, डीटीसी बस में ही हुआ था। अरविंद केजरीवाल जी ने हर बस में मार्शल लगाने की प्रक्रिया शुरू करी, समय लगा उस प्रक्रिया में। पहले होमगार्डस को लगाने की बात हुई। पर्याप्त होमगार्डस नहीं मिले, उसके बाद फिर से बैठक हुई, कभी होम डिपार्टमेंट के लेवल पर, कभी अरविंद केजरीवाल जी एलजी साहब से मिलने गए और दिल्ली की हर

डीटीसी बस में, बस मार्शल लगाए गए, सिविल डिफेंस वॉलियटर्स को बस मार्शल के तौर पर लगाया गया। मैं जानती हूं, मुझे इतनी लड़कियाँ मिलती हैं जो स्कूल में पढ़ती हैं, कॉलेज में पढ़ती हैं जो बताती हैं कि मार्शल के होने से, एक यूनिफॉर्म्ड मार्शल के होने से पुरुषों की बतमीजी करने की हिम्मत नहीं होती थी और एक लड़की को सेफ लगता था कि अगर कोई मुझसे बतमीजी करने की कोशिश करे तो मैं तुरंत आवाज दूंगी और वो मार्शल वहां पर बैठा हुआ है, वो मार्शल इन्टरवीन करेगा, वो उस बतमीजी को रोकेगा। लेकिन भारतीय जनता पार्टी को क्या फर्क पड़ता है। भारतीय जनता पार्टी को दिल्ली की महिलाओं की, दिल्ली की लड़कियों की कहां चिंता है और भारतीय जनता पार्टी की केंद्र सरकार उनके एलजी साहब और उनके अफसरों ने जो 2015 से 2023 तक बस मार्शल की प्रक्रिया स्मूथली चली आ रही थी, मार्च, 2023 से उसमें अड़ंगा लगाना शुरू किया। मार्च, 2023 से बस मार्शल्स की तनख्वा रोक दी। दिल्ली सरकार के मंत्रियों ने बार-बार लिखकर भेजा, परिवहन मंत्री ने लिखकर भेजा की बस मार्शलों की तनख्वा दी जाए, मैं खुद उस समय रेवेन्यू मिनिस्टर थी, मैंने कई बार लिखकर भेजा कि बस मार्शलों की तनख्वा दी जाये जो सिविल डिफेंस वॉलिंटियर है। कई बार आदेश दिये एलजी साहब को चिट्ठी लिखी, अफसरों को चिट्ठी लिखी लेकिन बस मार्शलों को तनख्वा नहीं दी गई। बार-बार इनके अफसर लिखकर भेजते थे की नहीं तनख्वा नहीं दी जाएगी, नहीं इनको बस मार्शल नही रखा जा सकता, नहीं बस मार्शलों की जरूरत नहीं है और अक्तूबर, 2023 में इन्होंने सबके सब बस

मार्शल्स को एलजी साहब ने एक साइन करके हटा दिया। उन्होंने दिल्ली की महिलाओं के बारे में नहीं सोचा, दिल्ली की लड़कियों के बारे में नहीं सोचा। उन्होंनें आज यहां पर कई बस मार्शल्स बैठे भी हुए हैं, इन्होंने इन 10 हजार लड़के-लड़कियों और उनके परिवारों के बारे में नहीं सोचा की इनका क्या होगा। विजेंद्र गुप्ता जी बार-बार कह रहे हैं कि अरविंद केजरीवाल जी ने बोला, अरविंद केजरीवाल जी ने बोला तो इसलिए एलजी साहब ने हटा दिया। मैं विजेंद्र गुप्ता जी को क्योंकि इतनी अरविंद केजरीवाल जी की चिट्ठियाँ पढ़ने का शौक है तो मैं उनको ये भी कहूंगी कि अरविंद केजरीवाल जी ने 20 अक्तूबर, 2023 को जो फाइल भेजी एलजी साहब को वो भी पढ़िएगा।..

...व्यवधान...

माननीया मुख्यमंत्री: उसमें उन्होंने सुनिए, स्पष्ट तौर पर कहा कि जो भी बस मार्शल बस में काम कर रहे हैं, उनको नहीं हटाया जाना चाहिए, 20 अक्तूबर को। और ये भी कहा कि जिन अफसरों ने इनकी तनख्वाह रोकी, चाहे वो अष्विनी कुमार जी हों तब डिविजनल कमिश्नर थे, चाहे आशीष वर्मा जी हों जो फाइनेंस सेक्रेटरी थे, चाहे आशीष कुंद्रा जी हों जो परिवहन सचिव थे, सब पर एक्शन लिया जाए। तो जो 20 अक्तूबर की चिट्ठी थी जिसमें अरविंद केजरीवाल जी ने लिखा की एक भी बस मार्शल नहीं हटना चाहिए उससे एलजी साहब को कोई फर्क नहीं पड़ा। 27 अक्तूबर को, क्योंकि तब तक ये बात फैल गई की ये बस मार्शल को हटाने वाले हैं, अरविंद केजरीवाल जी ने पुनः

एलजी साहब को चिट्ठी लिखी की बस मार्शल्स महिलाओं की सुरक्षा के लिए बहुत जरूरी हैं और ये 10 हजार लड़के-लड़कियां गरीब परिवारों से आते हैं, इनको ना हटाया जाए। फिर भी एलजी साहब के कान पर कोई जूं नहीं रेंगी और 1 नवम्बर को एलजी साहब के आदेश पर अष्विनी कुमार जी जो डिविजनल कमिश्नर थे उन्होंने एक ऑर्डर निकाल कर सब सिविल डिफेंस वॉलिंटियर और सब बस मार्शल्स को हटा दिया। मैं रेवेन्यू मिनिस्टर थी उस समय। मैंने उनको तुरंत चिट्ठी लिखी की अगर आप सीडीवीज को हटा भी रहे हैं, लेकिन जो बस मार्शल के तौर पर काम कर रहे हैं उनको ना हटाया जाए क्योंकि महिलाएं असुरक्षित हो जाएंगी। उन्होंने मेरा आदेश नहीं माना। मैंने एलजी साहब को वो चिट्ठी भेजी और कहा कि जो सिविल डिफेंस वॉलिंटियर्स बस मार्शल के तौर पर काम कर रहे हैं उनको ना हटाया जाए क्योंकि महिलाएं असुरक्षित हो जाएंगी, लेकिन एलजी साहब ने मेरी बात भी नहीं मानी। लेकिन मैं इन बस मार्शल्स की दाद देती हूं कि एलजी साहब के ना मानने के बाद भी इन लोगों ने हिम्मत नहीं हारी, नौकरी जाने के बाद भी इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और इन्होंने पिछले एक साल से लगातार सड़कों पर संघर्ष किया है मैं इन बस मार्शल्स के जजबे को सलाम करती हूं, इनकी हिम्मत को सलाम करती हूं और इन बस मार्शल्स का साथ किसने दिया, आम आदमी पार्टी के विधायकों ने दिया। आम आदमी पार्टी की सरकार के मंत्री सौरभ भारद्वाज ने दिया, जो कंधे से कंधा मिलाकर इन बस मार्शल्स के संघर्ष में उनके साथ खड़े रहे। इन्होंने डंड़े खाए बस मार्शल्स के साथ, बैरीकेटस पर खड़े

होकर लड़ाई करी। आम आदमी पार्टी के विधायक और हमारे मंत्री सौरभ भारद्वाज जी बस मार्शल्स के साथ अरैस्ट तक हुए। लेकिन इन्होंने बस मार्शल्स का साथ नहीं छोड़ा। क्यों, क्योंकि दिल्ली सरकार ना सिर्फ इन 10 हजार लड़के-लड़कियों को रोजगार देना चाहती है, दिल्ली सरकार दिल्ली की महिलाओं को, दिल्ली की लड़कियों को सुरक्षा देना चाहती है। विजेंद्र गुप्ता जी ने एक दिन मुझसे मिलने का टाइम मांगा, उन्होंने चिट्ठी भेजी और कहा कि, अगला दिन संडे का दिन था उन्होंने सैटरडे या फ्राइडे. हां, फ्राइडे को चिट्ठी भेजी, कहा कि सैटरडे जो ज्यादातर सरकारी दफ्तरों में छुट्टी होती है, उन्होंने कहा कि मिलने का समय चाहिए। हमने तुरंत इनको मिलने का समय भी दिया। विजेंद्र गुप्ता जी आए, उन्होंने कहा बार-बार एक बात कही, हमने जो सारी चिट्ठी पत्रियाँ विजेंद्र गुप्ता जी को दिखाई, लेकिन उन्होंने बार-बार एक ही बात कही कि आप अपने कैबिनेट से पास कर दो, एलजी साहब से मैं पास कराऊंगा, आप अपने कैबिनेट से पास कर दो एलजी साहब से मैं पास कराऊंगा। अध्यक्ष महोदय हमने पूरे कैबिनेट को वहीं बुला लिया, सैटरडे का दिन था। सैटरडे के दिन सब अपनी-अपनी विधानसभा क्षेत्र में थे, मुकेश अहलावत जी का विधान सभा क्षेत्र, सुलतानपुर माजरा है। दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों से हमने अपने कैबिनेट मंत्रियों को बुलाआ और जो दिल्ली विधान सभा का रेजोल्यूशन था बस मार्शलस को वापस रखने वाला, उसको पूरे कैबिनेट ने साइन किया और हमने कहा की जी अब आप एलजी साहब से साइन करवाइये। विजेंद्र गुप्ता जी एलजी साहब के पास जाने को तैयार नहीं थे। यहां तक हालात आ गए कि हमारे मंत्री सौरभ भारद्वाज जी को इनके पांव पड़ने पड़ गए। ये हालात आ गए हमें

लग रहा था ये एलजी साहब के पास नहीं जाएंगे, मैं इनकी गाड़ी में बैठ गई कि अब आप चलिये और मैं ये भी आपको बता दूं कि जब हम दिल्ली सचिवालय से निकलते हैं, तो एलजी साहब के ऑफिस जाने के लिए राइट टर्न लेना होता है, तो विजेंद्र गुप्ता जी ने कहा कि नहीं-नहीं उन्होंने अपनी गाड़ी लैफ्ट घुमा ली, मैंने कहा आज लैफ्ट क्यों जा रहे हैं?

...व्यवधान...

माननीया मुख्यमंत्रीः कहते हैं मैं तो अपने रास्ते से जाऊंगा।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः सच्चाई बता रही हैं वो सुन लो। सच्चाई बता रही हैं।

माननीया मुख्यमंत्रीः फिर वो, जब-जब हम कहें एलजी साहब..

...व्यवधान...

माननीया मुख्यमंत्रीः अरे विजेंद्र गुप्ता जी सुन लीजिए हमने भी आपकी बात सुनी, ऐसी क्या बात हुई, सुन लीजिए देखिये सच्चाई उस दिन की सामने तो आए। विजेंद्र गुप्ता जी गाड़ी अपनी कभी इधर घुमाएं, कभी उधर घुमाएं, कभी इधर घुमाएं। अब मैं इनकी गाड़ी में बैठी थी, तो मेरा पायलेट इनके आगे चल रहा था, वो राजनिवास की तरफ लेकर जा रहा था, इन्होंने कहा हम इनके पीछे नहीं जाएंगे, हम

उलटे रास्ते जाएंगे। तो ये पहले एक बार उस तरफ गए, फिर उन्होंने लैफ्ट लिया, फिर राइट लिया, फिर राजघाट पर सिंगल टर्न, सिंगल साइड पर यूटर्न लेने की कोशिश करी। गाड़ी रोक दी, गाड़ी से उतर गए, पर फिर भी, चाहे आम आदमी पार्टी के विधायक हों, चाहे बस मार्शल्स हों, जो हम उनके साथ थे। हमने कहा कि हमने अपना वादा पूरा किया है, अब विजेंद्र गुप्ता जी को अपना वादा पूरा करना होगा। ये 5 नवम्बर की बात है, जिस दिन वो रेजोल्यूशन एलजी साहब को दिया था। आज तक वो रेजोल्यूशन साइन होकर, अप्रूव होकर एलजी साहब से वापस नहीं आया। फिर एक दिन एलजी साहब की चिट्ठी आई की जी आप पोलिसी बनाइये और आप अलग-अलग विभागों को इन्वोल्व करके पोलिसी बनाइये। तो हमने भी कहा कि हम तैयार है। तो हमने एक नोट लिखकर दिया जो ट्रांस्पोर्ट डिपार्टमेंट के सचिव साहब है, कि हम एक ग्रुप ऑफ मिनिस्टर बनाएंगे और वो ग्रुप ऑफ मिनिस्टरपूरी पोलिसी बना देगा, जो पास कर देगा। तो जो हमारे सचिव हैं, ट्रांस्पोर्ट डिपार्टमेंट के उन्होंने 6/11/2024, 6 नवम्बर को जब हमने कहा कि पोलिसी बनाने के लिए हमें ग्रुप ऑफ मिनिस्टर बनाना है,। उन्होंने बिल्कुल साफ-साफ शब्दों में लिखकर दिया कि ये जो बस मार्शलस का मुद्दा है, ये सर्विसिज में आता है जो एलजी साहब के अधीन है और लॉ एंड ओर्डर में आता है, जो भी एलजी साहब के अधीन हैं, तो जो भी पोलिसी बनेगी वो एलजी साहब को ही बनानी होगी, ये मैंने नहीं कहा, ये हमारे मंत्रियों ने नहीं कहा, ये केंद्र सरकार द्वारा अपाईंटिड आईएएस अफसरों ने कहा कि ये सर्विसिज और लॉ एण्ड

ऑर्डर का मैटर है। तो फिर भी क्योंकि दिल्ली की सरकार बस मार्शल्स को पक्का करने के लिए कमिटिड है। हमने एक ऑल मिनिस्टर्स मीटिंग बुलाई और एक डिटेल्ड प्रस्ताव बस मार्शलस को पक्का करने का बनाया और हमने ये भी कहा, जो बहुत जरूरी बात है कि जो ये डिटेल्ड प्रस्ताव है, जो फाइनली एलजी साहब और अफसरों के थरू होगा, इसको तो बनने में समय लगेगा, हो सकता है दो महीने लगें, हो सकता है तीन महीने लगें, हो सकता है 6 महीने लगे, तब तक ये बस मार्शल कहां जाएंगे। तो हमने ये भी प्रस्तावित किया दिल्ली सरकार के कैबिनेट ने सभी कैबिनेट मंत्रियों ने की जब तक इनको पक्का करने की पोलिसी नहीं बनाई जाती है, तब तक और मैं ये पढ़ कर सुनाती हूं, स्पीकर साहब,

'Till the formulation of a scheme, bus marshals to be reinstated immediately in the same way as it was done before 31-10-2023. Hon'ble LG may give a one-time relaxation for utilization of Civil Defence Volunteers as bus marshals till the new scheme for bus marshals is implemented.' के उनको तुरंत प्रभाव से बस मार्शलस को रख लिया जाए। अध्यक्ष महोदय ये हमने 10 नवम्बर को हमारी मीटिंग हुई थी और 13 नवम्बर को ये प्रस्ताव एलजी साहब को भेजा गया था। आज 29 नवम्बर हो गई है, 29 नवम्बर से बस मार्शलस को reinstate करने का प्रस्ताव, बस मार्शलस को वापस लगाने का प्रस्ताव एलजी साहब के पास पड़ा हुआ है। विजेंद्र गुप्ता जी बार-बार कहते हैं, बार-बार ये बात कहते हैं कि मुख्यमंत्री अरविंद

केजरीवाल जी ने कहा इसलिए हमने हटा दिया। तो अब विजेंद्र गुप्ता जी मैं भी मुख्यमंत्री हूं, मैंने बार-बार एलजी साहब को कह दिया इनको वापस लगा लो, तो एलजी साहब को कहिये वापस लगा ले। अगर वो इतनी ही बात मान रहे हैं, मुख्यमंत्री की हर बात सुनते हैं तो मेरी भी ये बात सुन लें, कि तुरंत प्रभाव से इन बस मार्शलस को वापस लगा लिया जाए और मैं तो ये भी कहूंगी विजेंद्र गुप्ता जी, मैं तो ये भी कहूंगी आप एलजी साहब से ये साइन करा लीजिए, मैं अपनी पार्टी को मना लूंगी कि आपके खिलाफ रोहिणी में कोई कैंडिडेट भी नहीं खड़ा करेंगे, हम आपके लिये आकर प्रचार करेंगे, ठीक है जी। क्यों? क्योंकि हमारे लिये एक सीट मायने नहीं रखती, हमारे लिये इन बस मार्शल्स की नियुक्ति मायने रखती है, दिल्ली की महिलाओं की सुरक्षा मायने रखती है। तो इसलिये मेरा आपसे आग्रह है कि आप और मैं भी यहां आकर प्रचार करूंगी आपके लिये। आप कहिये तो मैं भी आपके लिये प्रचार करूंगी आपके लिये लेकिन जो..

...व्यवधान...

माननीया मुख्यमंत्रीः जो 13 नवम्बर को प्रस्ताव हमने भेजा है..

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः आपकी एल.जी. साहब तारीफ करते हैं आप चले जाओ वहां।

माननीया मुख्यमंत्रीः नहीं तो तारीफ..

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अभय जी बैठिये भई।

माननीया मुख्यमंत्रीः तारीफ करने के अलावा हमारी बात भी मान लें और इन बस मार्शल्स को वापस नौकरी दे दें। तो मेरा भारतीय जनता पार्टी के कई विधायक तो यहां पर नहीं हैं पर एलओपी विजेंद्र गुप्ता जी यहां पर मौजूद हैं, मेरा उनसे यही आग्रह है कि जो 13 नवम्बर को दिल्ली सरकार के कैबिनेट द्वारा ऑल मिनिस्टर्स की रिपोर्ट और रिक्मनडैशन एल.जी. साहब को गई है, एल.जी. साहब उसे पास कर दें और तुरंत प्रभाव से सारे बस मार्शल्स को दिल्ली की बसों में वापस लगाया जाये, थैंक्यू।

माननीय अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद। अल्पकालिक चर्चा नियम-55 के अन्तर्गत दिल्ली पुलिस में कर्मचारियों की कमी तथा दिल्ली की सुरक्षा के प्रति केन्द्र सरकार की उदासीनता के कारण अपराध के बढ़ते ग्राफ के संबंध में चर्चा प्रारंभ करेंगे श्री जय भगवान जी। श्री जय भगवान जी, (अनुपस्थित)। श्रीमान अजय दत्त जी।

श्री अजय दत्तः अध्यक्ष जी धन्यवाद, आपने मुझे इस..

माननीय अध्यक्षः अजय दत्त थोड़ा ध्यान रखें माननीय मुख्यमंत्री जी ने आना है, बहुत कम पांच मिनट में एक-एक विधायक को ले रहा हूं, प्लीज।

श्री अजय दत्तः ठीक है सर थैंक्यू।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः चलिये मैं उसको वापस ले रहा हूं। आदरणीय केजरीवाल जी ने, पूर्व मुख्यमंत्री जी ने आना है, ठीक है।

श्री अजय दत्तः जी सर, अध्यक्ष जी आपने मुझे दिल्ली के एक बहुत ही गंभीर मुद्दे पर बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी आज दिल्ली में अरविंद केजरीवाल जी की सरकार एक तरफ अरविंद केजरीवाल जी की सरकार चल रही है और दूसरी तरफ दिल्ली पुलिस, लैंड, लॉ एंड आर्डर ये केन्द्रीय सरकार के पास है। अरविंद केजरीवाल जी ने अभी तक दिल्ली के लोगों के लिये अच्छी बिजली, फ्री बिजली, सस्ती बिजली की व्यवस्था की, अच्छे सरकारी स्कूल बनाये, अच्छे मोहल्ला क्लिनिक और हमारे बीच में सत्येन्द्र जैन जी बैठे हैं जिन्होंने मोहल्ला क्लिनिक का इतना शानदार मॉडल दिया, अच्छे हॉस्पिटल बनाये और मनीष सिसोदिया जी ने उस समय शिक्षा मंत्री होते हुये एक बहुत ही शानदार स्कूलों का मॉडल जो पूरे विश्व में जाना जाता है बहुत शानदार दिल्ली की गर्वनेंस और दिल्ली की सरकार को चलाया लेकिन एक तरफ जो दो महत्वपूर्ण दिल्ली की व्यवस्थायें जिसमें दिल्ली पुलिस आती है लॉ एंड आर्डर आता है ये केन्द्र सरकार के पास एल.जी. साहब के पास और मैं तो ये कहूंगा डायरेक्ट होम मिनिस्टर भारत के गृह मंत्री अमित शाह जी के पास आती है और इन व्यवस्थाओं को जब हम देखें तो हमारा दिल दहल जाता है। आज दिल्ली के अंदर आये दिन गैंगवार, आये दिन महिलाओं के साथ अत्याचार, आये दिन मर्डर और

अध्यक्ष जी मैं आज का ये न्यूज़पेपर लेकर आपके सामने आया हूं। इसमें कितने बड़े-बड़े शब्दों में लिखा है 'दिल्ली में ब्लास्ट से दहशत' और दिल्ली के अंदर ये और ये हमारे नेता, प्रतिपक्ष विजेंद्र जी की विधानसभा में आपकी नाक के नीचे दिल्ली के अंदर आपकी नाक के नीचे बम्ब फट रहा है, ये बहुत ही शर्मनाक है। दिल्ली भारत का दिल है, दिल्ली इस देश की राजधानी है। आज सारे अखबार अध्यक्ष जी, यही बयान कह रहे हैं, 'एक और धमाके से पुलिस को खुली चुनौती' और इसमें ये भी लिखा है पुलिस को चुनौती के साथ-साथ उसकी नाकामी। आज दिल्ली के अंदर, देश के अंदर ये ऐसी व्यवस्था जो दिल्ली पुलिस के माध्यम से एल.जी. साहब के माध्यम से अमित शाह जी के पास है, देश के होम मिनिस्टर के पास है, ये दिल्ली के लॉ एंड आर्डर की व्यवस्था को इन्होंने इतना खराब कर दिया कि आज अभी मैं चार दिन पहले एक न्यूज पढ़ रहा था उसमें कालकाजी के अंदर एक पुलिस कॉस्टेबल की चाकू घोंपकर दिन दहाड़े हत्या कर दी गई। ऐसे तमाम किस्से रोज हम सुन रहे हैं। कहीं पर अभी मैं दो-तीन दिन पहले सुन रहा था कि एक व्यापारी को दिन दहाड़े चाकू घोंपकर मार दिया गया, एक व्यापारी के घर पर गोलियां दाग दीं गईं, उनसे एक्सटॉर्शन की फिरौती की मांग आ रही है और पूरी दिल्ली के अंदर एक दहशत का माहौल सिर्फ इस वजह से है की दिल्ली की कानून व्यवस्था एल.जी. साहब के माध्यम से देश के गृहमंत्री के पास है। यहां पर पूरे विष्व की जितनी भी हाई कमान बैठते हैं यहां पर एम्बेसिज़ हैं दिल्ली के अंदर पूरे देश की कानून व्यवस्था बैठती है उसके बावजूद

दिल्ली सेफ नहीं है। दिल्ली के लोग डरकर रहने लगे हैं दिल्ली की महिलायें घर से बाहर निकलने के लिये डरती हैं दिल्ली के अंदर आम आदमी पार्टी के माध्यम से अरविंद केजरीवाल जी ने दिल्ली के पूर्व सी.एम. ने बस मार्शल लगाये थे 11 हजार बस मार्शल लगाये थे और ये एक बहुत बड़ी व्यवस्था थी की हम कैसे भी दिल्ली की महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करें लेकिन एल.जी. साहब ने उनको भी निकाल दिया। मुझे समझ नहीं आ रहा की आज दिल्ली के अंदर किस तरीके की व्यवस्था चल रही है क्या दिल्ली के लोग सेफ हैं अगर सेफ नहीं हैं तो उसकी जिम्मेदारी किसकी है? मैं आपके माध्यम से ये जरूर बता देना चाहता हूं कि ये सारी जिम्मेदारी हमारे देश के गृह मंत्रालय की है और गृह मंत्रालय के जो मुखिया है अमित शाह जी की जिम्मेदारी है ये जिम्मेदारी फिक्स होनी चाहिये। एक हफ्ते पहले मैंने देखा की उन्होंने एक मीटिंग की उस मीटिंग का क्या कन्क्लुज़न निकला कोई कन्क्लुजन नहीं निकला और उसके बाद और ज्यादा धमाके बढ़ गये उसके बाद और ज्यादा इस तरीके की गैंगवार बढ़ गई उसके बाद और ज्यादा महिलाओं के साथ अत्याचार शुरू हो गये इसके बाद और ज्यादा चाकूबाजी गोलीबाजी ये सब शुरू हो गया तो दिल्ली आज दहल रही है। इनकी जवाबदेही बीजेपी की जवाबदेही फिक्स होनी चाहिये। एक तरफ अरविंद केजरीवाल जी की सरकार का मॉडल है और एक तरफ ये आज ये सरकार जो चला रहे हैं पीछे के रास्ते से दिल्ली पुलिस को अपने हाथ में रखकर उनको कौन पूछेगा? हम आज रोड पर जब निकलते हैं क्योंकि चुने हुये लोग हैं दिल्ली के लोग पूछते हैं अभी कुछ दिन पहले एक लड़की गायब हो गई, उसका आज तक 15 दिन

से कोई पता नहीं है। अभी कुछ दिन पहले मैंने एक अखबार में और पढ़ा की एक लाजपत नगर के अंदर एक व्यापारी की हत्या हो गई उसका कुछ नहीं पता चला तो इतने सारे तामझाम अरबों-खरबों रूपये हम सिक्योरिटी पर लगाते हैं उसके बारे में कोई जानकारी नहीं मिली। अध्यक्ष जी ये जो कल का धमाका हुआ है इसके पीछे क्या साजिश है इसके पीछे कौन है ये सारी की सारी इन्फोर्मेशन पब्लिक होनी चाहिये और देश के गृहमंत्री जी से मेरा ये अनुरोध है और ये आश्वासन भी है और उनको एक तरीके से सजेशन है की आप अगर दिल्ली की छोटी सी दिल्ली जो देश की राजधानी है जो सबसे सिक्योर सिटी मानी जाती है उसको सेफ नहीं कर सकते तो आप इस देश की कानून व्यवस्था को कैसे सेफ करेंगे। इस देश के अंदर लोगों को कैसे आप सिक्योरिटी का आभास करा पायेंगे ये एक बहुत बड़ा प्रश्नचिन्ह् है और मैं ये भी कहना चाहता हूं कि दिल्ली के लोग ये देख रहे हैं की जो दिल्ली के लोगों ने आम आदमी पार्टी को रिस्पोंसिब्लेटी दी थी वो सारी अरविंद केजरीवाल जी ने बखूबी अरविंद केजरीवाल जी की सरकार ने बखूबी निभाई है और उसका रिजल्ट मिला है और जो रिस्पोंसिब्लेटी बीजेपी को दी गई थी वो हर जगह फेल है, हर जगह फेल है, हर चौराहे पर फेल है और पूरी सुरक्षा व्यवस्था दिल्ली के अंदर तहस-नहस हो चुकी है ये बहुत बड़ा शर्म का विषय है। अध्यक्ष जी आपने मुझे इस गंभीर विषय पर बोलने का मौका दिया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, जय हिन्द-जय भारत।

माननीय अध्यक्षः श्री जय भगवान जी।

श्री जय भगवानः माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि मुझे अति महत्वपूर्ण मुद्दे पर आपने बोलने का अवसर प्रदान किया। अध्यक्ष महोदय क्योंकि दिल्ली देश की राजधानी है और लगातार दिल्ली के अंदर जो जनसंख्या है वो लगातार बढ़ती जा रही है क्योंकि अभी 2011 के अंदर करीब 01 करोड़ 67 लाख जनसंख्या जो आंकड़ों के अनुसार थी लेकिन अब क्योंकि जो नया हमारा मास्टर प्लान आ रहा है और लैण्ड पूलिंग पॉलिसी जो आ रही है उसके अंदर करीब 02 करोड़ 60 लाख जनसंख्या दिल्ली की बताई गई है और 2041 का जो हमारा मास्टर प्लान है उसके अंदर करीब-करीब साढ़े तीन करोड़ लोगों को लेकर के मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है। अध्यक्ष महोदय मैं ये बताना चाहता हूं की दिल्ली के अंदर करीब 94,249 पद दिल्ली पुलिस के अंदर हैं और इस पर 80 हजार लोग कार्यरत हैं जिसमें से करीब-करीब 13,507 जो पद हैं वो रिक्त पड़े हुये हैं क्योंकि अभी मेरे साथी बोल रहे थे यहां पर की अभी प्रशांत विहार के अंदर दोबारा से ब्लास्ट हुआ 40 दिन के अंदर दोबारा ब्लास्ट हो गया क्योंकि प्रशांत विहार का जो एरिया है विजेंद्र गुप्ता जी का एरिया है और अति संवेदनशील एरिया है क्योंकि वहां पर रोहिणी कोर्ट भी है वहां पर साइंस की लैबोरेटरी भी है वहां पर डीडीए का ऑफिस भी है और वहां पर अनेक प्रकार के ऑफिस हैं। अध्यक्ष महोदय लगातार सीआरपीएफ का स्कूल भी है और वहां पर अभी 40 दिन के अंदर दोबारा से ब्लास्ट हो जाना बहुत शर्मनाक है दिल्ली पुलिस क्या कर रही है

सीबीआई क्या कर रही है और एजेंसियां क्या कर रही हैं ये हमें देखना चाहिये। अध्यक्ष महोदय क्योंकि मेरे पास आंकड़े हैं और लगातार दिल्ली के अंदर मैंने देखा है क्योंकि मैं दिल्ली का वासी हूं और मैं बारीकी से देख रहा हूं की दिल्ली के अंदर लगातार जो अपराध है वो लगातार बढ़ता जा रहा है। अभी मैंने देखा की दिल्ली के अंदर जेल के अंदर लोगों को मार दिया गया कोर्ट के अंदर मार दिया गया, सरेआम चौकों पर लोगों को मारा जा रहा है। अभी बवाना जे.जे. कॉलोनी के अंदर सरेआम दो लड़कों को चाकूओं से गोद दिया गया। अभी कुछ दिन पहले की घटना है मेरे यहीं पर करीब पांच महीने पहले 28 मई को एक लड़की को चाकुओं से गोद दिया गया और दर्दनाक तरीके से मारा गया और हत्यारा तब तक मारता रहा जब तक वो लड़की मर नहीं गई और मरने के बावजूद भी उसने पत्थर उठाकर लड़की के सिर पर मारा मतलब इतना बहुत ज्यादा खतरनाक मामला हो गया है और अभी अध्यक्ष महोदय मैं आपको बताना चाहता हूं की लगातार ये जो अपराध हैं बढ़ते जा रहे हैं हमारी जो प्रैस है हमारी जो मिडिया है कृष्णा नगर के अंदर चार-पांच दिन पहले का वाक्या है मैंने देखा की ये जो पत्रकार बंधु है वो अपने घर के सामने थे गाड़ी के अंदर अपने परिवार के साथ थे पांच-छः लोग आये और उनकी गाड़ी पर हमला कर दिया तो जो पत्रकार लोग हैं या जो महिलायें हैं या जो लोग हैं लगातार जो है उनके प्रति अपराध को बढ़ाया जा रहा है। अध्यक्ष महोदय अपराध लगातार दिल्ली के अंदर बढ़ते जा रहे हैं और इस अपराध को रोकने की बहुत ज्यादा जरूरत है। मैं आपके सामने कुछ आंकड़े पेश कर रहा

हूं अध्यक्ष महोदय की दिल्ली के अंदर करीब-करीब 13,507 जो पद हैं वो रिक्त हैं जिसमें स्पेशल जो कमिश्नर हैं 22 पद हैं जिसमें से 10 खाली हैं और ज्वाइंट कमिश्नर के 17 पद हैं जिसमें से 3 खाली हैं, एडिषनल कमिश्नर के 22 पद हैं जिसमें से 2 खाली हैं, डीसीपी 47 पद हैं जिसमें से 7 खाली हैं, दानिक्स के 34 पद हैं जिसमें से 20 खाली हैं, एसीपी के 199 पद हैं जिसमें से 47 खाली हैं और जो हमारे इंस्पैक्टर हैं उनके 1412 पद हैं जिसमें से 147 खाली हैं, 40 खाली हैं सॉरी और एएसआई के 6994 पद हैं जिसमें से 1400 खाली हैं, हैड कॉन्स्टेबल के 22,882 पद हैं जिसमें से 826 खाली हैं, कॉन्स्टेबल के 44,816 पद हैं, जिसमें से 6,074 खाली हैं एमटीएस के 1303 पद हैं जिसमें से 897 खाली हैं और जो सिविलियन हैं उनके 14 पद हैं जिसमें से 6 खाली हैं। अध्यक्ष महोदय मैं ये बताना चाहता हूं आपको की लगातार दिल्ली के अंदर अपराध बढ़ता जा रहा और क्योंकि पुलिस की नैतिक जिम्मेदारी है अपराधों को रोकना, लगातार जो नशा है वो भी बढ़ता जा रहा है उसके लिये भी पुलिस चाहिये, जनसंख्या भी बढ़ती जा रही है। प्रति व्यक्ति पुलिस को सिक्योरिटी देनी है और पुलिस कम होती जा रही है लगातार हमारी जो सरकार है केन्द्र सरकार वो लगातार कभी 2 हजार पद भरती है कभी 3 हजार पद भरती है और अब तो लगातार ये एक तरीके से खेल हो रहा है मुझे लगता है की दिल्ली के जो लोग हैं उनकी सुरक्षा की जो परवाह है वो केन्द्र सरकार को नहीं है केन्द्र सरकार को अगर सुरक्षा होती तो 20-25 हजार लोगों की आज दिल्ली पुलिस के अंदर जरूरत है उनको एक साथ अपोंइट करना चाहिये एक साथ भर्तियां निकालनी चाहिये जिससे की जो

अपराध है वो रूक जाये। अध्यक्ष महोदय, मैंने कई बार देखा है की जो हमारे बड़े-बड़े अधिकारी हैं चाहे वो पुलिस के अधिकारी हैं सीपी एडिषनल सीपी या बड़े अधिकारी हैं उनके घरों पर 20 प्रतिशत जो स्टाफ है वो उनके यहां पर भी लगा रहता है जो मैंने देखा है बारीकी से। अध्यक्ष महोदय, मैं ये चाहता हूं की लगातार जिस प्रकार से ये घटनायें हो रही हैं कभी बम्ब धमाके हो रहे हैं कभी बलात्कार हो रहे हैं, कभी किडनैपिंग हो रही है बच्चों की ये लगातार दिल्ली के अंदर बढ़ता जा रहा है और ये जो काम है ये एल.जी. साहब का है। मैं अभी थोड़ी देर पहले पढ़ रहा था की एल.जी. साहब ने एक अनॉथराइज कॉलोनी के अंदर कैम्प लगाने की बात की है की हम उनको रेगुलराइज करेंगे और पक्का करेंगे और इनके अंदर जो है इनको पक्का किया जायेगा। मैं ये पूछना चाहता हूं एल.जी. साहब से सदन के माध्यम से एल.जी. साहब पहले पांच साल से सरकार है अब चुनाव आया तो आपको याद आया की हम इनको पक्का करेंगे, आप अपना काम तो कर नहीं पा रहे हो जो आपका लॉ एंड आर्डर का काम है आज जो नया-नया युवा है जो छोटे-छोटे बच्चे हैं वो नषे के आदी हो गये हैं, नशा कर रहे हैं, नये-नये अपराधों में जा रहे हैं। आपका काम है दिल्ली के अंदर जो लॉ एंड आर्डर्स है उसको ठीक करना।

(समय की घंटी)

श्री जय भगवानः लेकिन आप लोग बिल्कुल भी आपका जो ध्यान है वो लॉ एंड आर्डर के ऊपर बिल्कुल भी नहीं है तो अगर

दिल्ली को अगर बचाना है तो आपको लॉ एंड आर्डर पर ध्यान देना होगा। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं की क्योंकि दिल्ली पुलिस की जो भर्तियां हैं वो ज्यादा से ज्यादा हो जिससे की यहां पर जो अपराध है वो कम हो और जो हमारी बहन-बेटियां हैं उनकी सुरक्षा हो क्योंकि जब तक दिल्ली पुलिस जो है सजग नहीं होगी तब तक बात नहीं बनेगी मैं इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं जय हिन्द-जय भारत नमस्कार वन्दे मातरम्।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद श्री शिव चरण गोयल जी।

श्री शिव चरण गोयलः धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने मुझे दिल्ली में बढ़ते अपराध के ग्राफ के विषय में चर्चा करने का मौका दिया। आज दिल्ली में जो सुरक्षा है वो केन्द्र सरकार- गृह मंत्रालय के अधीन है और हमारे देश के गृहमंत्री हैं अमित शाह जी और अमित शाह जी से दिल्ली पुलिस संभल नहीं रही और जितना क्राइम अभी बढ़ रहा है स्पीड से, डेली अखबार क्राइम से भरा होता है। दिल्ली में लॉ एंड आर्डर का बुरा हाल है और बीजेपी ने दिल्ली का बेड़ागर्क कर दिया है। अभी कई आंकडे दिये गए। मैं अपने क्षेत्र मोती नगर विधान सभा की बात करता हूं। तो अभी हाल ही में, महीने बीस दिन में वहां पर ऐसी-ऐसी वारदात हुई हैं जो आज तक सुनने में नहीं आई थी और अपराधी बेखौफ है, डर ही नहीं है। जखीरा चारा मंडी में आज से दस दिन पहले एक 22 साल के लड़के का दिन दहाड़े मर्डर कर दिया गया। सुदामापुरी में एक 25 साल का लड़का उसकी ग्यारह महीने पहले शादी हुई थी। वो लड़की अभी दस दिन पहले विधवा हो गई। उसको

चाकूओं से गोद दिया गया और दिन दहाड़े काम किया गया। ये काम हुआ शौचालय के अंदर जहां पर शौचालय में मेरे ख्याल से कम से कम हर वक्त सौ पचास लोग जरूर रहते है, उनके बीच में मर्डर किया गया। एक डकैती की गई। अभी हाल में 20–25 दिन पहले मोती नगर तांगा स्टैंड पर एक छोटी सी दुकान है, वो मैडिसन बेचते हैं आयुर्वेदिक की। उसका घर भी उसके बगल में ही है। लगभग शाम के साढे छः बजे घर में अपराधी घुसे और उस समय घर में एक महिला और साथ में उसकी दो महीने की बेटी, पूरे घर की सफाई कर दी, पूरा सामान ले गए। उसके बावजूद उस महिला के पेट में गोली मारी गई और जो बच्चा था दो साल का उसके पांव में गोली मारी गई। आज इस तरह से अपराधी बेखौफ हैं, उसे डर ही नहीं है। दस अक्तूबर को मेरी विधान सभा रमेश नगर छः ब्लॉक उसमें दो हजार करोड़ रूपये की ड्रग मिली। अध्यक्ष जी दो हजार करोड़ रूपये की ड्रग। वो ड्रग किसी भी युवा के बीच में जायेगी तो ये क्राइम बढेंगे और काम होंगे। तो हमारा लॉ सिस्टम पूरा बिगड गया है। जहां मैं रहता हूं जय देव पार्क ईस्ट पंजाबी बाग। अभी हफ्ते पहले एक रंगदारी की कॉल आ गई। उसकी एफआईआर दर्ज कराई गई। पूरा परिवार खौफ में है। तो जिस तरह की वारदातें हो रही हैं। हमने मुझे दिल्ली में रहते हुए लगभग मेरा बर्थ ही दिल्ली में हुआ है 62 से हमने आज तक ऐसी वारदातें देखी नहीं। ये वारदातें बढती जा रही है। अभी जिस तरह से हमारे विजेन्द्र जी हमारे प्रतिपक्ष का नेता बस मार्शल को लेकर बयान जो दे रहे थे और ये बयान आज की डेट में पूरे बे सिर पैर, बे सिर पैर के बयान। अभी

कल की बात है या परसों की बात है मेरी विधान सभा में पोस्टर लगा दिये गए बड़े-बड़े और पूरी विधान सभा में मेरे ख्याल से कम से कम भी बीस तीस हजारपोस्टर लगे हुए हैं। विधायक जी सौ करोड़ रूपये आप कहां ले गए उसका हिसाब दो। मैंने पढ़ा उसको, मैंने कहा भई सौ करोड़ रूपये। मेरी थोडी सी मैथमैटिक्स, थोड़ी सी लर्निंग थोड़ी मजबूत रहती है। मैं उसके ऊपर खड़ा हुआ, मैंने दिमाग लगाया मैंने कहा भई सौ करोड़ रूपये तो नहीं आये। हिसाब लगाया, भई 2015 में चार करोड़ रूपये आये विधायक फंड के..

माननीय अध्यक्षः भई शिव चरण जी इस विषय पर नही। ट्विस्ट मत करिये। विषय की गम्भीरता को समझिये। प्लीज।

श्री शिवचरण गोयलः चलो। लेकिन जिस तरह से गुमराह किया जाता है जनता के बीच में लेकिन आज स्थिति बड़ी भयावह हो गई है। अपराधी बेखौफ है और मैं ये प्रार्थना करता हूं हमारे गृह मंत्रालय से हमारे गृह मंत्री से इसके ऊपर संज्ञान लें और आज जो कॉन्सटेबल की हमारी मैं देखता हूं हमारे थाने के अंदर 80 सैंक्षन्स हैं और कॉन्सटेबल हैं तीस। पूरी तरह से सिक्यूरिटी चरमरा गई है। जहां पहले सिक्यूरिटी गार्ड खड़े होते थे, पुलिस के कॉन्सटेबल खड़े होते थे वो पूरी बैरिकेडिंग खत्म कर दी गई है। हमारा ईस्ट पंजाबी बाग पहले वहां पर बैरिकेटिंग होती थी। वो बैरिकेटिंग खत्म कर दी गई है। जिससे क्रिमिनल बेखौफ अपने क्राइम कर रहे हैं। कोई डर नहीं है कोई भय नहीं है। यदि लॉ व्यवस्था नहीं सम्भल रही है तो कम से कम किसी

और को दे दो। जिसको भी लगता है कि सम्भाल सकते हैं। जिम्मेदारी आपकी है। केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी है, वो अपनी जिम्मेदारी से भाग नहीं सकती और ये जिम्मेदारी सम्भाले। नहीं तो दिल्ली की जनता आपको बेदखल कर देगी। आपने मुझे बोलने का मौका दिया बहुत-बहुत शुक्रिया। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्री अनिल बाजपेयी जी। बाजपेयी जी कुल पांच मिनट। मैं सभी को कन्ट्रोल कर रहा हूं।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः माननीय अध्यक्ष जी मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। लाँ एंड आर्डर की बातचीत हो रही है इस सदन में। माननीय अध्यक्ष जी, आरोप लगाया जाता है हम लोगों के ऊपर लेकिन मैं आज एक बात स्पष्ट रूप से कह देना चाहता हूं कि सारा करा-धरा तो आप लोगों का है। ग्यारह हजार चार सौ करोड़ रूपये 2014 से लेकर और 2024 तक दिल्ली को अलॉट किया गया लॉ एंड आर्डर के लिए। मैं पूछना चाहता हूं इस सदन से, अध्यक्ष जी आपसे भी मैं कह रहा हूं सब के माध्यम से कि उस पैसे का क्या यूटिलाईजेशन किया गया, कहां-कहां कानून व्यवस्था पर खर्च किया गया, इसकी जवाबदेही किसकी बनती है? सरकार की बनती है। कम से कम बतायें, उनके मंत्री बताये, हमारे मुख्यमंत्री जी बतायें कि कहां-कहां खर्च किया गया है? लॉ एंड आर्डर की बात कर रहे है।

...व्यवधान...

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: अरे भई अब सुन तो लीजिए। हम आपके बीच में थोड़े ही ना बोल रहे है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: बाजपेयी जी बोलते रहिए। मुझसे बात करिये।

...व्यवधान...

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: आप तो केवल, आप लोग तो केवल दोषारोपण की बात करते हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: बाजपेयी जी मुझ से बात करके बोलिये आप।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: आप जो अच्छा काम है उसको बताईये ना।

माननीय अध्यक्ष: बाजपेयी जी। आप मुझ से बात...

...व्यवधान...

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: अब देखिये वो बोल रहे है मैं तो बोल नहीं रहा हूं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं रोक रहा हूं उनको। मेरे से बात करके बोलिये आप।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई बोलने दीजिए, बोलने दीजिए उनको।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः हमारे देश मे..

माननीय अध्यक्षः जितना झूठ बोल सकते हैं बोल रहे हैं, आप चुप रहिए।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः हमारे देश में जी-20 का सफल आयोजन किया गया। पूरे देश ने ही नहीं पूरे विदेश में इसकी प्रशंसा की है। भारतवर्ष के हर नागरिक ने प्रशंसा की है और दिल्ली पुलिस का उसमें बहुत महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। आप समझ सकते है कोई जरा सी भी घटना हुई कोई और जो हमारे dignitaries foreign से आये थे उन्होने दिल्ली पुलिस को appreciate किया कि दिल्ली पुलिस ने बहुत अच्छा काम किया है और जितने लोग थे उन्होने उसकी प्रशंसा की है। लेकिन केवल दोषारोपण करना ये एक अच्छी बात नहीं है। एक बात मैं कहना चाहता हूं आपसे कि आज से पहले मतलब हमेशा आतंकवादियों की घटनायें दिल्ली में होती रहती थी कि आज फलांना आतंकवादी दिल्ली में आ गया। फलांने आतंकवादी ने कई लोगों को गोली मारी..

...व्यवधान...

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: अब आप बोलने दो ना, सुनो ना।

माननीय अध्यक्ष: बोलने दो भई। बोलने दीजिए इनको।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: अरे सुनने की भी हिम्मत रखो।

माननीय अध्यक्ष: वो अपनी पोल खुद खोल रहे है।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: लेकिन आतंकवादी घटनायें दिल्ली में होती रहती थी। लेकिन सर मैं आज बताना चाहता हूं कि जब से देश में भारतीय जनता पाटी की सरकार आई है देश के यषस्वी गृह मंत्री हमारे माननीय अमित शाह जी आयें हैं एक भी दिल्ली के अंदर एक भी आतंकवादी घटना नहीं हुई है। ये है लॉं एंड आर्डर केन्द्र का। ये मैं बताना चाहता हूं आप लोगों को।

...व्यवधान...

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: अरे अब सुनो ना। हिम्मत तो रखो। आज दिल्ली में कानून व्यवस्था की आप बात कर रहे हैं। आज शत प्रतिषत दिल्ली में कानून की व्यवस्था बहुत अच्छी है। हमारे कमिश्नर ऑफ पुलिस अच्छा काम कर रहे हैं। डीसीपी हमारे अच्छा काम कर रहे हैं एसीपी अच्छा काम कर रहे हैं। एसएचओ हमारे सारे अच्छा काम कर रहे हैं। आप जाकर दूसरे राज्यों में देखिये ना। अगर दिल्ली में लॉं एंड आर्डर की सिचूएशन अच्छी है तो उत्तर प्रदेश में योगी जी ने भी अच्छी कर रखी है। आप देखिये ना दिल्ली में। आप दिल्ली पुलिस में 112 नम्बर डायल कीजिए तुरन्त पुलिस वहां पहुंचेगी। लेकिन जहां

आपकी सरकार है केरल में, जहां आपका अलायंस है वहां जाकर देखिये 48-48 घंटे जो है वहां पर पुलिस नहीं आती केरला के अंदर। वहां तो आपकी सरकार है। लेकिन दिल्ली पुलिस के अंदर जो है वो हमारी कानून व्यवस्था बहुत अच्छी है।

(समय की घंटी)

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: आज देखिये हमारे, सर आपकी भी विधान सभा है। मैं आपकी विधान सभा की भी बात कर सकता हूं। दिल्ली पुलिस द्वारा...

माननीय अध्यक्ष: मेरी विधान सभा में तो मर्डर हो गए दो।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: दिल्ली पुलिस द्वारा आज हर दिल्ली के 70 विधान सभाओं में जितने कन्संर्ड थाने लगते हैं उन सारे थानों में हाई टेक कैमरे लगाये गए हैं। लेकिन हम दिल्ली के आठ विधायक हैं और दिल्ली सरकार महिलाओं की सुरक्षा की बात करती है और इसी सदन में दिल्ली के मुख्यमंत्री माननीय केजरीवाल जी ने बोला था कि हम महिलाओं की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे लगायेंगे। पहले फेज के तीन हमारे विधायकों के यहां सीसीटीवी कैमरे नहीं लगाये गए। दस बार सदन में सबने उठाया है। अभी रिसेंटली अभय वर्मा जी ने, अभय वर्मा जी ने 70 विधायक हैं, सबका बराबर का हक है। जितना सर आपका है जितना और विधायकों का है, उतना हमारा भी है। लेकिन उन सारे विधायकों के यहां हाई कोर्ट में अभय वर्मा जी गए। हाई कोर्ट

का आदेश हुआ कि मेरी विधान सभा में और जो विधान सभाएं हैं, जहां सौतेला व्यवहार किया जा रहा है वहां पर कैमरे लगाये जाएं। आर्डर है हाई कोर्ट का। आज तक हाई कोर्ट के आर्डर को implement नहीं कराया गया।

माननीय अध्यक्षः चलिए।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः आप बात लॉं एंड आर्डर की कर रहे हैं। आज यमुना में, आज यमुना के अंदर देख लीजिए सफाई की उसके बारे में बात रखिये ना।

(समय की घंटी)

माननीय अध्यक्षः बाजपेयी जी बैठिए।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः मैं तो दिल्ली के उप-राज्यपाल माननीय विनय कुमार सक्सेना जी का धन्यवाद करना चाहूंगा कि आज उनके प्रयास से यमुना आज साफ हो रही है।

माननीय अध्यक्षः श्रीमती बन्दना कुमारी जी।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः अब देख लीजिए आप आज यमुना साफ हो रही है।

माननीय अध्यक्षः बाजपेयी जी बैठिये अब। बैठिये, प्लीज।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः सर ओरों को आप बोलने दे रहे हैं।

माननीय अध्यक्षः नहीं हो गया। मैं सबको पांच मिनट दे रहा हूं। मैंने सबको रोका है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं बैठिये। अब आप कानून व्यवस्था पर नहीं बोल रहे आप।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं बैठिये। मैं नाम बोल चुका हूं। श्रीमती बन्दना कुमारी जी।

श्रीमती बंदना कुमारीः अध्यक्ष जी, आपने मुझे बहुत ही गम्भीर मुद्‌दे पर बोलने का मौका दिया आपका तहे दिल से शुक्रिया। आज की इस गम्भीर हालात को समझते हुए जिस तरीके से हमारे क्षेत्र और पूरी दिल्ली की हालत हो गई है ये हंसने और मुस्कुराने का समय नहीं है। चिंता करने की जरूरत है। चिंता करिये, चिन्तन करिये। दिल्ली के लोगों की सुरक्षा की बात करिये। आज हम लोग इस लिए बैठे हुए है कि जो दिल्ली के लोग व्यापारी, दिल्ली की महिला, दिल्ली के आने जाने वाले लोग आज असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। झुग्गी वाले मकान किरायेदार और जितने भी गांव वाले शहर वाले सब असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। आज दिन दहाड़े दिल्ली में चाकू बाजी चल रही है। आज अध्यक्ष जी हमारे क्षेत्र में पीतमपुरा क्षेत्र में, रात को तीन बजे मेन रोड पर पुलिस थाने से चंद कदमों के दूर चाकूबाजी 50 चाकू गोदे गए एक

बच्चे को। अगल-बगल में लड़के चिल्लाते रहे और उसको भाग-भागकर चाकू दिखाई गई और कहा जो सामने आयेगा उसको चाकू मार देंगे। पुलिस को कॉल किया गया लेकिन जब तक पुलिस आई तब तक तो बच्चा जा चुका था। एक बच्चा, दो बच्चों को मारी गई। एक बच्चा होस्पिटल-होस्पिटल भाग रहा था रात को। यहां पर होस्टिल जाते-जाते अब पता नहीं आज की डेट में कल तक वो ठीक था अभी की हालात पता नहीं। अध्यक्ष जी जिस तरह से 18 तारीख को, 18 तारीख को एक मनीष नाम के लड़के का मर्डर हुआ। आज मंगलवार को शाम छः बजे साढ़े छः बजे से सात बजे के बीच एक बच्चा जो जा रहा था राजवाड़ा बैंकेट हॉल जहां पर वो बैकेंट हाल में काम करता था, फलवल की कटिंग का काम करता है और वो वहां पर अपना पेट पालन कर रहा था। अपने परिवार का पालन पोषण कर रहा था। दोनों मौत में दोनों के फादर नहीं है और उनमें उस बच्चे ने अपनी बहन की शादी के लिए बिदाई का था, उसमें एक कम्बल की कमी महसूस हो रही थी। उस बच्चे ने कहा अभी पोल्यूशन लगी हुई है। ये ग्रैप लगी हुई है, राज मिस्त्री का जो लेबर का काम करता था उसने कहा चलो ये काम नहीं हो रहा है आज मैं राजवाड़ा में शादी में कर लूंगा, वहां से जो पैसा मिलेगा मैं बहन के लिए कम्बल लेकर आऊंगा। ये बात माँ से कहकर वो घर से निकला और उस बच्चे की शालीमार बाग क्लब पॉश एरिया जहां बड़े-बड़े व्यापारी, बड़ी-बड़ी चिंतन, बड़ी-बड़ी बातें होती हैं, हमारे एक तरफ पॉश इलाका कोठी का, पूरा कोठी का एरिया दूसरी तरफ भी बड़े-बड़े व्यापारी रहते हैं और उस बीच में एक

मर्डर हुआ, साढ़े छः से सात के बीच में और उस लड़के ने जिसकी मर्डर हो रही थी, उसने अपने मोबाइल से पुलिस को कॉल किया। आवाज उसकी कराहती हुई आई और उसी बीच में पन्द्रह लड़के एक बच्चे को मार दिया। चाकू से गोद-गोद कर उसकी आंत बाहर निकाल दी और उस मतलब वहां पर मार्केट भी है। दिन दहाड़े मौत हुई। पूरी भीड़ आई सब लोग आये। हद तो तब हो गई अध्यक्ष जी जो भीड को कहा गया यहां से कोई भी कुछ भी बोला, किसी ने मीडिया को बुलाया वही अपराधी उसी को जेल में उठाकर बंद कर दिया जायेगा। कोई अगर विधायक को फोन किया तो उसी को उठाकर जेल में बंद कर दिया जायेगा। इस तरह की दहशत फैलाई गई वहां पर। जो भाजपा के लोग एक जीरो वाट का बल्ब लगाते हैं और पूरे दिन भर मीडिया में सोशल मीडिया में चलाते रहते हैं मैने बल्ब लगाई मैंने बल्ब लगाई। एक भी बाईट नहीं चली भाजपा के लोग, भाजपा के लोग भी वहां मौजूद थे गए और सबको कहा गया एक हमारा प्रोग्राम था शाम के समय मैं अपने क्षेत्र से बाहर थी शादी में और लोगों को कहा गया कोई विधायक को फोन नहीं करेगा। जो करेगा तो उसी को अंदर कर दिया जायेगा। इस तरह की दहशत फैलाई गई और एक भी मीडिया के बंधू अभी कोई साथी ने कहा था जो मीडिया के बंधू जब आयें वहां पर तो उनको कहा गया भाई जाओ यहां कुछ नहीं हुआ है। एक भी दिखाने की जरूरत नही है। एक को भी बताने की जरूरत नहीं है। कुछ नहीं हुआ। आपसी रंजिश थी, आपसी झगड़ा था हो गया बात खत्म। जैसे पोस्टमार्टम से बॉडी आई वहीं पर गाड़ी रखकर और क्या

कहा गया परिजन को, परिजन को कहा गया कि किसी को बोलने की जरूरत नहीं है। सीधा लेकर रफा–दफा हो जाओ घर और यूपी उनको भेज दिया गया। कहा गया बॉडी लेकर सीधा जाओ। तुम यहां पर रूकना मत। इधर–उधर घूमना मत। कोई जरूरत नहीं है घर से कोई सामान लेने की। सीधा बॉडी लो और यूपी चले जाओ।

(समय की घंटी)

श्रीमती बंदना कुमारीः और ये बहुत ही दर्दनाक इशू है और इस तरह की दुर्घटना बहुत ज्यादा बढ़ गई है। आज हर व्यापारी डरा पड़ा है, हर छोटा–छोटा रिक्शा वाला डरा पड़ा है। जिस तरह से हर जगह क्राईम कैपिटल बन चुका है। ये चरस गांजा, इतनी–इतनी पुड़िया जैसी चीज क्या बिक रही है और मैंने कमिश्नर साहब को भी, पुलिस के साथियों को लैटर लिखा और उनसे कहा जो इस तरह की जो वारदात हो रही है जो इस तरह की वारदात को कंट्रोल करना चाहिये, तो उन्होंने कहा मैडम हम अकेले कैसे पुलिस को भेज दें, उनके हाथ में कट्टा होता है, हमारे पास स्टाफ नहीं है, हम कैसे करें इस काम को। तो आज मैं पूरे गृह मंत्री जो हमारे तड़ीपार अमित शाह जी हैं, उनसे मैं एक निवेदन करना चाहती हूं, दिल्ली पुलिस अगर नहीं संभलती तो किसी और के हवाले कर दें, हम सब को दे दें, दिल्ली सरकार को दे दें, अरविंद केजरीवाल जी को दे दें तो हम दिल्ली पुलिस को अच्छी तरह संभाल लेंगे, दिल्ली की सुरक्षा अच्छी तरह दे देंगे। मुझे याद है मोहल्ला रक्षक दल की फाईल बनी थी, हमारी सरकार ने, हमारी कैबिनेट ने बना के दी थी।

(समय की घंटी)

माननीय अध्यक्षः बंदना जी कंक्ल्यूड करिये बंदना जी।

श्रीमती बंदना कुमारीः जी इसलिये कि मोहल्ला की रक्षा हो, गलियों की रक्षा हो, मोहल्ले की रक्षा हो।

माननीय अध्यक्षः बंदना जी,

...व्यवधान...

श्रीमती बंदना कुमारीः आज सरकारी संपत्ति की जिस तरह से नुकसान ये..

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बंदना जी कंक्ल्यूड करिये अब।

(समय की घंटी बजाई गई)

श्रीमती बंदना कुमारीः जितने चोर उच्चके कर रहे हैं और उसको पुलिस संभाल नहीं पा रही है। अध्यक्ष जी, ये आप भी समझते हैं..

माननीय अध्यक्षः कंक्ल्यूड करिये प्लीज।

श्रीमती बंदना कुमारीः कि किस तरह का ये मुद्दा है, कितना गंभीर मुद्दा है इसपे जितनी, आज हमारे क्षेत्र में एक भी सरकारी संपत्ति हो, प्राईवेट की तो छोड़ दीजिये, सरकारी संपत्ति सुरक्षित नहीं है।

माननीय अध्यक्षः बंदना जी, अब कंक्ल्यूड करिये प्लीज।

श्रीमती बंदना कुमारीः एक भी सरकारी संपत्ति, दिन दहाड़े सारी ग्रिल काट ली जा रही है, स्लैब तोड़ लिये जा रहे हैं, हर चीज को नुकसान पहुंचाया जा रहा है, हमने अपने यहां एक फाउंटेन लगाया कल हो के वो फाउंटेन की मोटर चली गई, चोरी हो गयी। तो सर इस क्राईम को रोकेगा कौन? चलिये प्राईवेट संपत्ति की रक्षा करना हम सबकी अपनी अपनी जिम्मेदारी है सरकारी संपत्ति की सुरक्षा कौन करेगा, इसकी जवाबदेही तो सुनिष्चित करनी पड़ेगी और इसके लिये जिम्मेदार कौन है, आज ये सदन आपसे भी पूछ रहा है। अध्यक्ष जी, आपके माध्यम से आज इस चर्चा में कमिश्नर दिल्ली पुलिस कमिश्नर को होना चाहिये था और उनके सामने ये बात होती तो बहुत अच्छा लगता। तो अध्यक्ष जी आपके माध्यम से ये बहुत ही दिल्ली के लिये गंभीर मामला है और जिस तरह से भाजपा के लोग लंबे लंबे जुमले फैंक रहे हैं वो जुमला फैंकना बंद करें। मैं उनसे यही निवेदन करना चाहती हूं।

माननीय अध्यक्षः बंदना जी कंक्ल्यूड करिये।

श्रीमती बंदना कुमारीः और दिल्ली की सुरक्षा के लिये हम सबको मिलके कोई ठोस कदम उठानी होगी, आपका बहुत बहुत शुक्रिया, जय हिंद, जय भारत।

माननीय अध्यक्षः श्री विजेंद्र गुप्ता जी। श्री विजेंद्र गुप्ता जी, अनुपस्थित। बी.एस. जून जी।

श्री बी.एस. जून: धन्यवाद अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी अभी अभी हमारे एक विपक्ष के साथी ने कहा कि 2014 के बाद दिल्ली में कोई टेररिस्ट एक्टिविटीज नहीं हुई। सर एक महीना पहले रोहिणी में स्कूल के पास एक ब्लास्ट होता है वो आज तक केस सॉल्व नहीं हुआ। कल फिर प्रशांत विहार में एक लो इंटेंसिटी ब्लास्ट हुआ बॉम्ब का, किसने किया? ये टेररिस्ट एक्टिविटिज हैं सर ये कोई सिलेंडर ब्लास्ट नहीं है। 2014 के बाद लॉ एंड ऑर्डर की सिचुएशन जब से हमारे प्रेजेंट गृह मंत्री आये हैं अमित शाह जी सिचुएशन बद से बदतर हो गयी है। सर सिविल सोसाइटी में दो टाईप के लोग रहते हैं एक वो लोग जो कानून का सम्मान करते हैं उनको हम लॉ अबाइडिंग सिटिजन कहते हैं और कई बार कहते हैं लॉ अबाइडिंग सिटिजनजो हैं वो कमजोर होते हैं। दूसरे सिटिजन हैं जो कानून का सम्मान नहीं करते, कानून का डर उनके दिलों में नहीं है और वो अक्सर कानून तोड़ते हैं। सर 2014 के बाद इन लोगों की संख्या बढ़ती चली गयी। अब इन लोगों पे कंट्रोल कौन करेगा, किसकी जिम्मेवारी थी? नैचुरली दिल्ली पुलिस की। सर क्या दिल्ली पुलिस अपनी ड्यूटी प्रॉपर्ली परफार्म कर पाई है? दिल्ली पुलिस हमारे साथियों ने कितने इंस्टांस दिये कि फलानी जगह ये हो गया, फलानी जगह ये हो गया। दिल्ली पुलिस का डायरेक्ट कंट्रोल किसके पास है, मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर्स, जिसके बॉस कौन हैं अमित शाह जी। अमित शाह जी के रिप्रजेंटेटिव दिल्ली में कौन हैं वीके सक्सेना लेफिट्नेंट गवर्नर जी। तो ये लोग क्या दिल्ली पुलिस को प्रॉपर्ली संभाल पा रहे हैं जिससे लॉ एंड ऑर्डर की सिचुएशन ठीक हो? लॉ एंड

ऑर्डर की सिचुएशन आप हमसे मत पूछिये, इनसे मत पूछिये, आप जाके एक सर्वे करवाईये कि दिल्ली में लॉ एंड ऑर्डर की सिचुएशन कैसी है, हर आदमी कहेगा बद से बदतर है। क्यों हुई है बद से बदतर? क्योंकि कोई इफेक्टिव कंट्रोल अमित शाह जी एमएचए का दिल्ली पुलिस पर नहीं है। सर रिसेंटली दिल्ली पुलिस ने एक डाटा रिलीज किया कि ओवरऑल जो कन्विक्शन रेट है इंडिया में वो 59 परसेंट है और दिल्ली में 85 परसेंट है। ये टोटली झूठ है सर। क्राईम अगेंस्ट विमेन महिला सुरक्षा की बात करें जो केसिज महिलाओं के अगेंस्ट रजिस्टर होते हैं उसमें कन्विक्शन रेटसर बड़े अनफॉर्च्यूनेट और बड़ी दुख की बात है 1.65 परसेंट है केवल 1.65 परसेंट है केवल, अगर कन्विक्शन रेट1.65 परसेंट है तो महिलायें सुरक्षित कहां से हो गयी और लॉ एंड ऑर्डर की सिचुएशन कहां से इंप्रूव करेगी। आज सर क्या हो रहा है? टारगेटिड किलिंग रही है, एक्सटॉर्शन कॉल आ रही हैं, बिजनेसमैन को आ रही है, ट्रेडर्स को आ रही है, इवन प्रोफेशनल्स को भी आ रही है। कार शोरूम्स हैं उनको एक्सटॉर्शन कॉल आ रही है, हमारे यहां सर दस साल में इनफैक्ट हम क्या कर रहे हैं दिल्ली पुलिस, वो गैंगस्टर्स को ग्लोरिफाई कर रही है, फलानां गैंगस्टर अनमोल बिश्नोई रिवार्ड दस लाख, फलानां गैंगस्टर ये रिवार्ड दस लाख, उनको सोशल मीडिया में दिखाया जाता है और उनकी नकल कर करके सर आम जो बच्चे, माइनर बच्चे हैं, माइनर लड़के हैं 18-20 साल के, वो रील बना रहे हैं। दूसरे वो लड़के उनकी कनपटी पे पिस्टल रख के रेलवे लाईन पे उसके हाथ पैर बांध के। सर दिल्ली पुलिस अपनी सुरक्षा

नहीं कर पा रही तो नागरिकों की क्या करेगी। हमारे एक साथी ने बताया कि गोविंद पुरी में एक कांस्टेबल का दिन दिहाड़े क्रिमिनल्स ने मर्डर कर दिया। एक और ऑफेंस आजकल है जो दिल्ली पुलिस कंट्रोल नहीं कर पा रही वो है..एक्सटॉर्शन तो है ही, सेक्सटॉर्शन, जनकपुरी साईड में एक 65 साल के वकील साहब उनके एक कॉल आती है और जब तक उनको समझ में आती है सेक्सटॉर्शन का केस था उनसे 14 लाख रूपये ऐंठ लिये जाते हैं। तो आजकल सर जो हालात दिल्ली में बन चुके हैं, लॉ एंड ऑर्डर की जो सिचुएशन आज दिल्ली में है आज तक ऐसी नहीं रही। सर 1980 और 1990 के दशक में दिल्ली पुलिस का गोल्डन पीरियड था। उस टाईम सर जो दिल्ली के क्रिमिनल्स थे वो दिल्ली छोड़ के यूपी, राजस्थान, हरियाणा में शिफ्ट कर गये। आज क्या हो रहा है? आज सारे के सारे क्रिमिनल्स का गैंगस्टर्स का जमावड़ा दिल्ली में है। खुलेआम गोलियां चल रही हैं, कई बार इनोसेंट आदमी बाइस्टैंडर्स मारे जाते हैं। तो इन गैंगस्टर्स पे कंट्रोल कौन करेगा, अगर दिल्ली पुलिस कुछ नहीं करेगी, होम मिनिस्ट्री कुछ नहीं करेगी, एलजी कुछ नहीं करेंगे तो कौन करेगा, सर लोग इनोसेंट लोग जायेंगे कहां? लोग आज खौफ में हैं, लोग आज डरे हुए हैं। क्यूं, क्योंकि कार्रवाई नहीं होती। करप्शन बढ़ गयी, इनएफिशियंट पुलिस है, इनएडिकेट पुलिस है, ये सारे कई फैक्टर्स हैं लेकिन इनको कंट्रोल करने के लिये एक इफेक्टिव कंट्रोल चाहिये और सबसे बड़ा क्या चीज लैककर रही है सर, सैंटरल गवर्नमेंट का लोकल गवर्नमेंट के साथ कोई कोऑर्डिनेशन नहीं है।

(समय की घंटी)

श्री बी.एस. जून: अगर आपको लॉ एंड ऑर्डर सिचुएशन इंप्रूव करनी है तो सैंटरल गवर्नमेंट को प्रॉपर कोऑर्डिनेशन लोकल गवर्नमेंट, इलेक्टिड गवर्नमेंट के साथ करना पड़ेगा। तभी सिचुएशन कंट्रोल में आयेगी। आज कोई भी आदमी कुछ भी बोल के चला जाता है लेकिन दिल्ली पुलिस आराम से आप एक कांस्टेबल का ट्रांसफर नहीं करा सकते जितने हमारे विधायक हैं। हमारी चीफ मिनिस्टर एक कांस्टेबल का ट्रांसफर नहीं करा सकती। हां भाजपा के जो विधायक हैं उनकी पूरी चलती है। तो दिल्ली पुलिस का भी पॉलिटिसाईजेशन हो चुका है और ये देश के लिये, इस सिटी के लिये बहुत खतरनाक है। मुझे इतना ही कहना था सर बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: इस विषय पर चर्चा नेक्स्ट डे भी जारी रहेगी श्री मदन लाल जी और विजेंद्र गुप्ता जी को अगले दिन इस पर मैं समय दूंगा। अब श्री सत्येन्द्र जैन जी चर्चा में भाग लेंगे।

श्री विजेंद्र गुप्ता (माननीय नेता-प्रतिपक्ष): अभी आपने मेरा नाम बोला था।

माननीय अध्यक्ष: हां बोला था न मैंने बोला है ना व्यवस्था दी है। नेक्स्ट डे ये चर्चा कंटिन्यू रहेगी उस दिन आपका नंबर आयेगा।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मदन लाल जी भी बोलेंगे आप भी बोलेंगे। अभी आज क्लोज थोड़ी कर रहे हैं। प्लीज।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं अब हो गया, समय नहीं है। श्रीमान सत्येन्द्र जैन जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैंने कब मना किया भई।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः क्या?

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आज सत्येन्द्र जैन जी बोल रहे हैं, मनीष जी बोल रहे हैं और केजरीवाल जी बोलेंगे।

श्री सत्येन्द्र जैनः आदरणीय अध्यक्ष जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः केजरीवाल जी ना।

माननीय अध्यक्षः हां।

श्री विजेंद्र गुप्ताः इसका मतलब आप हमें बुलवाना नहीं चाहते। यही हुआ ना, विपक्ष को आप बुलवाना नहीं चाहते।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अरे, मुख्यमंत्री बोलेगीं। आपके बाद मुख्यमंत्री बोलेगीं, आपके बाद मुख्यमंत्री, बैठ जाईये अब।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः चलिये। ठीक है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः सत्येन्द्र जैन जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आपका नाम बोला तब आप थे नहीं। आप थे नहीं। बैठिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः श्रीमान सत्येन्द्र जैन जी।

श्री सत्येन्द्र जैनः आदरणीय अध्यक्ष जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भाई साहब मैंने बड़ी रिस्पेक्टफुली कहा है मैंने बहुत इज्जत से कहा है कि नेक्स्ट डे मुख्यमंत्री के बोलने से पहले, मैं

मुख्यमंत्री के बोलने से पहले इनको समय दूंगा। मैं अध्यक्ष की कुर्सी से बोल रहा हूं। माननीय मुख्यमंत्री के बोलने से पहले इनको समय दूंगा।

श्री विजेंद्र गुप्ताः आपका डर क्या है?

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मुझे कोई डर नहीं है। कोई डर नहीं है। मैं समय दूंगा आपको। आपको मैंने कहा, मुख्यमंत्री से बोलने से पहले नेता विपक्ष को..

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आपके हिसाब से कुछ नहीं चलेगा। बैठिये। सत्येन्द्र जैन जी।

...व्यवधान...

श्री सत्येन्द्र जैनः आदरणीय अध्यक्ष जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं किसी से नहीं डरता हूं। उपर वाले के अलावा किसी से नहीं,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैंने बोला न, आपका नाम बोला, आप थे नहीं उस समय। मैंने बोला है कि..

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः आप बताइये ना।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मुख्यमंत्री के बोलने से पहले नेक्स्ट डे आपको बुलाउंगा।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः छोड़िये। चलिये।

...व्यवधान...

श्री सत्येन्द्र जैनः आदरणीय अध्यक्ष जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी बैठिये। मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूं बैठिये। श्रीमान सत्येन्द्र जैन जी।

श्री सत्येन्द्र जैनः आदरणीय अध्यक्ष जी, सरेआम..

...व्यवधान...

श्री अखिलेश पति त्रिपाठी: आपने पूरा मौका दिया.

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: भई अब अखिलेश जी बोलने दो।

श्री सत्येन्द्र जैन: आदरणीय अध्यक्ष जी, अखबार की हैडलाईस अगर आप देखेंगे..

श्री विजेंद्र गुप्ता: अध्यक्ष जी मेरे को आज बोलना है।

माननीय अध्यक्ष: आप बैठिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: चलिये मैं अभी निर्णय करूंगा। अभी बैठ जाईये।

...व्यवधान...

श्री सत्येन्द्र जैन: विजेन्द्र जी, ढाई साल बाद बोल रहा हूं, बोलने दो। आदरणीय अध्यक्ष जी अखबार की हैडलाईन अगर आप देखें, अखबार की हैडलाईन देखियेगा लिखा होता है 'सरेआम बाजार में गोलियां चली' एक लड़के को सरेआम पब्लिक के बीचों-बीच पकड़ के चाकुओं से गोद दिया गया और गोलियां चलना हर रोज की एक खबर होती है। तो अंदाजा ये लगाया जाता है कि भई दिल्ली में तो ऐसा नहीं हो सकता। और बड़ा आश्चर्य की बात है कि अब दिल्ली के अंदर कहीं भी खुलेआम गोलियां चलती हैं। मतलब मैं ये कहता हूं जहां

पहले बिहार को, यूपी को कहा जाता था उससे ज्यादा गोलीबारियां दिल्ली के अंदर होती हैं और ये बिल्कुल शर्मनाक है। कई सारे लोग कहते हैं ऐसा क्यूं हो रहा है? देखो ऐसा होता है मेरी दृष्टि सामने है तो वो सामने वाला दिखेगा, पीछे तो दिखेगा नहीं कुछ भी। अब दिल्ली के अंदर दिल्ली पुलिस है उसका लॉ एंड ऑर्डर पे काम होना चाहिये था, उसकी दृष्टि क्रिमिनल्स पर बिल्कुल नहीं है। उसकी दृष्टि कहां पे है इस असेम्बली के उपर है कि भाई साहब इस असेम्बली पर ध्यान रखो बस और कुछ नहीं करना। उनकी जो एनुअल परफार्मेंस रिपोर्ट आती है उनको देखना है काम अच्छा किया है कि बुरा किया। कहते भाई साहब आपका प्रमोशन हो जायेगा एक एमएलए के खिलाफ झूठा केस बना दो। सौ केस हो जायें कोई दिक्कत नहीं है। आज दिल्ली के अंदर बिल्डिंगें बनती हैं। एक बिल्डिंग बता दो जहां पे पुलिस का हिस्सा न जाता हो। पुलिस का ध्यान बिल्डिंग बनाने पे है अनऑथोराईज्ड बिल्डिंगों के अंदर, कालोनीज के अंदर प्लाटों पे कब्जा होता है उसके अंदर उनका ध्यान है, क्राईम पे ध्यान नहीं है। अरे ऐसे कैसे हो सकता है गोली चल रही है और यहां के माननीय विधायक तारीफ कर रहे हैं एलजी साहब की। क्या डर है क्या कुछ? आपको तारीफ करनी पड़ रही है, बीजेपी के विधायक कह रहे हैं एलजी साहब की बड़ी तारीफ करता हूं मैं। अरे किस चीज के लिये करते हो ये भी तो बता दो? जिस शहर के अंदर कह रहे हैं कि जी-20 के अंदर कोई दुर्घटना नहीं हुई। 75 साल हो गये इस देश को आजाद हुए, यहां पे कोई भी इंटरनेशनल कांफ्रेंस हुई हो, इंटरनेशनल कोई आयोजन हुआ हो, कभी

यहां पे कोई घटना हुई है? कभी नहीं हुई। इसमें क्या बड़ी बात हो गयी। कहते हैं फॉरनर्स तारीफ कर रहे हैं। अरे भाई दिल्ली वालों से तो करा लो, फॉरनर की तारीफ फॉरेन में जाके ले लेना। दिल्ली में कोई तारीफ कर रहा है आपकी? दिल्ली के अंदर ला एंड ऑर्डर को बिल्कुल रसातल में इन्होंने पहुंचा दिया है, बिल्कुल बेड़ा गर्क कर दिया है। इकॉनामी देश की डाउन जा रही है, क्राईम अप जा रहा है। गैंगस्टर का ग्राफ उपर जा रहा है और गैंगस्टर के नाम सबको पता लग रहे हैं, उनको ग्लोरिफाई किया जा रहा है, बड़े, बड़े, बड़े, बड़े गैंगस्टर उनको बताया जा रहा है कितने बड़े लोग हैं उनको प्रोटेक्शन भी दी जा रही है। दिल्ली के अंदर तो नशा भी बढ़ाया जा रहा है। और तो और देखो दिल्ली शहर के अंदर आपके नशा नहीं होता था उसको भी अब प्रोटेक्टिड श्रेणी में आ गया है कि उसके अंदर भी चलो उसका भी हो जाये। मेरा ये कहना है कि केंद्र सरकार जिसके अंडर दिल्ली पुलिस आती है, दिल्ली का लॉ एंड ऑर्डर आता है, इस देश के जितने भी राज्य हैं अब सब राज्यों के अंदर कोई न कोई सरकार है उसके अंडर वहां का लॉ एंड ऑर्डर आता है। दिल्ली का लॉ एंड ऑर्डर केंद्र सरकार के अंडर आता है, वहां के ग्यारह मंत्री भी हैं। इस विधान सभा के अंदर मुख्यमंत्री जी भी हैं परन्तु वो एमएलए भी साथ में हैं। उनके इलाके की कोई कमी होगी दिक्कत होगी तो उन्हें सुनना पड़ता है, एमएलए हैं। वो गृह मंत्री पूरे देश के होंगे पर दिल्ली के वो पुलिस मंत्री भी वही हैं। तो दिल्ली की चीज तो देखनी चाहिये उनको। कहते हैं नहीं मैं बड़े कामों में व्यस्त हूं, बड़े बड़े काम कर रहा हूं। अरे भई

बड़े बड़े काम कर रहे हो छोटे काम छोड़ दो, अपने जिम्मे ले के क्यूं बैठे हो। जब तुम्हारे जिम्मे दिल्ली पुलिस है तो दिल्ली पुलिस की नाकामी पे तुम्हें इनको देखना चाहिये, दिल्ली की सुरक्षा की चिंता करनी चाहिये, दिल्ली के लोगों को सुरक्षित महसूस कराना चाहिये। आज दिल्ली की जनता डरी हुई है और डरने के साथ साथ क्रिमिनल से तो डरी हुई है, इन बीजेपी वालो से भी डरी हुई है बोलते हुए डरती है। अगर बोल दिया कहते हैं तुम्हारे खिलाफ ही केस न बना दें। अभी बंदना जी बता रही थीं कि सरे आम कई लड़कों ने मिल के एक लड़के को चाकुओं से मारा और वहां पर धमकी दी गयी कि अगर किसी ने इस टाइम इसको मीडिया में बताया उसके खिलाफ केस बना दिया जायेगा, कमाल हो रहा है! इस से कानून व्यवस्था बनेगी? और मैं ये कहता हूं जी देखो जो भी काम आपका है वो तो आपको करना ही पड़ेगा न, सिर्फ नारेबाजी से, लफ्फेबाजी से ये नहीं हो जाएगा दिल्ली की सुरक्षा व्यवस्था अच्छी हो गयी, आपको वाकई में अच्छी करनी पड़ेगी, आपको जनता से पूछना पड़ेगा भई सेफ हो या नहीं हो। घर से बाहर निकलना आजकल मुश्किल हो गया है। रात को नौ बजे बेटी घर में आये न तो कहते हैं लेट हो गया बेटा नौ बज गये हैं। देश की राजधानी है भई रात के नौ बजे सबको लेट लगता है। बॉम्बे में तो नहीं लगता था। देश के अंदर बहुत सारे ऐसे शहर हैं जहां पे तो लगता नहीं नौ बजे लेट होता है दिल्ली में क्यूं लगने लगा, पहले तो नहीं लगता था 20 साल पहले, दस साल पहले, 15 साल पहले तो नहीं लगता था। 2014 के बाद ही क्यूं लगने लगा। इनको बीजेपी को कानून व्यवस्था के उपर

ध्यान देने की आवश्यकता है, केंद्र सरकार के जो गृह मंत्री हैं मैं उनसे कहूंगा कि दिल्ली की पुलिस अगर आपके अंडर है तो उस पुलिस के प्रति उनकी जवाबदेही बनती है जनता से सुनवाई करनी चाहिये, उनको उसको सॉल्व करना चाहिये। एक छोटी सी बात और। मैं बड़े लंबे समय तक जेल में रहा। आज मैं असेम्बली में आया मेरे साथ कोई पुलिस वाला नहीं, मैं एमएलए दस ग्यारह साल हो गये हैं, मंत्री भी 8-10 साल रहे, एक भी सिक्योरिटी गार्ड की जरूरत नहीं पड़ी, पुलिस वाला एक सिपाही साथ नहीं था। और वहां पे मेरे साथ 6-6 स्टेन गन लेके घूमते थे। बंदना जी कह रहे पुलिस वाले डरते हैं उन गुंडों से कि हमारे पास वो नहीं है मषीन गन नहीं है, स्टेन गन नहीं है, मेरे साथ 6-6 चलते थे। अरे भाई साहब उनको पब्लिक में भेज दो। मेरे साथ तो बिना स्टेन गन के भी चला जाता, आज क्यूं नहीं मेरे साथ घूम रहे, आज क्यों मेरे को दिक्कत नहीं है? जो उन चीजों पे लगा रखे थे आपने, तिहाड़ जेल के अंदर साढे तीन हजार आदमी लगा रखे हैं जो ये गन लेके घूमते हैं। किसलिये लगा रखे हैं भई? उनको जनता की सुरक्षा में लगा लो और जो इनके अफसर हैं खुद के अफसर हैं, उन्हीं की सुरक्षा में कई हजार पुलिस वाले लगे हुए हैं। और ये बीजेपी के जो एमएलए भी हैं ये भी सुरक्षा में घूमते हैं आजकल तो मैं देख के दंग रह गया। भाई साहब किसलिये, काहे के लिये, धौंस दिखाने के लिये। जनता को सुरक्षा देने की जिम्मेवारी दिल्ली सरकार की नहीं, केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है। मैं रिक्वेस्ट करूंगा कि केंद्र सरकार को दिल्ली का लॉ एंड ऑर्डर संभालना चाहिये, दिल्ली की जनता के प्रति सुरक्षा

की भावना देनी चाहिये। धन्यवाद, अध्यक्ष जी आपका बहुत बहुत धन्यवाद। थैंक्यू।

माननीय अध्यक्ष: श्रीमान मनीष सिसोदिया जी।

श्री मनीष सिसोदिया: बहुत बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। आज ये सदन दिल्ली में बिगड़ती कानून व्यवस्था और गृह मंत्री अमित शाह जी के टोटल फेल्यर के बारे में चर्चा कर रहा है। ये सिर्फ शब्द नहीं है कि दिल्ली में कानून व्यवस्था बिगड़ी हुई है, ये दिल्ली के लाखों-करोड़ों लोगों की जिंदगी से जुड़ा हुआ मसला है। ये सिर्फ मुद्दा नहीं है कि यहां विधान सभा में चर्चा हो रही है, इस सदन के बाहर जो दिल्ली बैठी है, चौबीस घंटे वो कैसे जी रही है, उसका बच्चा स्कूल जा रहा है तो वो कैसे जी रही है, उसकी घर की महिला कोई बाहर जा रही है, कोई बुजुर्ग जा रहा है तो वो कैसे जी रही है, एक व्यापारी शाम को दुकान बंद करके जा रहा है तो वो किस उम्मीद के साथ जा रहा है कि सुबह जब दुकान पर लौटूंगा, दुकान खोलूंगा वापस तो धमकी भरी चिट्ठी, धमकी भरा फोन या गोलीबारी कल मेरी दुकान पर नहीं होगी, इस सब डर के साये में जी रही दिल्ली की आवाज हम उठा रहे हैं यहां पर। ये कोई ऐसा मुद्दा नहीं है कि बीजेपी के बारे में कुछ कह रहे हैं। बीजेपी के बारे में हम नहीं कह रहे, हम तो दिल्ली के लोगों के बारे में कह रहे हैं कि आज अमित शाह जी की वजह से दिल्ली का एक आम नागरिक चौबीस घंटे डर के साये में जी रहा है। हम तो आम आदमी पार्टी के विधायक लोग हैं, कह सकते हैं जी

पॉलिटिकल है। होगा जी पॉलिटिकल, ये एनसीआरबी, नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो वो तो भारत सरकार की संस्था है, एनसीआरबी का डेटा कह रहा है कि दिल्ली में हर 20 हजार परिवार पर 1832 परिवार अपराध के शिकार हो रहे हैं, हर 20 हजार परिवारों में से 1832 परिवार अपराध के शिकार हो रहे हैं मतलब लगभग-लगभग 10 परसेंट दिल्ली के परिवार अपराध के शिकार हो रहे हैं और ये लोग यहां ढोल बजा रहे हैं जी-20 में कुछ नहीं हुआ, जी-20 में कुछ नहीं हुआ। अरे लोग रो रहे हैं, लोग डर रहे हैं और आप ढोल बजा रहे हो जी-20 में हमने कुछ नहीं होने दिया, अरे अगर तुम इतने ही अच्छे हो तो हर दिन को जी-20 का दिन बना दो न, दिल्ली के लोग भी तो जी-20 से ज्यादा इम्पोर्टेंट है। और ये जो हर 20 हजार परिवारों पर लगभग-लगभग 2 हजार अपराध हो रहे हैं ये तो मर्डर, रेप, धमकियां, गोलीबारी इसकी बात कर रहा हूं मैं, इसमें अभी साइबर क्राइम का तो जिक्र नहीं आया एनसीआरबी के डेटा में। अगर आप दिल्ली में सामान्य लोगों से भी बात कर लो किसी गली में, लोग बतायेंगे भई मेरे फोन पर फोन आया, मैसेज आया, मेरा फोन हैक कर लिया, मेरे फोन में 500 नंबर थे, मेरे फोन में हजार नंबर थे, सबको मैसेज भेज दिया, मैं बड़ी मुसीबत में हूं, 20 हजार रुपये ट्रांसफर कर दो, 50 हजार रुपये ट्रांसफर कर दो। सरकारी अधिकारियों से लेकर प्राइवेट कंपनी में, गली में रह रहे आदमी से लेकर सबके पास फोन आ रहे हैं और सबके नाम से जा रहे हैं। साइबर क्राइम का ऐसा धंधा बन गई ये दिल्ली और जब एक हजार लोगों के पास मैसेज जाता है, किसी को लगता है कि कोई

मुसीबत में होगा मेरा, 10-15-20 हजार रुपये ट्रांसफर कर देता है,.. भावना जी के साथ हो गया। मेरी एक साथी है मेरे साथ काम करती है, कल वो मुझे बता रही थी, हालत इसलिए नहीं है कि उसके फोन में 10-15 हजार फोन हैं, पुराने समय से चले आ रहे हैं, सबके पास मैसेज भेज दिया 50 हजार रुपये ट्रांसफर करा दो। अब 10 हजार में से कुछ लोगों ने करा भी दिए कि हो सकता है भई मुसीबत में हो। वो बेचारी गई साइबर सेल, वहां उसको, कल ही गई थी, वहां बोला गया अब ऐसा है मंडे आना। अब मंडे भी कोई मिलेगा कि नहीं मिलेगा उसको पता नहीं। तो ये तो हालत कर रखी है इन्होंने दिल्लीवालों की और ये ढोल बजा रहे हैं जी जी-20 में हमने कुछ नहीं होने दिया था, जी-20 में कुछ नहीं होने दिया था। तो ये जी-20 वाला ढोल रोज दिल्ली की जनता के लिए क्यों नहीं बजाते हो? ये विदेशी मेहमान आए थे वो ही तुम्हारे चाचा जी लगते है, दिल्ली की जनता कुछ नहीं लगती है, उसके लिए भी तो कुछ करो। ये अच्छी बात है कि विदेशी मेहमान आए और आपने अपराध नहीं होने दिए, इसका मतलब दिल्ली की जनता के ऊपर अपराध आप करवा रहे हो, आप स्वीकार कर रहे हो इस बात को। क्यों हो रहे हैं दिल्ली की जनता के ऊपर अपराध, अगर आप जी-20 के समय रोक सकते हो तो आज क्यों नहीं रूक रहा, कल क्यों नहीं रूक रहा और कल क्यों नहीं रूकेगा, इसका मतलब आप शामिल हो अपराधों में, इसका मतलब गुंडे पाल रखे हैं आपने, इसका मतलब आप रेप करा रहे हो। तो इसका मतलब ये तो स्वीकशति है कि देखो हमने जी-20 में नहीं होने दिया था और अब हम रोज

करा रहे हैं इसका मतलब ये भी है। क्यूं करा रहे हो भई, दिल्ली के लोगों से इतनी नफरत, दिल्ली के लोगों से इतनी हेट है आपको कि उनको अपराध की राजधानी में रखोगे आप। आप खुद सोचो तो सही आप क्या बोल रहे हो।

अध्यक्ष महोदय, महिलाओं के खिलाफ, एनसीआरबी का डेटा है ये, मेरा नहीं है, कोई पॉलिटिकल पार्टी का डेटा नहीं है, इन्हीं की भारत सरकार का डेटा है, महिलाओं के खिलाफ अपराध के 14158 मामले दर्ज किए गए जो देश के 19 महानगरों में सबसे ज्यादा हैं, इनमें से 1204 बलात्कार के मामले शामिल हैं। यानी की प्रतिदिन कम से कम 3 बलात्कार हो रहे हैं दिल्ली में और ये तो रिपोर्ट हो रहे हैं। और जो मैंने 20 हजार परिवारों पर 1832 का डेटा बताया, आप ये भी देख लीजिए कि एनसीआरबी कह रही है कि हर 20 हजार परिवारों में से 1832 परिवार किसी न किसी अपराध का शिकार हो रहे हैं। ये ही एनसीआरबी बता रही है कि पूरे देश में ये एवरेज 422 का है। पूरे देश में हर 20 हजार परिवारों पर 422 अपराध हो रहे हैं लेकिन दिल्ली में हर 20 हजार परिवारों पर 1832 परिवार अपराध का शिकार हो रहे हैं, क्या कर रहे हो भाई? दिल्ली की जनता ने एक ही तो जिम्मेदारी दी है कि पुलिस को ठीक से संभालो, पुलिस को लेकर चलो साथ में। केजरीवाल जी को दिल्ली की जनता ने जिम्मेदारी दी स्कूल ठीक कर दो, करके दिखा दिए, अस्पताल ठीक कर दो, करके दिखा दिए, बिजली 24 घंटे कर दो, करके दिखा दी, बिजली के बिल जीरो कर दो, महंगी नहीं होनी चाहिए बिजली, बिजली फ्री में देकर दिखा दी, पब्लिक

ट्रांसपोर्ट महंगा नहीं होना चाहिए, पब्लिक ट्रांसपोर्ट फ्री करके दिखा दिया महिलाओं के लिए। आपको एक जिम्मेदारी दी दिल्ली की जनता ने दिल्ली पुलिस से हमें सुरक्षित करके दिखा दो। आप तो कह रहे हो हम तो नहीं करके दिखायेंगे, हम तो केवल जी-20 में करायेंगे। अब क्या दिल्ली अगले 20 साल बाद जी-20 का इंतजार करे सुरक्षित होने के लिए? दिल्ली अब अगले 20 साल का इंतजार नहीं करेगी, दिल्ली आपको ठिकाने लगायेगी, दिल्ली आपको हवा में उड़ायेगी।

अध्यक्ष महोदय, बच्चों के खिलाफ अपराध के मामले भी चिंताजनक है। 2022 में दिल्ली के बच्चों के खिलाफ 7400 मामले दर्ज किए गए 7400 और चारों तरफ, हर तरफ, विजेन्द्र गुप्ता जी बैठे हैं, मुझे पूरी उम्मीद है कि जब आप इनको बोलने का मौका देंगे तो वो सिर्फ भारतीय जनता पार्टी के एक नेता की तरह नहीं, रोहिणी विधान सभा के एमएलए के रूप में भी बतायेंगे कि उनकी विधान सभा में दो बम की घटनाएं हुई हैं, क्या किया है इन्होंने? जाकर गृह मंत्री-अमित शाह जी के सामने धरना देना चाहिए था इनको कि आपकी सारी की सारी एजेंसिज फेल हो गई, मेरी विधान सभा में लोग डरे हुए हैं। इनकी विधान सभा में लोग डरे हुए हैं इस बात को लेकर, रोहिणी के लोग डरे हुए हैं। मैं दिल्ली का शिक्षा मंत्री रहा हूं, मुझको पता है, स्कूलों में बम फट रहे हैं, स्कूलों के किनारे बम फट रहे हैं, रोज स्कूलों में धमकियां आ रही हैं बम की। सर सोचकर देखिए, हमारे भी बच्चे हैं, क्या बीतती होगी उन मां-बाप पर जब उनको पता चलता है कि फलांने स्कूल में बम की धमकी आ गई, हार्ट-अटैक नहीं हो गया ये

ही बहुत बड़ी बात है घर में बैठी मां को या डयूटी पर गए हुए पिता को। ये कह रहे हैं पॉलिटिसाइज मत करो, पॉलिटिकल मत बोला, क्यों नहीं बोले, दिल्ली के एक-एक मां-बाप का दुख है कि वो उनका बच्चा जिन स्कूलों में पढ़ने जा रहा है वहां पर खबरें आ रही है बम की, बम की धमकियां मिल रही है।

आज फ्लाइट में बम की धमकी आ जाती है, सारे एयरपोर्ट पर हालत खराब हो जाती है, जिन-जिन के लोग फ्लाइट में चल रहे हैं, फ्लाइट में गए हैं किसी फ्लाइट को उनसे पूछकर देखो क्या हालत बीतती है उन पर, आपके लिए तो खबर होगी वो। लेकिन उनके लिए सोचो न जिनके लोग किसी फ्लाइट को पकड़ने एयरपोर्ट पर गए हुए हैं, क्या बीतती होगी उन पर।

आप कह रहे हो अपराध तो कोई विषय ही नहीं है, क्यों विषय नहीं है, उस मां से पूछो जिसका बच्चा स्कूल गया है। उस भाई-बहन से पूछो जिसका, उस पत्नी से पूछो जिसका पति अभी फ्लाइट पकड़ने के लिए गया है। आप बम ब्लास्ट करा रहे हैं दिल्ली में और कह रहे हैं हमें पता ही नहीं है। महीने के अंदर-अंदर दो बम ब्लास्ट हो गए। क्या कर रही है आपकी एजेंसी? इससे बड़ा फेलियर तो अब तक नहीं देखा मैंने, मैं पत्रकार भी रहा हूं, राजनीति में भी रहा हूं, सामाजिक जीवन में रहा हूं, दिल्ली में इससे बुरी हालत कभी नहीं देखी।

हम लोग सुनते थे कि शूट आउट एट लोखंडवाला, बड़ा फिल्मी नाम लगता था दूर से देखने में। आज तो जिस दिल्ली में देख रहे हैं

हम, जिस दिल्ली में हम बैठे हैं उसमें रोज खबर आ रही है शूट आउट एट कबीरनगर, शूट आउट एट रोहिणी, शूट आउट एट पश्चिम विहार, शूट आउट एट नारायणा, शूट आउट एट मीरा बाग, शूट आउट एट ज्योति नगर, शूट आउट एट सोनिया विहार, शूट आउट एट होटल, शूट आउट एट रेस्टारेंट, शूट आउट एट कार शोरूम, हर जगह शूट आउट ही हो रहे हैं। नवंबर के पहले हफ्ते में, अखबार पढ़ रहा था मैं एक दिन, डर लगा मुझे भी दिल्ली में देखकर, 9 नवंबर की अखबार की रिपोर्ट थी कि पिछले 10 दिन में शूट आउट की 7 घटनाएं हुई हैं इसी महीने में जिस महीने में हम बात कर रहे हैं। दिल्ली में शूट आउट की 7 घटनाएं हुई हैं ये अमित शाह जी ने दिल्ली को शूट आउट राजधानी बना दिया है। शूट आउट एट लोखंडवाला की जगह, इतने सारे मैंने ये नाम पढ़े, हर जगह से हम कहीं न कहीं सुन रहे हैं कि shoot out at this, shoot out at this, shoot out at this. दिल्ली के हर कॉलोनी, हर मोहल्ले से खबरें आ रही हैं। झुग्गियों से लेकर बड़ी-बड़ी कॉलोनियों तक, सामान्य रेस्टोरेंट चलाने वाले से, कार के शोरूम चलाने वाले तक कोई सुरक्षित नहीं महसूस कर रहा, सबको डर लग रहा है कि पता नहीं आने वाला फोन वसूली का न हो, पता नहीं सामने जो मोटरसाइकिल रूक रही है गोली न चला जाए इस पर से कोई उतरकर। इस दहशत में आज दिल्ली के आम व्यापारी को जीना पड़ रहा है, दिल्ली के आम आदमी को जीना पड़ रहा है। कौन सी लॉ एंड आर्डर की बात कर रहे हो, कौन सी लॉ एंड ऑर्डर को ठीक किया है आपने। दस साल हो गए आपको, तीसरा टर्न मिला है आपको,

कुछ तो शर्म करो, कुछ तो लाज रखो कि आप देश की राजधानी को चला रहे हो।

तो अध्यक्ष महोदय, मैं बस ये ही कहना चाहूंगा इस मौके पर कि ये अपराध का मुद्दा, दिल्ली में बढ़ते हुए अपराध का मुद्दा केवल एक राजनैतिक बहस का मुद्दा नहीं है, दिल्ली के आम आदमी की जिंदगी से जुड़ा हुआ मुद्दा है। हर उस मां का मुद्दा है जिसके बच्चे स्कूल पढ़ने जा रहे हैं, हर उस परिवार का मुद्दा है जिसका कोई व्यक्ति कहीं मार्केट में गया हुआ है, दुकान चला रहा है, किसी तरह का व्यापार कर रहा है और ये तो वो घटनाएं हैं जिनका हम बड़े स्तर पर जिक्र कर रहे हैं। कौन सी गली में दिल्ली के चेन स्नैचिंग और मोबाइल स्नैचिंग जैसी घटनाएं नहीं हो रही। उस दिन मैं और मोनू गाड़ी में बैठे हुए थे किसी शादी में जा रहे थे कान काट लिया कि इनके पास में फोन आया जी थाने में फोन करो जल्दी से, मेरी विधान सभा में चेन.. ये कान के कुंडल खींचने के लिए कान काट लिया है, क्यूं, क्योंकि आप ड्रग्स मंगवा रहे हो दिल्ली में बड़े पैमाने पर, आपने ड्रग्स का कारोबार पैरेलल चला रखा है, सारा देश जान रहा है। मैं रिकॉर्ड के आधार पर कह सकता हूं कि सारा ड्रग्स पता नहीं कहां-कहां से आकर, गुजरात आ रहा है और गुजरात से दिल्ली लाया जा रहा है, हजारों-हजार करोड़ रुपये का ड्रग्स इस तरह से लाया जा रहा है। वो ड्रग्स लेकर ही तो उसके बाद में वो चेन स्नैचिंग करने चलते हैं, कान के कुंडल और मोबाइल खींचने चलते हैं, उसके बाद में ये भी नहीं देखते की कान काट दिया।.. मैंने इनको कहा ऐसे ही, मैंने कहा यार

कान काटना थोड़ी ज्यादा बोल रहे होंगे मतलब खींचा होगा। मैं गाड़ी में बैठकर बात कर रहा था मोनू भाई से कि हो सकता है अटेम्प्ट हुआ होगा, ये तो सबको पता है कि दिल्ली अपराधों की राजधानी है पर फोन करने वाला हो सकता थोड़ा सा exaggerate करके बता रहा हो जी कान काट लिया, फोटो आ गया इनके पास में, थोड़ी देर में विडियो था, इतना दर्दनाक विडियो था वो। तो चारों तरफ, हर तरफ किसी न किसी क्राइम की कहानी है और ये जो मैंने आंकड़ें दिए ये तो बड़े अपराधों के हैं। कितने अपराध रिपोर्ट नहीं हो रहे। साइबर क्राइम के अपराध, साइबर सेल में आपकी कोई, पढ़ी-लिखी लड़की कल गई है, मैं बता रहा हूं आपको, कल गई है पढ़ी-लिखी लड़की मेरे साथ काम करती थी वो आकर दुखी हो रही थी कि सर फोन नंबर पर फोन भेज दिए मेरे सारे डेटा को उठाकर हैक करके, पैसे ले लिए, अब मैं जाकर साइबर क्राइम में जाकर धक्के खा रही हूं कोई सुनने को तैयार नहीं है। तो ये तो हालत है लॉ एंड आर्डर की और आप कहां बिजी है, केजरीवाल को नहीं चुनाव जीतने देना है, केजरीवाल पर झूठे आरोप लगाते रहना है, सत्येन्द्र जैन बाहर न आ जाएं, अमानतुल्ला खान बाहर न आ जाएं, मनीष सिसोदिया बाहर न आ जाएं, अखिलेश पर जो मामला चला था वो कैसे फ्री न हो जाए, सोम दत्त से लेकर जरनैल से लेकर यहां जितने बैठे हैं सबके ऊपर जो मामले चले हुए हैं वो बाहर न आ जाए किसी तरह से, आपकी सारी अटेंशन उसी में बिजी है, आपकी सारी फोर्स उसी में बिजी है। जो कुछ आपको आता है आप केवल उस पर खर्च कर रहे हो। जो कुछ आता है उसको थोड़ा

सा तो खर्च करो दिल्ली के लोगों के ऊपर, हो सकता है दिल्ली के लोगों का कुछ भला हो जाए। मैं उम्मीद करूंगा अध्यक्ष महोदय कि यहां से ये आवाज, ये खाली विधान सभा की आवाज नहीं बल्कि दिल्ली के लोगों की आवाज बनकर जाएगी और इस देश के गृह मंत्री इस बात को संज्ञान में लेंगे कि उनकी कोई जिम्मेदारी है। अगर वो नहीं हैंडल कर पाते तो अपने पद से इस्तीफा दे दें और अगर हैंडल कर पा सकते हैं तो हैंडल करके दिखाए दिल्ली के लोग अपेक्षा रख रहे हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः श्री विजेन्द्र गुप्ता जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता (माननीय नेता-प्रतिपक्ष): xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः कोई नहीं, बोल लेने दीजिए।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी, आज की समस्या पर चर्चा करो।

...व्यवधान...

---

[13] XXX चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अब आप राजनैतिक पहलू, आप राजनीति ढूंढ रहे हैं इसमें।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः दिल्ली की जनता की सुरक्षा में राजनीति.

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः राजनीति आप खुद कर रहे हैं।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

[13] XXX चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

माननीय अध्यक्षः राजनीति आप कर रहे हैं।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी, आप खुद इसका राजनीतिकरण कर रहे हैं इस मुद्दे का।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः पूरा राजनीतिकरण कर रहे हैं आप। मनीष जी ने इतना अच्छा बोला है।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

---

[13] XXX चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः क्या बोलने दें आपको?

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः क्यों बोलने दें।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं, क्यों बोलने दें।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः क्या बोलने दे.

...व्यवधान...

---

[13] XXX चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: खोल लिया आपने।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: बैठिए अब।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: बस बैठ जाइये अब।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: एक भी बात..

[13] XXX चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

श्रीमती राखी बिरला: अध्यक्ष जी विषय लॉ एण्ड ऑर्डर है।

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: विषय क्या, क्या बोलने दें? क्या बोलने दे आपको? क्या विषय है आपके पास?

...व्यवधान...

श्रीमती राखी बिरला: दिल्ली की कानून व्यवस्था लॉ एण्ड ऑर्डर है। फालतु के बयानबाजी और लॉ एण्ड ऑर्डर्स को एकसार कर रहे हैं,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: लॉ एंड ऑर्डर पर चर्चा हो रही

...व्यवधान...

श्रीमती राखी बिरला: फालतु की बयानबाजी से ध्यान भटकाया जा रहा है। अमित शाह की लापरवाही को ढका जा रहा है। टिकट लेने

[13] XXX चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

की लालच के लिए। अपनी टिकट को बचाने के लिए। अमित शाह गृह मंत्री के तड़ीपार के फेल्यर को छुपाया जा रहा है। विषय दिल्ली का लॉ एण्ड ऑर्डर है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं अब अलाऊ नहीं कर रहा।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं आपको अब अलाऊ नहीं कर रहा हूँ।

...व्यवधान...

श्रीमती राखी बिरलाः अध्यक्ष जी, विषय दिल्ली का लॉ एण्ड ऑर्डर है।

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

[13] XXX चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

श्रीमती राखी बिरला: ये विषय दिल्ली का दिल्ली पुलिस के फेल्यर का है...

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

श्रीमती राखी बिरला: ये विषय दिल्ली का दिल्ली पुलिस के फेल्यर का है...

...व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ता: xxxxxxxx[13]

...व्यवधान...

श्रीमती राखी बिरला: अध्यक्ष जी, ये विषय दिल्ली की जनता की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है इस पर कोई भी राजनीति ना करे। विजेन्द्र गुप्ता हाय-हाय।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष: मैं अलाऊ नहीं कर रहा हूँ। मैं डिस्अलाऊ कर रहा हूँ। मैं अलाऊ नहीं कर रहा।

...व्यवधान...

[13] XXX चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गए।

माननीय अध्यक्षः मैं आपको अलाऊ नहीं कर रहा हूँ।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आप चिल्लाइये मत। मार्शल्स बाहर करिये। मार्शल बाहर करिये। आपको कोई गरिमा नहीं। आप सदन की गरिमा को। मार्शल्स बाहर करिये। आपको कोई गरिमा नहीं। आप सदन की गरिमा को, मार्शल्स विजेन्द्र गुप्ता जी को बाहर करिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं मैं अलाऊ नहीं कर रहा हूँ। मैं अलाऊ नहीं कर रहा हूँ।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मार्शल्स बाहर करिये विजेन्द्र गुप्ता को।

(माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेश पर मार्शल द्वारा श्री विजेन्द्र गुप्ता–माननीय नेता, प्रतिपक्ष को सदन से बाहर ले जाया गया। विपक्ष के बाकी सदस्यों द्वारा विरोधास्वरूप सदन से वॉक आउट किया गया।)

...व्यवधान...

श्रीमती राखी बिरलाः ये विषय दिल्ली की सुरक्षा व्यवस्था का है इस पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। ये दिल्ली के लोगों के हक और अधिकार की लड़ाई है। अमित शाह और भारतीय जनता पार्टी दिल्ली के

लोगों को सुरक्षा देने में पूरी तरीके से फेल हो गई है और विजेन्द्र गुप्ता अपनी टिकट बचाने के लिए उनकी चापलूसी कर रहा है। विजेन्द्र गुप्ता शर्म करो। शर्म करो। दिल्ली के लोगों की सुरक्षा के ऊपर राजनीति करना बंद करो। शर्म करो। शर्म करो। अरे अमित शाह के फेलियर को तुम ढक रहे हो। छुपा रहे हो। अपनी टिकटों को बचाने के लिए चाषनी लगा रहे हो। शर्म करो। दिल्ली के लोगों की सुरक्षा के साथ राजनीति करना बंद करो। निकलो यहां से, चलो हो मीडिया बाइट अब, घर चलते बनो।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र गुप्ता जी ने जो कुछ बोला है वो सदन की कार्यवाही से निकाल दिया जाए। माननीय अरविंद केजरीवालजी।

श्री अरविंद केजरीवालः आदरणीय अध्यक्ष महोदय आज बहुत जरूरी मुद्दे पे हम सब लोग चर्चा कर रहे हैं दिल्ली की कानून व्यवस्था के ऊपर और ये चर्चा करनी पड़ रही है और सभी विधायकगण इसके बारे में बहुत चिंतित हैं। आज से 10 साल पहले दिल्ली के लोगों ने हमें जिम्मेदारी दी थी कि केजरीवाल जी आप स्कूल बनाओ, केजरीवाल जी आप अस्पताल बनाओ, केजरीवाल जी आप बिजली ठीक करो, केजरीवाल जी आप पानी ठीक करो, सड़के ठीक करो। हमने अपनी जिम्मेदारी पूरी करी। हमने स्कूल अच्छे कर दिये। हमने अस्पताल अच्छे कर दिये, दवाइयां ठीक कर दीं, हमने बिजली ठीक कर दी, हमने कई इलाकों में पानी ठीक किया, कइयों में बाकी है वो भी कर

रहे हैं। लेकिन एक सुधार की और बढ़ रहा है सब कुछ। हमने कई सड़कें ठीक कीं, कई बाकी हैं वो भी कर रहे हैं। दिल्ली की जनता ने इनको एक ही जिम्मेदारी दी थी। दिल्ली आधा राज्य है तो आधी जिम्मेदारी दिल्ली सरकार के पास है, आधी जिम्मेदारी केंद्र सरकार के पास हैं। तो दिल्ली की जनता ने बीजेपी की केंद्र सरकार को जिम्मेदारी दी थी कि भई दिल्लीवालों को सुरक्षा प्रदान करने का काम आप करो। दिल्ली में कानून व्यवस्था लागू करने का काम आप करो और केंद्र सरकार में जो केंद्रीय गृह मंत्री हैं अमित शाह जी, ये जिम्मेदारी उनके कंधों पे आती है कि दिल्ली के अंदर हर व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान की जाए और दिल्ली को सुरक्षित रखा जाए ये सीधे-सीधे अमित शाह जी जिम्मेदारी है। पिछले 10 साल से धीरे-धीरे करते-करते और अब पिछले कुछ सालों में तेजी से दिल्ली की कानून व्यवस्था बद-से-बदत्तर होती जा रही है और खासतौर से 2019 में जब से अमित शाह जी गृह मंत्री बने हैं तब से दिल्ली की व्यवस्था और ज्यादा खराब होती जा रही है। इनसे दिल्ली संभल नहीं रही है। दिल्ली का बहुत बुरा हाल हो गया है। दिल्ली की कानून व्यवस्था का बहुत बुरा हाल हो गया है। आए दिन मर्डर हो रहे हैं। अभी-अभी मैं देख रहा था वकीलों का कोई बयान आया हुआ था अंदर घुसने से पहले एक सोशल मीडिया पे चल रहा था। वकील कह रहे थे कि सड़क के ऊपर हाथ में मोबाइल फोन ले जाना मुश्किल है। आप मोबाइल फोन लेके सड़क पे निकल जाओ दस कदम जाओगे कोई ना कोई आपका मोबाइल फोन छीनके भाग जायेगा। ये हालत हो गई है दिल्ली के अंदर। एक्सटोर्षन की, फिरौती की कॉल्स

आ रही हैं लोगों को, ओपन गैंगवॉर, खुलेआम शूटआउट चल रहे हैं, जो फिल्मों में देखा करते थे वो आज दिल्ली का हाल हो गया है। खुलेआम शूटआउट चल रहे हैं, फिरौती की कॉल आ रही है, किडनैपिंग्स हो रही हैं दिल्ली के अंदर। महिलाओं का किडनैप करके बलात्कार कर देते हैं, मर्डर कर देते हैं। मैं ये एक अखबार लेके आया हूँ ये बहुत नामा–गिरामी अंग्रेजी का अखबार है देश का। ये पूरा इसके अंदर दिल्ली की कानून व्यवस्था को लेके छपा हुआ है। 'Gangs enter the neighbourhood' आपके पड़ोस में गैंगवॉर शूरू हो गए हैं। इसमें अगर आप 3–4 ही, रोंग्टे खड़े हो जायेंगे ये पढ़के। 13 सितम्बर को ग्रेटर कैलाश, ग्रेटर कैलाश दिल्ली की सबसे मैं कहूंगा संभ्रांत, अमीर कॉलोनी है। ग्रेटर कैलाश में 13 सितम्बर को 10.30 बजे रात को एक जिम ओनर नादिर शाह जोकि बहुत बड़ा बिजनेस मैन था उसको कथित तौर पे लॉरेंस बिश्नोई के एसोसिएट्स ने गोली मारके उसकी सरेआम सड़क के ऊपर हत्या कर दी। 20 सितम्बर को ग्रेटर कैलाश में एक म्यूजिक कम्पोजर था अमन बत्रा, उसको एक लॉरेंस बिश्नोई के ही कथित तौर पे एक एसोसिएट की कॉल आई 5 करोड़ रूपए फिरौती डिमांड करते हुए। सितम्बर के महीने में ही सैनिक फॉर्म्स में 'Godaracalls a builder in Sainik Farms' गोदारा गैंग का कोई आदमी सैनिक फॉर्म्स में एक बिल्डर को कॉल करता है और 5 करोड़ रूपए की फिरौती मांगता है और कहता है नहीं तो उसके consequences बहुत खतरनाक होंगे। 30 सितम्बर को बसंत विहार में एक real estate developer gets a whatsapp call from a man claiming to be US based gangster

and Lawrence Bisnoi associate Goldi Brar और 2 करोड़ रूपए की फिरौती मांगी जाती है उस रियल एस्टेट डेवलपर से । 26 सितम्बर को नारायणा में 20 राउंड ऑफ बुलेट्स चलते हैं एक लग्जरी कार शोरूम में और शूटर्स पीछे अपने एक नोट छोड़ जाते हैं जिसमें लिखा होता है 'भाऊ गैंग'। 18 जून को बर्गर किंग राजौरी गार्डन 9.30 बजे रात को 39 rounds of गोलियां चलाई जाती हैं अमन जून के ऊपर उसको मार दिया जाता है लॉरेंस बिष्नोई के rival हिमांशु भाऊ की तरफ से। सराय कालेखां में 'over a dozen shots ring out as a team of the Delhi Police pursue two men allegedly associated with Lawrence।' ये लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने हंगामा मचा रखा है और ये साबरमती जेल में कैद है लॉरेंस बिश्नोई जोकि गुजरात के अंदर है और जोकि बीजेपी के उसके अंदर आता है ये समझ नहीं आ रहा है कि लॉरेंस बिष्नोई वहां से दिल्ली के अंदर extortion racket कैसे चला रहा है। 26 अक्टूबर बमबीना गैंग 'firing outside a businessman's house in Pitam Pura Rs. 10 crores extortion amount sought. November 7, Kapil Sangwan Nandu Gang shooter fired outside a hypermarket in Pashchim Vihar, South West Delhi firing at motor shop in Najafgarh. November 5, Jitender Gogi gang firing outside plywood shop in Nangloi. Firing at property dealer's office in Alipur. अगस्त के महीने में अनमोल बिष्नोई गैंग lead by Lawrence's brother Shahdra based Jeweller alleges the gang demanded 2 crore rupees in ransom. Himanshu Bhau gang Narayana businessman claims that

on August 14 he got extortion call from a person claiming to be Bhau. Dwarka property dealer claims he received extortion call from Bhau on August 15. February के महीने में firing by two men outside a jeans trader's house in Yamuna Vihar. December 3, Lawrence Bishnoi gang two shooters fire at house of liquor baron former MLA Deep Malhotra in l' चल क्या रहा है दिल्ली के अंदर? अमित शाह कर क्या रहे हैं, कहां हैं अमित शाह? पूरी दिल्ली को उन्होंने गैंग्स को सौंप दिया जैसे कि पूरी दिल्ली अब गैंग्स चला रहे हैं। इन्होंने दिल्ली का बुरा हाल करके रख दिया। इनसे दिल्ली संभल नहीं रही है। मैं अभी एक महीने पहले नांगलोई में एक दुकान वाले हैं रोशन लाल जी उन्होंने 8 बजे सवेरे दुकान खोली और सवा नौ बजे दो मोटर साइकिल पे सवार आये और उनकी दुकान के ऊपर उन्होंने अंधाधूंध गोलियां फायरिंग करनी चालू कर दीं। मैं उनसे मिलने के लिए गया परसो। इन्होंने बीजेपी वालों ने मेरे को वहां जाने नहीं दिया। इन्होंने मेरे को रस्ते में रोक लिया। मैं अमित शाह जी से कहना चाहता हूँ केजरीवाल को मत रोको, क्राइम को रोको, अपराध को रोको। मेरे को रोकने की क्यूं जरूरत पड़ी? इसलिए जरूरत पड़ी क्योंकि ये छुपाना चाहते हैं, ये अपराध छुपाना चाहते हैं, ये क्राइम छुपाना चाहते हैं। अगर इन्होंने सही काम किया होता क्या जरूरत ही मेरे को रोकने की। आज इन्होंने पूरी दुनिया के अंदर आज दिल्ली को 'गैंगस्टर कैपिटल' के नाम से जाना जाता है पूरी दुनिया के अंदर। कौन आयेगा दिल्ली के अंदर अगर इस तरह से पूरी दिल्ली के अंदर गैंगस्टर खुलेआम घूमेंगे और ये उनके घर के कुछ अमित शाह जी के घर के चंद किलोमीटर के दायरे

में हो रहा है। 20 से 30 किलोमीटर के दायरे के अंदर हो रहा है। गोविन्दपुरी में 23 नवम्बर को पुलिस कॉन्सटेबल किरनपाल, 28 साल का किरनपाल था उसकी चाकू गोद-गोदके हत्या कर दी गई, अमित शाह जी के घर से 13 किलोमीटर की दूरी पे। 31 अक्टूबर को फर्श बाजार में गैंगवार हुआ जिसमें 2 लोग मारे गए शूटिंग में साढ़े चौदह किलोमीटर अमित शाह जी के घर से दूरी पे। 21 अक्टूबर को करोलबाग में एक महिला को किडनैप करके उसका बलात्कार कर दिया गया मात्र 9 किलोमीटर की दूरी अमित शाह जी के घर से। आज हर बिजनेसमैन और हर महिला डरे हुए हैं। बिजनेसमैन के साथ मोडस ओपेरांडी ये है कि पहले उसके पास कॉल आती है, उसको कहा जाता है इतने पैसे यहां पहुंचा दे और खबरदार ये जो मैं बता रहा हूँ ये तो वो सारे आंकड़े हैं जो पुलिस के रिकॉर्ड में हैं। इससे 3-4 गुना आंकड़े तो वो होंगे जो पुलिस को बताये ही नहीं बिजनेसमैन ने कि इसके पास कॉल आती है और उसको कहा जाता है इतने करोड़ रूपए वहां पहुंचा दे और पुलिस को मत बताइयो खबरदार जो पुलिस को बताया तो तेरे फलांने-फलांने को मार देंगे। आधे से ज्यादा लोग तो बताते ही नहीं हैं और फिर अगर वो पैसे ना पहुंचाये तो अगले दिन उसकी दुकान के ऊपर कोई फायरिंग करने पहुंच जाता है। पूरे दिल्ली के अंदर एक ऐसी साइकिल बन गई है बिजनेसमैन बिजनेस छोड़-छोड़ के दिल्ली के बाहर जा रहे हैं। बच्चे बेरोजगार हो रहे हैं और जो बच्चे बेरोजगार हो रहे हैं वो अब इन शूटरों और गैंगस्टर्स के साथ ज्वाइन करते जा रहे हैं। 17-17 साल के बच्चे 5-5 हजार 10-10 हजार रूपए के अंदर गोलीबारी

और शूटआउट और मर्डर करने के लिए तैयार बैठे हैं दिल्ली के अंदर। ये ऐसी खतरनाक साइकिल दिल्ली के अंदर बनती जा रही है जिसको सुनके ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं और ये लॉरेंस बिश्नोई कौन है अमित शाह जी को बताना पड़ेगा कि लॉरेंस बिष्नोई को क्या भारतीय जनता पार्टी ने खुलेआम संरक्षण दे रखा है। वो केवल भारत-भारत नहीं पूरी दुनिया के अंदर वहां से पूरे अपना अपना सारा काम चला रहा है साबरमती जेल से। कैसे चला रहा है वो, उसको क्या-क्या सुविधायें दी जा रही हैं साबरमती की जेल के अंदर? दिल्ली के अंदर वो कर रहा है कनाडा के अंदर कर रहा है, अमेरिका के अंदर कर रहा है पूरी दुनिया के अंदर वो अपना कारोबार चला रहा है। कैसे चला रहा है वो? क्या उसे बीजेपी का संरक्षण मिला हुआ है? अमित शाह जी को जवाब देना पड़ेगा कि अपराधी इतना बेखौफ क्यों हो गए हैं। अभी थोड़े दिन पहले उन्होंने मीटिंग ली दिखावा करने के लिए दिल्ली पुलिस के अफसरों की पिछले शुक्रवार को आये थे यहां पे दिल्ली पुलिस के हेडक्वाटर पे। आके कहते हैं जीरो टॉलरेंस करना है। कहां जीरो टॉलरेंस? अब ये भाषणबाजी से काम नहीं चलेगा। जीरो टॉलरेंस कहां जीरो टॉलरेंस है, पूरी दिल्ली के अंदर गैंगस्टर्स का राज हो गया है। एक बिजनेसमैन ने बताया कि जब अपना सालाना वो बनाते हैं अब उन्होंने प्रोटैक्सन मनी भी अपना डालना चालू कर दिया। साल का अकाउंट बनाते हैं ना ये बेचारे। अपना प्रोटैक्सन मनी भी डालना चालू कर दिया है। एक ग्रेटर कैलाश का एक व्यापारी है उसने बताया उनका पुष्तैनी धंधा था। बाप, दादा, परदादा का धंधा था। इतनी फिरौती की कॉल्स

आई, इतनी फिरौती की कॉल्स आई बंद कर दिया उन्होंने धंधा। कैसे लोग धंधा करेंगे दिल्ली के अंदर, कैसे लोग जियेंगे दिल्ली के अंदर? एनसीआरबी का डेटा है। पिछले एक साल के अंदर किडनैपिंग की घटनायें 40 परसेंट बढ़ गई हैं दिल्ली के अंदर और फिरौती और वसूली की घटनायें 55 परसेंट बढ़ गई हैं दिल्ली के अंदर। बिष्नोई गैंग, भाऊ गैंग, नंदू गैंग, बवाना गैंग, गोगी गैंग, ताजपुरिया गैंग, महल गैंग लगभग दर्जन भर गैंग दिल्ली के अंदर हैं। कोई बता रहा था इन्होंने अपने एरिया बांटे हुए हैं। पता नहीं एरिया बाटें हुए हैं क्या इन्होंने किया हुआ है। लेकिन पूरी दुनिया को पता है सारे अखबार वालों को पता है क्या चल रहा है। अमित शाह जी को नहीं पता कि दिल्ली में क्या चल रहा है। अमित शाह जी सोये हुए है, मूक बनके देख रहे हैं वो। सैकड़ों शूटर खुलेआम घूम रहे हैं, कोई डर नहीं है। शूटिंग करते हैं, वीडियो बनाते हैं। वीडियो बनाके उसपे सोशल मीडिया पे डालते हैं लोगों को डराने के लिए, खौफ पैदा करने के लिए, दहशत पैदा करने के लिए और खुलेआम चुनौती दे रहे हैं दिल्ली पुलिस को। खुलेआम चुनौती दे रहे हैं अमित शाह को, जो करना है कर लो और ये चुप बैठे हैं। कुछ नहीं कर रहे। किसके पास जाये दिल्ली की जनता, सुरक्षा किससे मांगे दिल्ली की जनता? 28 सितंबर को 24 घंटे में 3 अलग-अलग जगह गोलीबारी की घटनायें घटी हैं दिल्ली के अंदर। तीन अलग-अलग जगह गोलीबारी की घटनायें। नारायणा में कार शोरूम के अंदर गोलीबारी की घटना घटी। साउथ वेस्ट दिल्ली में एक होटल के अंदर गोलीबारी की घटना घटी। एक मिठाई की दुकान के अंदर गोलीबारी की घटना घटी। चल क्या

रहा है दिल्ली के अंदर? 11 गैंग सक्रिय हैं। व्यापारियों ने, साउथ वेस्ट दिल्ली ले लो, द्वारका ले लो, ग्रेटर कैलाश ले लो, अलीपुर ले लो, नांगलोई ले लो ऐसे लगता है जैसे इन्होंने अपने इलाके बांट रखे हैं। नवंबर के फर्स्ट वीक में सात अलग-अलग इन्सीडेंट्स हुए हैं जिसमें करोड़ों रूपए की फिरौती मांगी गई है। पुलिस रिकॉर्ड के मुताबिक अभी तक इस साल में 160 फिरौती की कॉल आ चुकी हैं जोकि लगभग हर दूसरे दिन एक कॉल आ रही है, हर दूसरे दिन एक फिरौती की कॉल आ रही है और दिल्ली पुलिस के अपने रिकॉर्ड के हिसाब से पिछले साल से डबल हो गई है ये घटनायें। तो अमित शाह जी से मैं कहना चाहता हूँ ये जीरो टॉलरेंस के खोखले भाषणों से काम नहीं चलेगा। जब दिल्ली को सुरक्षा की जरूरत थी तब अमित शाह जी राजनीति कर रहे थे। जब दिल्ली के व्यापारियों को सुरक्षा की जरूरत थी तब अमित शाह जी खोखले वादे कर रहे थे और जब हमारी दिल्ली की माँए गैंगवार में अपने बच्चों को खो रही थीं तो अमित शाह जी जाके चुनावी रैलियां अटेंड कर रहे थे। मैं उनसे पूछना चाहता हूँ अमित शाह जी आप किस चीज का इंतजार कर रहे हो, कितनी और मौत के बाद आप जागोगे? कितने और व्यापारी दिल्ली छोड़के जायेंगे जिसके बाद आपकी नींद खुलेगी? अब दिल्ली की जनता सुरक्षा के लिए किसके पास जाये या तो आप जाग जाओ या दिल्ली की जनता को फिर कुछ करना पड़ेगा आपको जगाने के लिए। बहुत-बहुत शुक्रिया।

माननीय अध्यक्षः अब सदन की कार्यवाही माननीय सदस्य ध्यान से सुन लें, अब सदन की कार्यवाही बुधवार दिनांक 4 दिसम्बर, 2024

को पूर्वाह्न 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है। सभी माननीय सदस्यों को यह भी मैं सूचित करना चाहता हूँ कि बुधवार दिनांक 4 दिसंबर, 2024 को सातवीं विधानसभा के सभी सदस्यों का ग्रुप फोटोग्राफ होगा। अतः उस दिन सभी विधायक विधान सभा में उपस्थित रहें और दोपहर 1 बजे विधान सभा के मुख्य पार्क में डाक्टर भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा के सामने ग्रुप फोटोग्राफ के लिए मौजूद रहें। मैं पुनः दोहराता हूँ कि बुधवार दिनांक 4 दिसंबर, 2024 को दोपहर 1 बजे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

(सदन की कार्यवाही बुधवार दिनांक 4 दिसंबर, 2024 को पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

© दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र शासन अधिनियम, 1991 की धारा 18 (2) के उपबंधों तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली विधान सभा प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 281 (2) के प्रावधानों के अंतर्गत प्रकाशित तथा ग्राफिक प्रिंटर्स, 2965 /41, बीडनपुरा, करोल बाग, नई दिल्ली-110 005 द्वारा मुद्रित।